इकाई -1 : भारत और समकालीन विश्व -2

अध्याय - 1 यूरोप में राष्ट्रवाद का उदय

प्रकरण (TOPIC)-1
यूरोप में राष्ट्रवाद का उदय (Rise of Nationalism in Europe)

त्वरित समीक्षा (Revision Notes)

- उन्नीसवीं सदी के दौरान राष्ट्रवाद एक ऐसी ताकत बनकर उभरा जिसने यूरोप के राजनीतिक और मानसिक जगत में भारी परिवर्तन ला दिया।
- राष्ट्रवाद से अंतत: यूरोप के बहु-राष्ट्रीय वंशीय साम्राज्यों के स्थान पर राष्ट्र-राज्य का उदय हुआ।
- उन्नीसवीं सदी में यूरोप में राष्ट्रवाद के प्रभाव से लोगों में सामाजिक व राजनीतिक रूप से स्वतंत्रता, समानता, भाईचारा आदि के विचारों में वृद्धि हुई।

फ्रांसीसी क्रांति (French Revolution) :

- 1789 की फ्रांसीसी क्रांति यूरोप के लिए एक प्रभावशाली एवं महत्त्वपूर्ण घटना थी। क्रांति के फलस्वरूप फ्रांस में प्रमुख बदलाव हुए जिनमें संवैधानिक व्यवस्था तैयार की गई तथा कुलीन वर्ग को दी जाने वाली सुविधाओं में कटौती की गई।
- क्रांति के रास्ते से एक बड़े लक्ष्य को प्राप्त किया, जिसमें राष्ट्र की पहचान व राष्ट्र का स्वाभिमान था जिसे बाद में राष्ट्रवाद के नाम से जाना गया।
- फ्रांसीसी क्रांति के बाद एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक व्यक्ति व योद्धा नेपोलियन बोनापार्टा को जाना गया। नेपोलियन ने अनेक प्रभावशाली प्रशासनिक बदलाव किए जिन्हें नागरिक संहिता 1804 के नाम से जाना गया तथा जिसे नेपोलियन संहिता के नाम से भी जाना जाता है।

यूरोप में राष्ट्रवाद का निर्माण

- अठारहवीं शताब्दी के मध्य में यूरोप अनेक छोटी-छोटी राजशाहियों, डचिओं और कैंटनों में बँट चुका था। कहीं भी राष्ट्र का विचार नहीं था। लोग नस्ल के आधार पर समूहों में बँटे हुए थे तथा मध्य व पूर्व यूरोप में रह रहे थे।
- प्रसिद्ध ऑटोमन शासक सम्पूर्ण पूर्व व मध्य यूरोप व ग्रीस पर शासन करते थे तथा हैब्सबर्ग शासक आस्ट्रिया व हंगरी पर शासन करते थे।

रूढ़िवादिता का उदय और क्रांतियाँ

- मध्यम वर्ग का कानून के समक्ष सभी की स्वतंत्रता व समानता में बराबरी में विश्वास था। उदारवाद कुलीन व पादरियों को दी जाने वाली विशेष सुविधाओं को समाप्त करना चाहता था।
- रूढ़िवादिता एक राजनीतिक दर्शन था जो परम्पराओं, स्थापित संस्थाओं, रीति-रिवाजों पर जोर देता है और तेज बदलावों की बजाय क्रमिक और धीरे-धीरे विकास को प्राथमिक देता है।
- 1815 के बाद वर्षों में दमन के भय से अनेक उदारवादी, राष्ट्रवादियों को भूमिगत कर दिया। बहुत सारे यूरोपीय राज्यों में क्रांतिकारियों को प्रशिक्षण देने और विचारों का प्रसार करने के लिए गुप्त संगठन उभर आए।
- इटली का एक क्रांतिकारी ज्युसेपी मेत्सिनी था जिसका जन्म 1807 में जेनोआ में हुआ था जो कार्बोनारी के गुप्त संगठन का सदस्य था। उसने दो और गुप्त संगठनों यंग इटली और यंग यूरोप बनाए थे।
- 1831 में चौबीस वर्ष की युवावस्था में मेत्सिनी को लिगुरिया में क्रांति करने के लिए बहिष्कृत कर दिया गया था। मेत्सिनी का एकीकरण में विश्वास था उसने छोटे-छोटे राज्यों को मिलाकर एकीकृत इटली का गठबंधन किया। उसके इस मॉडल की देखा-देखी जर्मनी, फ्रांस, स्विट्जरलैण्ड और पोलैण्ड में गुप्त संगठन कायम किए गए।

इनके बारे में जानें— (Know the Terms)

- **कल्पनादर्श (Utopian vision) :** एक ऐसे समाज की कल्पना जो इतना आदर्श है कि उसका साकार होना लगभग असंभव है।
- **निरंकुशवाद (Absolution) :** ऐसी सरकार या शासन व्यवस्था जिसकी सत्ता पर किसी प्रकार का कोई अंकुश नहीं होता। इतिहास में ऐसी राजशाही सरकारों को निरंकुश सरकार कहा जाता है जो अत्यंत केन्द्रीकृत, सैन्य बल पर आधारित और दमनकारी सरकार होती थीं।
- **जनमत संग्रह (Plebiscite) :** एक प्रत्यक्ष मतदान जिसके जरिए एक क्षेत्र के सभी से एक प्रस्ताव को स्वीकार या अस्वीकार करने के लिए पूछा जाता है।
- **फ्रांसीसी क्रांति (French Revolution) :** 1789 की फ्रांसीसी क्रांति से जो राजनीतिक और संवैधानिक बदलाव हुए उनसे प्रभुसत्ता राजतंत्र से निकल कर फ्रांसीसी नागरिकों के समूह में हस्तांतरित हो गई। क्रांति ने घोषणा कि अब लोगों द्वारा राष्ट्र का गठन होगा और वे ही उसकी नियति तय करेंगे।
- **राष्ट्रवाद (Nationalism) :** राष्ट्र तथा समाज के प्रति एक सोच मातृभूमि के लिए प्यार व त्याग राष्ट्र की राजनीतिक पहचान में विश्वास रखना राष्ट्रवाद के प्रमुख गुण हैं।
- **राष्ट्र-राज्य (Nation-State) :** राज्य वह है जो राजनीतिक तथा भौगोलिक रूप से स्थापित है तथा प्रमुख सम्पन्न इकाई के रूप में पूर्णरूप से कार्यरत है। उन्नीसवीं सदी में यूरोप में प्रकट हुए राष्ट्रवाद के विचार की संकल्पना के विचार को समझा जा सकता है।
- **आधुनिक राज्य (Modern State) :** राज्य वह है जो किसी केन्द्रीय शक्ति द्वारा संचालित किसी विशेष भू-भाग व वहाँ निवास करने वाले लोगों का प्रतिनिधित्व करता है।
- **उदारवादी राष्ट्रवाद अर्थ (Liberal Nationalism Mean) :** (i) व्यक्तिगत स्वतंत्रता (ii) कानून के समक्ष समानता (iii) सहमति की सरकार (iv) बाजार की स्वतंत्रता (v) वस्तुओं व पूँजी के आवागमन पर लगे प्रतिबंधों को समाप्त किया जाए।
- **नेपोलियन संहिता (Napoleonic Code) :** 1804 की नागारिक संहिता जिसे आमतौर पर नेपोलियन की संहिता के नाम से जाना जाता है, ने जन्म पर आधारित विशेषाधिकार समाप्त कर दिए थे। उसने कानून के समक्ष बराबरी और संपत्ति के अधिकार को सुरक्षित बनाया।
- **जॉलवेराइन (Zollverein) :** 1834 में प्रशा की पहल पर एक शुल्क संघ जॉलवेराइन स्थापित किया गया जिसमें अधिकांश जर्मन राज्य शामिल हो गए। इस संघ ने शुल्क अवरोधों को समाप्त कर दिया और मुद्राओं की संख्या दो कर दी जो उससे पहले तीस से ऊपर थी।
- **हैब्सबर्ग शासक (Habsburg Empire) :** आस्ट्रिया-हंगरी पर शासन करने वाला हैब्सबर्ग साम्राज्य कई अलग-अलग क्षेत्रों और जन समूहों को जोड़कर बना था। इसमें ऐल्प्स के टिरॉल, ऑस्ट्रिया और सुटेडेनलैंड जैसे इलाकों के साथ-साथ बोहेमिया भी शामिल था जहाँ के कुलीन वर्ग में जर्मन भाषा बोलने वाले ज्यादा थे।
- **ऑटोमन शासक (Ottoman Empire) :** बाल्कन क्षेत्र का एक बड़ा हिस्सा ऑटोमन साम्राज्य के नियंत्रण में था। बाल्कन क्षेत्र में रूमानी राष्ट्रवाद के विचारों के फैलने और ऑटोमन साम्राज्य के विघटन से स्थिति काफी विस्फोटक हो गई।
- **विचारधारा (Ideology) :** एक खास प्रकार की सामाजिक एवं राजनीतिक दृष्टि को इंगित करने वाले विचारों का समूह।
- **रूढ़िवादिता (Conservatism) :** ऐसा राजनीतिक दर्शन जो परंपरा, स्थापित संस्थानों और रिवाजों पर जोर देता है और तेज बदलावों की बजाय क्रमिक और धीरे-धीरे विकास को प्राथमिकता देता है।
- **मताधिकार (Suffrage) :** मतदान करने का अधिकार।
- **नृजातीय (Ethnic) :** एक साझा नस्ली, जनजातीय या सांस्कृतिक उद्गम अथवा पृष्ठभूमि जिसे कोई समुदाय अपनी पहचान बताता है।

व्यक्तियों (व्यक्तित्वों) को जानें— (Know the Personalities) :

- **फ्रेड्रिक सॉरयू (Frederic Sorrieu) :** सॉरयू एक फ्रांसीसी कलाकार था, जिसने 1848 में चार चित्रों की एक शृंखला बनाई। इनमें उसने सपनों का एक संसार रचा जो उसके शब्दों में "जनतांत्रिक और सामाजिक गणतंत्रों" से मिलकर बना था।
- **नेपोलियन (Napoleon 1769-1821) :** नेपोलियन एक फ्रांसिसी सैनिक व राजनेता था जिसने फ्रांसिसी क्रांति के समय प्रसिद्धि पाई उसने 1799 से 1815 तक फ्रांस पर शासन किया। नेशनल एसेंबली की पहली बैठक के बाद 1799 में सत्ता को वास्तविक रूप से स्वीकृत किया गया।
- **ज्युसेपी मेत्सिनी (Giuseppe Mazzini) :** मेत्सिनी इटली का एक क्रांतिकारी था। मेत्सिनी का जन्म 1807 में जेनोआ में हुआ था और वह कार्बोनारी के गुप्त संगठन का सदस्य था। मेत्सिनी ने दो भूमिगत संगठनों की स्थापना की जिनमें में एक मार्सेई में यंग इटली तथा दूसरा बर्न में यंग यूरोप था जिसके सदस्य पोलैंड, फ्रांस, इटली और जर्मन राज्यों में समान विचार रखने वाले युवा थे।
- **ड्यूक मैटरनिख (Duke Metternich) :** ड्यूक आस्ट्रिया का चांसलर था। वियना संधि के सम्मेलन की मेजबानी ड्यूक ने की थी।

महत्वपूर्ण तिथियाँ (Know the Dates) :

- **1797 :** नेपोलियन का इटली पर हमला: नेपोलियाई युद्धों की शुरुआत।
- **1804 :** नागरिक संहिता जिसे आमतौर पर नेपोलियन की संहिता के नाम से जाना जाता है, ने जन्म पर आधारित विशेषाधिकार समाप्त कर दिए थे। उसने कानून के समक्ष बराबरी और संपत्ति के अधिकार को सुरक्षित बनाया।
- **1814-15 :** नेपोलियन का पतन; वियना शांति संधि।
- **1821 :** यूनानी स्वतंत्रता के लिए संघर्ष प्रारंभ।
- **1832 :** यूनान ने स्वतंत्रता प्राप्त की।
- **1834 :** प्रशा की पहल पर एक शुल्क संघ जॉलवेराइन स्थापित किया गया जिसमें अधिकांश जर्मन राज्य शामिल हो गए। इस संघ ने शुल्क अवरोधों को समाप्त कर दिया।
- **1848 :** फ्रांस में क्रांति, आर्थिक परेशानियों से ग्रस्त कारीगरों, औद्योगिक मजदूरों और किसानों की बगावत: मध्यवर्ग संविधान और प्रतिनिध्यात्मक सरकार के गठन की माँग करता है: इतालवी, जर्मन, मैग्यार, पोलिश चेक आदि राष्ट्र राज्यों की माँग करते हैं।

प्रकरण (TOPIC)-2
क्रांतियों का युग : (1830-1848) इटली तथा जर्मनी का निर्माण
The age of Revolutions (1830-1848) and the unification of Germany and Italy

त्वरित समीक्षा (Revision Notes)

- जैसे-जैसे रूढ़िवादी व्यवस्थाओं ने अपनी ताकत को और मजबूत बनाने की कोशिश की यूरोप के अनेक क्षेत्रों में उदारवाद और राष्ट्रवाद को क्रांति से जोड़कर देखा जाने लगा। इटली और जर्मनी के राज्य ऑटोमन साम्राज्य के सूबे, आयरलैंड और पोलैंड ऐसे ही कुछ क्षेत्र थे।
- प्रथम विद्रोह फ्रांस में जुलाई 1830 में हुआ।
- यूरोप में क्रांतिकारी राष्ट्रवाद की प्रगति से यूनानियों का आजादी के लिए संघर्ष 1821 में आरंभ हो गया।
- राष्ट्र के विचार में संस्कृति ने एक अहम भूमिका निभाई। कवियों और कलाकारों ने यूनान को यूरोपीय सभ्यता का पालना बताकर प्रशंसा की।
- **रूमानीवाद—** रूमानीवाद एक ऐसा सांस्कृतिक आंदोलन था जो एक खास तरह की राष्ट्रीय भावना का विकास करना चाहता था।
- **भाषा—** भाषा ने भी राष्ट्रीय भावनाओं के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- 1830 का दशक यूरोप में भारी कठिनाइयाँ लेकर आया। मूल्यों में भारी वृद्धि हुई, बेरोजगारी बढ़ी, खेती में पैदावर की कमी आई। ज्यादातर देशों में नौकरी ढूँढने वालों की तादाद उपलब्ध रोजगार से अधिक थी। किसान व पढ़ा-लिखा मध्यम वर्ग इनसे ग्रसित था।
- 1848 में बड़ी संख्या में राजनीतिक संगठन फ्रैंकफर्ट शहर में एकत्रित हुए और सभी ने ऑल जर्मन एसेंबली को मत देने का निर्णय किया।
- उदारवादी आंदोलन के अंदर महिलाओं को राजनीतिक अधिकार प्रदान करने का मुद्दा विवादास्पद था।
- हालांकि रूढ़िवादी ताकतें 1848 में उदारवादी आंदोलनों को दबा पाने में कामयाब हुई किंतु वे पुरानी व्यवस्था बेहाल नहीं कर पाईं।
- 1848 के बाद यूरोप में राष्ट्रवाद का जनतंत्र और क्रांति से अलगाव होने लगा।
- रूढ़िवादियों ने अकसर राष्ट्रवादी भावनाओं का इस्तेमाल किया।
- जर्मनी और इटली एकीकृत होकर राष्ट्र-राज्य बने।
- जर्मनी की तरह इटली में भी विखंडन का एक लम्बा इतिहास था।
- 1848 में जर्मनी महासंघ के विभिन्न इलाकों को जोड़कर एक निर्वाचित संसद द्वारा शासित राष्ट्र-राज्य बनाने का प्रयास किया था।

परिस्थितियों (शर्तों) के विषय में जानें (समझें)— (Know the Terms)

- **भावनात्मक विचार (Romanticism) :** एक सांस्कृतिक आंदोलन जो विज्ञान व अन्य कारणों को अस्वीकार करता है तथा हृदय व भावनाओं से परिचय कराता है। भावनात्मक विचारों का जुड़ाव एक ऐसे सामूहिक विचार पैदा करने से था जो हमें उत्तराधिकार में मिले हुए थे तथा उनसे एक ऐसी सार्वजनिक संस्कृति का विकास करना था जो राष्ट्रवाद के हित में हो।

- **क्रांतिकारी (Revolutionaries) :** उन्नीसवीं सदी में उदारवादी विचारों के समर्थक तथा राजशाही शासन के विरोधी क्रांतिकारी थे।
- **नारी आंदोलन (Feminism) :** महिलाओं के राजनीतिक, आर्थिक व सामाजिक आधारित अधिकारों व हितों की रक्षा के लिए जागरूकता व आंदोलन नारीवाद या नारी आंदोलन था।
- **फ्रैंकफर्ट पार्लियामेंट (Frankfurt Parliament) :** जर्मन इलाकों में बड़ी संख्या में राजनीतिक संगठनों ने फ्रैंकफर्ट शहर में मिलकर एक सर्व-जर्मन नेशनल एसेंबली के पक्ष में मतदान का फैसला लिया। 18 मई, 1848 को 831 निर्वाचित प्रतिनिधियों ने एक सजे-धजे जुलूस में जाकर फ्रैंकफर्ट संसद में अपना स्थान ग्रहण किया। यह संसद सेंट पॉल चर्च में आयोजित हुई। उन्होंने एक जर्मन राष्ट्र के लिए एक ऐसे संविधान का प्रारूप तैयार किया जो राजशाही पर आधारित था।
- **राष्ट्रवादी सोच, 1830 (Nationalistic Feeling, 1830) :** राष्ट्रवाद का विकास केवल युद्धों और क्षेत्रीय विस्तार से नहीं हुआ। राष्ट्र के विचार के निर्माण में संस्कृति ने एक अहम भूमिका निभाई। कला, काव्य, कहानियों, किस्सों और संगीत ने राष्ट्रवादी भावनाओं को गढ़ने और व्यक्त करने में सहयोग दिया।

व्यक्तियों (व्यक्तित्वों) के विषय में जाने— (Know the Personalities)

1. **लुइजे ऑटो-पीटर्स (Louise Otto-Peters) :** लुइजे एक राजनैतिक कार्यकर्ता थी जिसने महिलाओं की पत्रिका और तत्पश्चात एक नारीवादी संगठन की स्थापना की।
2. **कार्ल वैल्कर (Carl Welcker) :** कार्ल वैल्कर फ्रैंकफर्ट संसद के एक निर्वाचित सदस्य थे। जिन्होंने महिलाओं के बराबर के अधिकार का विरोध किया। उनका मानना था कि यह कार्य प्रकृति के विरुद्ध होगा।

महत्वपूर्ण तिथियाँ (Know the Dates) :

- **1830 :** प्रथम विद्रोह फ्रांस में जुलाई 1830 में हुआ।
- **1830 :** 1830 का दशक यूरोप में भारी कठिनाइयाँ लेकर आया।
- **1848 :** जर्मन इलाकों में बड़ी संख्या में राजनीतिक संगठनों ने फ्रैंकफर्ट शहर में मिलकर एक सर्व-जर्मन एसेंबली के पक्ष में मतदान किया।

प्रकरण (TOPIC)-3

राष्ट्र-राज्य–इटली तथा जर्मनी का निर्माण

Nation-States–Unification of Italy And Germay

त्वरित समीक्षा (Revision Notes) :

- 1848 के बाद यूरोप में राष्ट्रवाद का जनतंत्र और क्रांति से अलगाव होने लगा। इसे उस प्रक्रिया में देखा जा सकता है जिससे जर्मनी और इटली एकीकृत होकर राष्ट्र-राज्य बने।
- 1848 में जर्मन के मध्यवर्गीय लोगों, जिनमें वाणिज्यिक, व्यापारी, कलाकार, धनी आदि, में राष्ट्रवादी भावनाएँ व्याप्त थीं। वे सभी 1848 में जर्मन महासंघ के विभिन्न इलाकों को जोड़कर एक निर्वाचित संसद द्वारा शासित राष्ट्र-राज्य बनाने का प्रयास किया था। निर्वाचित प्रतिनिधियों ने एक सजे-धजे जुलूस में जाकर फ्रैंकफर्ट संसद में अपना स्थान ग्रहण किया। यह संसद सेंट पॉल चर्च में आयोजित हुई। जब प्रतिनिधियों ने प्रशा के राजा फ्रेडरिख विल्हेम चतुर्थ को ताज पहनाने की कोशिश की तो उसने उसे अस्वीकार कर उन राजाओं का साथ दिया जो निर्वाचित सभा के विरोधी थे।
- फ्रैंकफर्ट संसद के बाद प्रशा जर्मन एकीकरण का नेता बना। उसके पश्चात प्रशा ने राष्ट्रीय एकीकरण के आंदोलन का नेतृत्व संभाल लिया। उसका प्रमुख मंत्री, ऑटो वॉन बिस्मार्क इस प्रक्रिया का जनक था जिसने प्रशा की सेना और नौकरशाही की मदद ली। सात वर्ष के दौरान ऑस्ट्रिया, डेनमार्क और फ्रांस से तीन युद्धों में प्रशा की जीत हुई और एकीकरण की प्रक्रिया पूरी हुई।
- जनवरी, 1871 में, वर्साय में हुए एक समारोह ने प्रशा के राजा विलियम प्रथम को जर्मनी का सम्राट घोषित किया गया। जर्मन राज्यों के राजकुमारों, सेना प्रतिनिधियों और प्रमुख मंत्री ऑटो वान बिस्मार्क समेत प्रशा के महत्त्वपूर्ण मंत्रियों की एक बैठक वर्साय के महल के एक बेहद ठंडे शीशमहल (हॉल ऑफ मिरर्स) में हुई। नए राज्य में जर्मनी की मुद्रा, बैंकिंग और कानूनी तथा न्यायिक व्यवस्थाओं के आधुनिकीकरण पर काफी जोर दिया।

- उन्नीसवीं सदी के मध्य में इटली सात राज्यों में बँटा हुआ था। उत्तरी भाग ऑस्ट्रियाई हैब्सबर्गों के अधीन था, मध्य इलाकों पर पोप का शासन था और दक्षिणी क्षेत्र स्पेन के बूर्बो राजाओं के अधीन थे। केवल एक सार्डिनिया पीडमॉण्ट में इतालवी राजघराने का शासन था।
- मेत्सिनी रिपब्लिकन पार्टी का नेता था। उसने अपने उद्देश्यों के प्रसार के लिए यंग इटली नामक एक गुप्त संगठन भी बनाया था। 1831 और 1848 में क्रांतिकारी विद्रोहों की असफलता से युद्ध के जरिये इतालवी राज्यों को जोड़ने की जिम्मेदारी सार्डिनिया-पीडमॉण्ड के शासक विक्टर इमेनुएल द्वितीय पर आ गई। मंत्री प्रमुख कावूर जिसने इटली के प्रदेशों को एकीकृत करने वाले आंदोलन का नेतृत्व किया ने फ्रांस से सार्डिनिया-पीडमाण्ट की एक चतुर कूटनीतिक संधि की जिससे सार्डिनिया-पीडमाण्ट 1859 में की आस्ट्रियाई बलों को हरा पाने में कामयाब हुआ।
- ज्युसेपे गैरीबॉल्डी ने इटली के एकीकरण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। नियमित सैनिकों के अलावा ज्युसेपे गैरीबॉल्डी के नेतृत्व में भारी संख्या में सशस्त्र स्वयंसेवकों ने भाग लिया। 1860 में वे दक्षिणी इटली और दो सिसिलियों के राज्य में प्रवेश कर गए और स्पेनी शासनों को हटाने के लिए स्थानीय किसानों का समर्थन पाने में सफल रहे। 1861 में इमेनुएल द्वितीय को एकीकृत इटली का राजा घोषित किया गया।
- ब्रिटेन का राष्ट्र-राज्य बनने का इतिहास एकदम अलग है, ब्रिटेन बिना किसी विद्रोह और क्रांति के राष्ट्र-राज्य के रूप में संगठित हुआ। अठारहवीं सदी के पहले ब्रितानी राष्ट्र था ही नहीं। ब्रितानी द्वीप समूह में रहने वाले लोगों– अंग्रेज़, वेल्श, स्कॉट या आयरिश की मुख्य पहचान नृजातीय थी। जैसे-जैसे आंग्ल राष्ट्र की धन-दौलत, अहमियत और सत्ता में वृद्धि हुई वह द्वीप समूह के अन्य राष्ट्रों पर अपना प्रभुत्व बढ़ाने में सफल हुआ।
- एक लंबे टकराव और संघर्ष के बाद आंग्ल संसद ने 1688 में राजतंत्र से ताकत छीन ली थी। इस संसद के माध्यम से एक राष्ट्र-राज्य का निर्माण हुआ जिसके केन्द्र में इंग्लैण्ड था। इंग्लैण्ड और स्कॉटलैण्ड के बीच ऐक्ट ऑफ यूनियन (1707) से "यूनाइटेड किंगडम ऑफ ग्रेट ब्रिटेन" का गठन हुआ।
- एक ब्रितानी पहचान के विकास का अर्थ यह हुआ कि स्कॉटलैण्ड की खास संस्कृति और राजनीतिक संस्थानों को योजनाबद्ध तरीके से दबाया गया। ब्रितानियों द्वारा आयरलैण्ड को अपने नियंत्रण में कर लिया। आयरलैण्ड कैथलिक और प्रोटेस्टेंट धार्मिक गुटों में गहराई से बँटा हुआ था। अंग्रेज़ों ने आयरलैण्ड में प्रोटेस्टेंट धर्म मानने वालों को बहुसंख्यक कैथलिक देश पर प्रभुत्व बढ़ाने में सहायता की।
- 1801 में आयरलैण्ड को बलपूर्वक यूनाइटेड किंगडम में शामिल कर लिया गया। ब्रितानी प्रभाव के विरुद्ध हुए कैथलिक विद्रोहों को निर्ममता से कुचल दिया गया। नए ब्रिटेन के प्रतीक चिह्नों, ब्रितानी झंडा (यूनियन जैक) और राष्ट्रीय गान (गॉड सेव अवर नोबल किंग) को खूब बढ़ावा दिया गया और पुराने राष्ट्र इस संघ में मातहत सहयोगी के रूप में ही रह पाए।

व्यक्तियों (व्यक्तित्वों) को जानें– (Know the Personalities)

1. **ऑटो वॉन बिस्मार्क (Otto Von Bismarck) :** ऑटो वॉन बिस्मार्क प्रशा का मंत्री प्रमुख था जिसने जर्मनी के एकीकरण में प्रमुख भूमिका निभाई। ऑटो वॉन बिस्मार्क इस प्रक्रिया का जनक था जिसने प्रशा की सेना और नौकरशाही की मदद ली।
2. **काइजर विलियम (Kaiser William) : 18** जनवरी, **1871** को जर्मन राज्यों के राजकुमारों, सेना के प्रतिनिधियों और प्रमुख मंत्री ऑटो वॉन बिस्मार्क समेत प्रशा के महत्त्वपूर्ण मंत्रियों की एक बैठक वर्साय के शीशमहल (हॉल ऑफ मिरर्स) में हुई। सभा ने प्रशा में काइजर विलियम प्रथम के नेतृत्व में नए जर्मन साम्राज्य की घोषणा की। नए राज्य ने जर्मनी की मुद्रा, बैंकिंग और कानूनी तथा न्यायिक व्यवस्थाओं के आधुनिकीकरण पर जोर दिया।
3. **काउंट कैमिलो डी कावूर (Count Camillo de Cavour) :** काउंट कैमिलो दे कावूर पीडमॉण्ड का प्रमुख मंत्री था, फ्रांस के साथ संधि करके राजा की सरकार का गठन कराया। सार्डिनिया, पीडमॉण्ट **1859** में आस्ट्रियाई बलों को हटा पाने में कामयाब हुआ।
4. **ज्युसेपे गैरीबॉल्डी (Giuseppe Garibaldi) :** ज्युसेपे गैरीबॉल्डी ने इटली के एकीकरण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। रैड-शर्ट कहलाये जाने वाले स्वयंसेवकों के साथ गैरीबॉल्डी ने युद्ध में प्रवेश किया। **1860** में वे दक्षिण इटली और दो सिसिलियों के राज्य में प्रवेश कर गए और निजी शासकों को हटाने के लिए स्थानीय किसानों का समर्थन पाने में सफल रहे।

महत्वपूर्ण तिथियाँ (Know the Dates) :

- **1855 :** सार्डिनिया राज्य ने ब्रिटिश और फ्रांस की ओर से जर्मन युद्ध में भाग लिया।
- **1858 :** कावूर ने फ्रांस के साथ मिलकर गठबंधन बनाया।
- **1859-1870 :** इटली का एकीकरण।
- **1859 :** सार्डिनिया-पीडमॉण्ट ने फ्रांस के साथ मिलकर गठबंधन बनाया तथा ऑस्ट्रियाई सेनाओं को पराजित किया। बहुत बड़ी संख्या में ज्युसेपे गैरीबॉल्डी के नेतृत्व में आंदोलन में भाग लिया।

- **1860 :** सार्डिनिया-पीडमॉण्ट की सेनाएँ दक्षिण इटली और दो सिसिलियों के राज्य में प्रवेश कर गई और स्पेनी शासकों को हटाने में सफल रही।
- **1861 :** इमेनुएल द्वितीय को एकीकृत इटली का राजा घोषित किया गया तथा रोम को इटली की राजधानी घोषित किया गया।
- **1866-1871 :** जर्मनी का एकीकरण।
- **1871 :** प्रशा के राजा विलियम प्रथम को जर्मन का शासक घोषित किया गया।
- **1905 :** हैब्सबर्ग और ऑटोमन साम्राज्यों में स्लाव राष्ट्रवाद का मजबूत होना।
- **1914 :** प्रथम विश्वयुद्ध प्रारंभ।

प्रकरण (TOPIC)-4
राष्ट्र की दृश्य कल्पना : राष्ट्रवाद और साम्राज्यवाद
Visualising the Nation : Nationalism and Imperialism

त्वरित समीक्षा (Revision Notes) :

- किसी दृश्य चिन्ह के रूप में किसी को अभिव्यक्त किया जा सकता है। इसकी अभिव्यक्ति के लिए कोई उद्देश्य, तस्वीर, लिखित शब्द ध्वनि और किसी विशेष चिन्ह का उपयोग किया जा सकता है।
- अठारहवीं और उन्नीसवीं सदी में कलाकारों ने राष्ट्र का मानवीकरण करके इस प्रश्न को हल किया। उन्होंने एक देश को यूँ चित्रित किया जैसे वह कोई व्यक्ति हो। कलाकारों ने ऐसे चिन्हों का उपयोग किया जो दैनिक जीवन में उपयोग किए जाते थे तथा जिनकी पहचान अशिक्षित लोग भी आसानी से कर सकते थे। क्रांतियों के समय कलाकारों ने राष्ट्र को एक व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया। देश का चित्रण इस प्रकार से किया गया जैसे वह कोई व्यक्ति हो।
- स्वतंत्रता अथवा उदारता को जिन चिन्हों जैसे व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया गया या दृष्टांत (कहानी) के रूप में बताया गया वे सभी अव्यावहारिक थे। दृष्टांत सही और भावुक अर्थ था। उन्नीसवीं सदी में फ्रांसीसी कलाकारों ने गणतंत्र जैसे विचारों को व्यक्त करने के लिए नारी रूपक का प्रयोग किया। फ्रांस में उसे लोकप्रिय ईसाई नाम मारीआन दिया गया जिसने जन-राष्ट्र के विचार को रेखांकित किया।
- इसी प्रकार जर्मेनिया, जर्मन राष्ट्र का प्रतीक बन गई। एक टूटी हुई जंजीर क्रांति का प्रतीक बन गई।
- मारीआन के चिन्ह भी स्वतंत्रता और गणतंत्र के थे— लाल टोपी, तिरंगा और कलगी। मारीआन की प्रतिमाएँ सार्वजानिक चौकों पर लगाई गईं ताकि जनता को राष्ट्रीय प्रतीक की याद आती रहे।

राष्ट्रवाद और साम्राज्यवाद (Nationalism and Imperialism) :

- अठारहवीं सदी के अन्त व उन्नीसवीं सदी के मध्य तक यूरोप में भारी अव्यवस्था व कोलाहल का माहौल था। 1871 के बाद यूरोप में राष्ट्रवाद व साम्राज्यवाद में बदलाव का माहौल पैदा हुआ।
- यूरोप में राष्ट्रवादी समूह एक-दूसरे के विपक्षी लगातार बढ़ते जा रहे थे परिणामत: एक-दूसरे के साथ संघर्ष बढ़ रहा था। मुख्य रूप से इस संघर्ष में आधुनिक रोमानिया, बुल्गेरिया, अल्बेनिया, यूनान, मेसिडोनिया, क्रोएशिया, बोस्निया, हर्ज़ेगोविना, स्लोवेनिया, सर्बिया और मॉन्टिनिग्रो शामिल थे जो यूरोप में राष्ट्रवाद का लाभ पाना चाहते थे।
- बाल्कन क्षेत्र में बड़ी शक्तियों के बीच प्रतिस्पर्धा होने लगी। इस समय यूरोपीय शक्तियों के बीच व्यापार और उपनिवेशों के साथ नौसैनिक और सैन्य ताकत के लिए गहरी प्रतिस्पर्धा थी। जिस तरह बाल्कन समस्या आगे बढ़ी उसमें यह प्रतिस्पर्धा खुलकर सामने आई। रूस, जर्मनी, इंग्लैण्ड, ऑस्ट्रो-हंगरी की हर ताकत बाल्कन पर अन्य शक्तियों की ताकत की पकड़ को कमजोर करके क्षेत्र में प्रभाव को बढ़ाना चाहती थी।

निम्न के बारे में जानें (Know the Terms) :

- **नृजातीय (Ethnic) :** एक साझा नस्ली, जनजातीय या सांस्कृतिक उद्गम अथवा पृष्ठभूमि जिसे कोई समुदाय अपनी पहचान मानता है।
- **पहचान चिन्ह (Symbol) :** पहचान चिन्ह एक ऐसा रूपक है जो किसी की अलग से पहचान प्रस्तुत (इंगित) करता है। यह किसी उद्देश्य, तस्वीर, लिखित शब्द, ध्वनि या विशेष चिन्ह के द्वारा प्रस्तुत (इंगित) किया जाता है।
- **साम्राज्यवाद (Imperialism) :** साम्राज्यवाद एक ऐसी स्थिति है जिसमें कोई शासक अपने देश की सीमाओं को आगे बढ़ाकर अन्य देशों में अपना आधिपत्य स्थापित कर वहाँ अपने उपनिवेश बनाते हैं तथा उन देशों पर अपनी नीतियाँ लागू कर अपना शासन स्थापित करते हैं तथा इन देशों की सीमाओं का अधिग्रहण करते हैं।

- **दृष्टांत (रूपक) (Allegory) :** जब किसी अमूर्त विचार (जैसे– लालच, ईर्ष्या स्वतंत्रता, मुक्ति) का किसी व्यक्ति या किसी चीज के जरिए इंगित किया जाता है। एक रूपकात्मक कहानी के दो अर्थ होते हैं– एक शाब्दिक और एक प्रतीकात्मक।

व्यक्तियों (व्यक्तित्वों) को जानें– (Know the Personalities)

1. **मारिआन एवं जर्मेनिया (Marianne and Germania) :** जैसे ही भारत में राष्ट्र के विषय में कोई दृष्टांत दिया जाता है, तो हमारे मस्तिष्क में भारत माता की छवि एक महिला के चित्र के रूप में इंगित (प्रकट) हो जाती है। ऐसे ही मारिआन फ्रांस के लिए तथा जर्मेनिया की छवि जर्मनी के लिए इंगित (प्रकट) हो जाती है। फ्रांस व जर्मनी में रहने वाले लोगों के हृदय और मस्तिष्क में मारिआन व जर्मेनिया की छवि एक राष्ट्र की माता के रूप में प्रकट होती है तथा वे उसका सम्मान करते है व पूज्य भाव से देखते हैं। मारिआन के चिन्ह स्वतंत्रता और गणतंत्र के थे– लाल टोपी, तिरंगा और कलगी। मारिआन की प्रतिमाएँ सार्वजनिक चौकों पर लगाई गईं ताकि जनता को एकता के राष्ट्रीय प्रतीक की याद आती रहे और लोग उससे तादात्म्य स्थापित कर सकें। मारिआन की छवि सिक्कों और डाक टिकटों पर अंकित की गई। चाक्षुष अभिव्यक्तियों में जर्मेनिया बलूत वृक्ष के पत्तों का मुकुट पहनती है क्योंकि जर्मन बलूत वीरता का प्रतीक है।

महत्वपूर्ण चिन्ह (प्रतीक) (Know the Symbols)

1. टूटी जंजीर (बेड़ियाँ) – आज़ादी मिलना
2. बाज-छाप कवच – जर्मन साम्राज्य की प्रतीक शक्ति
3. बलूत पत्तियों का मुकुट – बहादुरी
4. तलवार – मुकाबले की तैयारी
5. तलवार पर लिपटी जैतून की डाली – शांति की चाह
6. काला, लाल और सुनहरा तिरंगा – 1848 में उदारवादियों-राष्ट्रवादियों का झंडा जिसे जर्मन राज्यों के ड्यूक्स ने प्रतिबंधित किया।
7. उगते सूर्य की किरण – एक नए युग का सूत्रपात

❑❑

अध्याय – 2 भारत में राष्ट्रवाद

प्रकरण (TOPIC)-1
प्रथम विश्वयुद्ध का प्रभाव, खिलाफ़त और असहयोग आंदोलन तथा आंदोलन के भीतर अलग-अलग धाराएँ
(The First World War, Khilafat and Non-Cooperation)

त्वरित समीक्षा (Revision Notes)

- प्रथम विश्वयुद्ध से रक्षा व्यय में भारी इजाफा हुआ। इस खर्चे की भरपाई करने के लिए युद्ध के नाम पर कर्जे लिए गए और करों में वृद्धि की गई। सीमा शुल्क बढ़ा दिया गया और आयकर शुरू किया गया। युद्ध के दौरान कीमतें तेज़ी से बढ़ रही थीं। 1913 से 1918 के बीच कीमतें दो गुना हो चुकी थीं जिसके कारण आम लोगों की मुश्किलें बढ़ गई थीं। गाँवों में सिपाहियों को जबरन भर्ती किया गया जिसके कारण ग्रामीण इलाकों में व्यापक गुस्सा था।
- देश के बहुत सारे हिस्सों में फसल खराब हो गई जिसके कारण खाद्य पदार्थों का भारी अभाव पैदा हो गया। उसी समय फ्लू की महामारी फैल गई। 1921 की जनगणना के मुताबिक दुर्भिक्ष और महामारी के कारण 120-130 लाख लोग मारे गए।

सत्याग्रह का विचार (The Idea of Satyagraha) :

- सत्याग्रह का विचार महात्मा गाँधी द्वारा दिया गया था, जिसकी शुरुआत उन्होंने दक्षिण अफ्रीका के जन आंदोलन से की थी। सत्याग्रह के विचार में सत्य की शक्ति पर आग्रह और सत्य की खोज पर जोर दिया जाता था। इसका अर्थ यह था कि अगर आपका उद्देश्य सच्चा है, यदि आपका संघर्ष अन्याय के खिलाफ है तो उत्पीड़क से मुकाबला करने लिए आपको किसी शारीरिक बल की आवश्यकता नहीं है। गाँधीजी का विश्वास था कि प्रतिशोध की भावना या आक्रामकता सहारा लिए बिना ही सत्याग्रही केवल अहिंसा के सहारे भी अपने संघर्ष में सफल हो सकता है।

- गाँधी जी द्वारा चलाए गए कुछ सत्याग्रह आंदोलन–

  (i) बागान व्यवस्था के खिलाफ चंपारण (बिहार) में 1916 में किसानों का आंदोलन।

  (ii) खेड़ा (गुजरात) में 1917 में किसानों की मदद के लिए सत्याग्रह आंदोलन।

  (iii) 1918 में गाँधी जी का अहमदाबाद में सूती कपड़ा कारखानों के मजदूरों के बीच सत्याग्रह आंदोलन।

- **रॉलट एक्ट 1919 (The Rowlatt Act-1919) :** रॉलट एक्ट कानून को इम्पीरियल लेजिस्लेटिव कांउसिल ने बहुत जल्दी में पास किया था। भारतीय सदस्यों में भारी विरोध के बावजूद इस कानून को पास किया गया था। इस कानून के जरिए सरकार को राजनीतिक गतिविधियों को कुचलने और राजनीतिक कैदियों को दो साल तक बिना मुकदमा चलाए जेल में बंद रखने का अधिकार मिल गया था।

- **6 अप्रैल, 1919 (On 6th April 1919) :** रॉलट एक्ट के विरोध में गाँधी जी ने एक राष्ट्रव्यापी सत्याग्रह आंदोलन चलाने का फैसला लिया। इसकी शुरुआत 6 अप्रैल को एक हड़ताल से शुरू होनी थी। विभिन्न शहरों में रैली-जुलूसों का आयोजन किया गया। रेलवे वर्कशॉप्स में कामगार हड़ताल पर चले गए। दुकानें बंद हो गईं। इस व्यापक जन-उभार से चिंतित तथा रेलवे व टेलीग्राफ जैसी संचार सुविधाओं के भंग हो जाने की आशंका से भयभीत अंग्रेजों ने राष्ट्रवादियों पर दमन शुरू कर दिया। बहुत सारे स्थानीय नेताओं को हिरासत में ले लिया गया। गाँधीजी के दिल्ली में प्रवेश करने पर पाबंदी लगा दी गई।

- **जलियाँवाला बाग (Jallianwalla Bagh) :** 10 अप्रैल, 1919 को पुलिस ने अमृतसर में एक शांतिपूर्ण जुलूस पर गोली चला दी। इसके बाद लोग बैंकों, डाकखानों और रेलवे स्टेशनों पर हमले करने लगे। मार्शल लॉ लागू कर दिया और जनरल डायर ने कमान संभाल ली।

  13 अप्रैल को जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड हुआ। उस दिन अमृतसर में बहुत सारे गाँव वाले बैशाखी के मेले में शिरकत करने के लिए जलियाँवाला बाग मैदान में जमा हुए थे। यह मैदान चारों तरफ से बंद था। शहर से बाहर होने के कारण वहाँ जुटे लोगों को यह पता नहीं था कि इलाके में मार्शल लॉ लागू किया जा चुका है। जनरल डायर हथियारबंद सैनिकों के साथ वहाँ पहुँचा और जाते ही उसने बाहर निकलने के सारे रास्तों को बंद कर दिया। इसके बाद उसके सिपाहियों ने भीड़ पर अंधाधुंध गोलियाँ चला दीं। सैकड़ों लोग मारे गए। जैसे-जैसे जलियाँवाला बाग की खबर फैली, उत्तर भारत के बहुत सारे शहरों में लोग सड़कों पर उतरने लगे। हड़तालें होने लगीं लोग पुलिस से मोर्चा लेने लगे और सरकारी इमारतों पर हमला करने लगे। सरकार ने इन कार्यवाहियों को निर्ममता से कुचलने का रास्ता अपनाया। हिंसा फैलते देख महात्मा गाँधी ने आंदोलन वापस ले लिया।

- **खिलाफत आंदोलन (Khilafat Movement) :** महात्मा गाँधी पूरे भारत में और भी ज्यादा जनाधार वाला आंदोलन खड़ा करना चाहते थे। लेकिन उनका मानना था कि हिंदू-मुसलमानों को एक-दूसरे के नजदीक लाए बिना ऐसा कोई आंदोलन नहीं चलाया जा सकता। उन्हें लगता था कि खिलाफत का मुद्दा उठाकर वे दोनों समुदायों को नजदीक ला सकते हैं। पहले विश्वयुद्ध में ऑटोमन तुर्की की हार हो चुकी थी। इस आशय की अफवाह फैली हुई थी कि इस्लामिक विश्व के आध्यात्मिक नेता (खलीफा) ऑटोमन सम्राट पर एक बहुत सख्त शांति संधि थोपी जाएगी। खलीफा की तात्कालिक शक्तियों की रक्षा के लिए मार्च 1919 में बंबई में एक खिलाफत समिति का गठन किया गया था। मोहम्मद अली और शौकत अली इस समिति के नेता थे। अली बंधुओं के साथ-साथ कई युवा मुस्लिम नेताओं ने इस मुद्दे पर संयुक्त जनकार्रवाई की संभावना तलाशने के लिए महात्मा गाँधी के साथ चर्चा शुरू कर दी थी। सितम्बर 1920 में कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में महात्मा गाँधी ने भी दूसरे नेताओं को इस बात पर राजी कर लिया कि खिलाफ़त आंदोलन के समर्थन और स्वराज के लिए एक असहयोग आंदोलन शुरू किया जाना चाहिए।

- **असहयोग आंदोलन (Non-Cooperation Movement) :** अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'हिंद स्वराज' (1909) में महात्मा गाँधी ने कहा था कि भारत में ब्रिटिश शासन भारतीयों के सहयोग से ही स्थापित हुआ था और यह शासन इसी सहयोग के कारण चल पा रहा है। अगर भारत के लोग अपना सहयोग वापस ले लें तो साल भर के भीतर ब्रिटिश शासन ढह जाएगा और स्वराज की स्थापना हो जाएगी। गाँधीजी का विश्वास था कि यदि भारतीय सहयोग देना वापस ले लें, तो ब्रिटिश शासकों के पास भारत छोड़ने के अलावा और कोई रास्ता नहीं होगा।

- **असहयोग आंदोलन के कुछ प्रस्ताव (Some of Proposals of Non-Cooperation Movement) :**

  (i) ब्रिटिश सरकार द्वारा दी गई उपाधियों को वापस कर दिया गया।

  (ii) नागारिक सेवा, सेना, पुलिस, अदालत, विधायी परिषद और स्कूल आदि का बहिष्कार किया गया।

  (iii) विदेशी पुस्तकों का बहिष्कार किया गया।

  (iv) यदि सरकार दबाव बनाती है, तो पूर्ण सविनय अवज्ञा आंदोलन चलाया जाए।

- **आंदोलन के भीतर अलग-अलग धाराएँ (Differing Stands Within the Movement) :** असहयोग खिलाफत आंदोलन जनवरी, 1921 में शुरू हुआ। विभिन्न सामाजिक समूहों ने इसमें हिस्सा लिया लेकिन प्रत्येक की अपनी-अपनी आकांक्षाएँ थीं। सभी ने स्वराज के आह्वान को स्वीकार किया लेकिन उनके लिए उसके अर्थ अलग-अलग थे।

- **अवध (Awadh) :** अवध में संन्यासी बाबा रामचन्द किसानों के आंदोलन का नेतृत्व कर रहे थे। बाबा रामचन्द इससे पहले फिजी में गिरमिटिया मजदूर के तौर पर काम कर चुके थे। उनका आंदोलन तालुकदारों और जमीदारों के खिलाफ था जो किसानों से भारी-भरकम लगान और तरह-तरह के कर वसूल रहे थे। किसानों की माँग थी कि लगान कम किया जाए, बेगार खत्म हो और दमनकारी जमीदारों का सामाजिक बहिष्कार किया जाए।
- **आदिवासी किसान :** आदिवासी किसानों ने महात्मा गाँधी के संदेश और स्वराज के विचार का कुछ और ही मतलब निकाला। अन्य वन क्षेत्रों की तरह आन्ध्र प्रदेश की गूडेम पहाड़ियों पर भी अंग्रेज़ी सरकार ने बड़े-बड़े जंगलों में लोगों के दाखिल होने पर पाबंदी लगा दी थी। लोग इन जंगलों में न तो मवेशियों को चरा सकते थे न ही जलावन के लिए लड़की और फल बीन सकते थ। वनों के नए कानून से न केवल उनकी रोटी-रोजी पर असर पड़ रहा था बल्कि उन्हें लगता था कि उनके परंपरागत अधिकार भी छीने जा रहे हैं। जब ब्रिटिश सरकार ने उन्हें सड़कों के निर्माण के लिए बेगार करने पर मजबूर किया तो लोगों ने बगावत कर दी।
- आदिवासी क्षेत्र के अनेक आदिवासियों ने असहयोग आंदोलन चलाया और गुरिल्ला युद्ध चलाते रहे।
- **बागानों में स्वराज (Swaraj in the Plantations) :** 1859 के इनलैंड इमिग्रेशन एक्ट के तहत बागानों में काम करने वाले मजदूरों को बिना इजाजत बागान से बाहर जाने की छूट नहीं होती थी और यह इजाजत विरले ही उन्हें कभी मिलती थी। जब उन्होंने असहयोग आंदोलन के बारे में सुना तो हजारों मजदूर अपने अधिकारियों की अवहेलना करने लगे। उन्होंने बागान छोड़ दिए और अपने घर को चल दिए। लेकिन वे अपनी मंजिल तक नहीं पहुँच पाए। रेलवे और स्टीमरों की हड़ताल के कारण वे रास्ते में ही फँसे रह गए। उन्हें पुलिस ने पकड़ लिया और उनकी बुरी तरह पिटाई की।

इनके बारे में जानें— (Know the Terms)

1. **राष्ट्रवाद (Nationalism) :** अपने देश के लिए सम्मान व गर्व की भावना रखना।
2. **सत्याग्रह (Satyagrah) :** जन आंदोलन का ऐसा तरीका जिसमें सत्य की शक्ति पर आग्रह व खोज पर जोर दिया जाता है। महात्मा गाँधी ने दक्षिण अफ्रीका में इस जन आंदोलन से वहाँ की नस्लभेदी सरकार से लोहा लिया था।
3. **खलीफा (Khalifa) :** इस्लामिक विश्व के आध्यात्मिक प्रमुख (नेता, गुरु, खलीफ़ा)।
4. **बेगार (Begar) :** बिना किसी पारिश्रमिक के काम कराना।
5. **जबरन भर्ती (Forced Recuritment) :** इस प्रक्रिया में ब्रिटिश शासक (अंग्रेज़) भारत के लोगों को जबरदस्ती सेना में भर्ती कर लेते थे।
6. **रॉलट एक्ट (Rowlatt Act) :** इस कानून के जरिए सरकार को राजनीतिक गतिविधियों को कुचलने और राजनीतिक कैदियों को दो साल तक बिना मुकदमा चलाए जेल में बंद रखने का अधिकार मिल गया था।
7. **जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड (Jallianwala Bagh Massacre) :** 10 अप्रैल, 1919 को बैशाखी मेले में शामिल होने के लिए बहुत सारे लोग अमृतसर के जलियाँवाला बाग में एकत्रित हुए थे। जनरल डायर ने वहाँ पहुँचकर बाहर निकलने के सभी रास्तों को बंद करा दिया और उसने भीड़ पर अंधाधुंध गोलियाँ चलवा दीं, जिसमें सैकड़ों लोग मारे गए।
8. **असहयोग खिलाफत आंदोलन (Non-Cooperation Movement) :** असहयोग खिलाफत आंदोलन जनवरी, 1921 में शुरू हुआ। इस आंदोलन का मुख्य उद्देश्य यह था कि ब्रिटेन में बने उत्पादों के लिए सहयोग प्रदान नहीं करना है। इसमें सरकारी पदवियों को वापस करना, सरकारी नौकरियों का बहिष्कार, सेना, पुलिस, अदालत, विधायी परिषद, स्कूलों और विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार तथा पूर्ण रूप से सविनय अवज्ञा आंदोलन चलाया गया।
9. **स्वदेशी (Swadeshi) :** स्वदेशी आंदोलन मुख्य रूप से ब्रिटिश उत्पादों का बहिष्कार करना तथा देश में बनी वस्तुओं व देशी तकनीक को पुनर्जीवित करना।
10. **बहिष्कार (Boycott) :** किसी के साथ संपर्क रखने और जुड़ने से इनकार करना या गतिविधियों में हिस्सेदारी, चीज़ों की खरीद व इस्तेमाल से इनकार करना। आमतौर पर विरोध का यह एक रूप होता है।
11. **पिकेट (Picket) :** प्रदर्शन या विरोध का ऐसा स्वरूप जिसमें लोग किसी दुकान, फैक्ट्री या दफ्तर के भीतर जाने का रास्ता रोक लेते हैं।

महत्वपूर्ण तिथियाँ (Know the Dates) :

- **1885 :** बम्बई में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का पहला अधिवेशन।
- **1905 :** बंगाल का विभाजन औपचारिक रूप से अस्तित्व में आया।
- **1906 :** मुस्लिम लीग की स्थापना।
- **1913-1918 :** युद्ध से कीमतों में दो गुना तक की वृद्धि।

- **1914-1918 :** प्रथम विश्वयुद्ध।
- **1917 :** महात्मा गाँधी द्वारा गुजरात के खेड़ा जिले में सत्याग्रह आंदोलन की शुरुआत।
- **1919 :** रॉलट एक्ट के पारित हो जाने से इस कानून के जरिए सरकार को राजनीतिक गतिविधियों को कुचलने और राजनीतिक कैदियों को दो साल तक बिना मुकदमा चलाए जेल में रखने का अधिकार मिल गया था।
- **10 अप्रैल, 1919 :** पुलिस ने अमृतसर में एक शांतिपूर्ण जुलूस पर गोली चला दी। मॉर्शल लॉ लागू कर दिया गया।
- **1918-1919 तथा 1920-1921 :** देश के बहुत सारे हिस्सों में फसल खराब हो गई।
- **मार्च, 1919 :** बम्बई में खिलाफत कमेटी का गठन।
- **13 अप्रैल, 1919 :** जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड।
- **सितम्बर, 1920 :** कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में यह तय किया गया कि असहयोग आंदोलन को खिलाफ और स्वराज के पक्ष में चलाया जाए।
- **दिसम्बर, 1920 :** एक समझौते के तहत असहयोग कार्यक्रम पर स्वीकृति की मोहर लगा दी गई कांग्रेस के नागपुर अधिवेशन में।

प्रकरण (TOPIC)–2
नागरिक अवज्ञा आंदोलन (सविनय अवज्ञा) की ओर 1930-1934
(Towards Civil Disobedience)

त्वरित समीक्षा (Revision Notes) :

साइमन कमीशन (Simon Commission) :

- ब्रिटेन की नई टोरी सरकार ने सर जॉन साइमन के नेतृत्व में एक वैधानिक आयोग का गठन कर दिया। इस आयोग को भारत में संवैधानिक व्यवस्था की कार्यशैली का अध्ययन करना था और उसके बारे में सुझाव देने थे। इस आयोग के सभी सदस्य अंग्रेज़ थे कोई भी सदस्य भारतीय नहीं था इसलिए भारतीय नेताओं ने इस आयोग का विरोध किया था।
- साइमन कमीशन भारत में 1928 में पहुँचा। इसका स्वागत "साइमन कमीशन वापस जाओ" (साइमन कमीशन गो बैक) के नारों से किया गया। कांग्रेस, मुस्लिम लीग, सभी पार्टियों ने प्रदर्शन में भाग लिया। इस विरोध को शांत करने के लिए वायसराय लॉर्ड इरविन ने अक्टूबर 1929 में भारत के लिए "डोमीनियन स्टेटस" का गोलमोल सा ऐलान कर दिया। उन्होंने इस बारे में कोई समय सीमा भी नहीं बताई। उन्होंने सिर्फ इतना कहा कि भावी संविधान के बारे में चर्चा करने के लिए गोलमेज सम्मेलन आयोजन किया जाएगा।

नमक यात्रा और सविनय अवज्ञा आंदोलन : शुरुआत (Salt March and Civil Disobedience Movement : Beginning) :

- देश को एकजुट करने के लिए महात्मा गाँधी को नमक एक शक्तिशाली प्रतीक दिखाई दिया। अधिकतर लोगों जिनमें ब्रिटिश लोग भी शामिल थे ने महात्मा गाँधीजी के इस विचार का मजाक बनाया। महात्मा गाँधी ने वायसराय इरविन को एक खत लिखा। इस खत में उन्होंने 11 माँगों का उल्लेख किया था। इनमें सबसे महत्त्वपूर्ण माँग नमक कर को खत्म करने की थी।
- साल्ट मार्च अथवा दांडी मार्च की शुरुआत गाँधीजी द्वारा 12 मार्च, 1930 को की गई थी। गाँधीजी ने अपने 78 विश्वस्त स्वयंसेवकों के साथ नमक यात्रा शुरू कर दी। साबरमती से लेकर दांडी तक की 240 मील की दूरी को गाँधीजी ने 24 दिनों में पूरा किया बहुत सारे लोग रास्ते में उनके साथ जुड़ गए। 6 अप्रैल, 1930 को गाँधीजी दांडी पहुँचे और उन्होंने समुद्र का पानी उबालकर नमक बनाना शुरू कर दिया। यह कानून का उल्लंघन था।
- नमक यात्रा सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरुआत का प्रतीक थी। हजारों लोगों ने देश के विभिन्न हिस्सों में नमक कानून को तोड़ा। लोगों ने सरकारी नमक कारखानों के सामने प्रदर्शन किए। आंदोलन फैला तो विदेशी कपड़ों का बहिष्कार किया जाने लगा। किसानों ने लगान चुकाने से इनकार कर दिया। गाँवों में तैनात कर्मचारी इस्तीफे देने लगे। जंगलों में रहने वाले आदिवासी वन कानूनों का उल्लंघन करने लगे।

ब्रिटिश शासकों की प्रतिक्रिया (Response of British Rulers) :

- घटनाओं से चिंतित औपनिवेशिक सरकार कांग्रेसी नेताओं को गिरफ्तार करने लगी। बहुत सारे स्थानों पर हिंसक टकराव हुए। एक महीने भर बाद महात्मा गाँधी को भी गिरफ्तार कर लिया गया। इसके बाद गुस्साए लोगों ने अंग्रेजी शासन के प्रतीकों, पुलिस चौकियों, नगरपालिका भवनों, अदालतों और रेलवे स्टेशनों पर हमले शुरू कर दिए। भयभीत सरकार ने निर्मम दमन का रास्ता अपनाया। शांतिपूर्ण सत्याग्रहियों पर हमले किए गए, औरतों व बच्चों को मारा-पीटा गया और लगभग एक लाख लोग गिरफ्तार किए गए।

गोलमेज सम्मेलन (Round Table Conference) :

- स्थितियों में एक बार फिर से बदलाव आया और महात्मा गाँधी ने आंदोलन को वापस ले लिया। 5 मार्च, 1931 को उन्होंने इरविन के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर कर दिए। यह गाँधी इरविन समझौता कहलाया। इस समझौते के जरिए गाँधीजी ने लंदन में होने वाले दूसरे गोलमेज सम्मेलन में हिस्सा लेने पर अपनी सहमति व्यक्त कर दी। इसके बदले सरकार राजनैतिक कैदियों को रिहा करने पर राजी हो गई। दिसम्बर 1931 में सम्मेलन के लिए गाँधीजी लंदन गए। यह वार्ता बीच में ही टूट गई गाँधीजी को निराश वापस लौटना पड़ा। जब गाँधीजी वापस भारत आए तो उन्होंने पाया कि अधिकतर नेता जेल में बंद हैं। कांग्रेस को गैर कानूनी घोषित कर दिया गया था। सभाओं, प्रदर्शनों और बहिष्कार जैसी गतिविधियों को रोकने के लिए सख्त कदम उठाए जा रहे थे। महात्मा गाँधी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन दोबारा शुरू कर दिया। सालभर आंदोलन चला लेकिन 1934 तक आते-आते उसकी गति मंद पड़ने लगी।

इनके बारे में जानें— (Know the Terms)

- **सविनय अवज्ञा (Civil Disobedience) :** सविनय अवज्ञा आंदोलन के अन्तर्गत लोगों को न केवल अंग्रेजों का सहयोग न करने के लिए बल्कि औपनिवेशिक कानूनों का उल्लंघन करने के लिए आह्वान किया जाने लगा।
- **स्वराज (Swaraj) :** 'स्वराज' का अर्थ स्वतंत्रता अथवा अपना शासन है। 1920 में 'स्वराज' का अर्थ "स्वयं की सरकार" से था। सभी लोगों ने स्वराज का अर्थ अपने-अपने तरीके से लगाया था।
- **साइमन कमीशन (Simon Commission) :** ब्रिटेन की नयी टोरी सरकार ने सर जॉन साइमन के नेतृत्व में एक वैधानिक आयोग का गठन कर दिया। इस आयोग को भारत में संवैधानिक व्यवस्था की कार्यशैली का अध्ययन करना था और उसके बारे में सुझाव देने थे। 1928 में यह आयोग भारत आया।
- **नमक कानून (Salt Law) :** नमक एक ऐसा खाद्य पदार्थ है, जिसका सम्पूर्ण विश्व में उपयोग किया जाता है तथा गरीब और अमीर दोनों ही इसका उपयोग करते हैं। भारत में नमक के उत्पादन पर ब्रिटिश सरकार ने एकाधिकार की नीति अपना रखी थी। सरकार ने नमक पर एक कर लगा रखा था जो अमीर-गरीब दोनों पर था बल्कि गरीबों पर विशेष रूप से था। गाँधीजी ने सोचा कि ब्रिटिश सरकार का यह कानून गैर कानूनी है जिसका विरोध किया जाना चाहिए इसके लिए उन्होंने 'नमक कानून' का उल्लंघन किया।
- **गाँधी-इरविन समझौता (Gandhi Irwin Pact) :** जब ब्रिटिश सरकार ने सविनय अवज्ञा आंदोलनकारियों के विरुद्ध निर्मम दमनकारी रास्ता अपनाया, तब गाँधीजी ने आंदोलन वापस करने का निर्णय लिया। गाँधीजी ने इरविन के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर कर दिए, इस समझौते के अनुसार गाँधीजी गोलमेज सम्मेलन के लिए लंदन गए।

महत्वपूर्ण तिथियाँ (Know the Dates) :

- **1920 :** अवध में किसानों का संघर्ष चल रहा था, लेकिन कांग्रेस नेता इससे खुश नहीं थे।
- **1921 :** आन्ध्र प्रदेश की गूडेम पहाड़ियों में उग्र गुरिल्ला आंदोलन फैल गया। आंदोलन की शुरुआत अल्लूरी सीताराम राजू ने की थी।
- **1921-22 :** विदेशी कपड़ों की होली जलाई जाने लगी। जून 1920 में जवाहरलाल नेहरू ने अवध के गाँवों का दौरा किया।
- **फरवरी, 1922 :** महात्मा गाँधी ने असहयोग आंदोलन को वापस लेने का निर्णय लिया। मोतीलाल नेहरू और सी. आर. दास द्वारा स्वराज पार्टी का गठन किया गया।
- **1924 :** राजू पकड़ा गया और फाँसी की सजा दी गई।
- **1927 :** भारतीय वाणिज्य एवं उद्योग परिसंघ (FICCI) का गठन किया गया।
- **1928 :** साइमन कमीशन भारत आया।
- **1928 :** हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी (HSRA) का गठन किया।
- **अक्टूबर, 1929 :** भारत के लिए "डोमीनियन स्टेटस" का ऐलान लार्ड इरविन ने किया।
- **अक्टूबर, 1929 :** जवाहरलाल नेहरू, बाबा रामचन्द्र व अन्य नेताओं के नेतृत्व में अवध किसान सभा का गठन कर लिया गया।
- **दिसम्बर, 1929 :** कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन में पूर्ण स्वराज की माँग की गई।
- **26 जनवरी, 1930 :** स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया गया।
- **31 जनवरी 1930 :** गाँधीजी ने वायसराय इरविन को 11 माँगों का एक पत्र भेजा।
- **अप्रैल, 1930 :** अब्दुल गफ्फार खान को गिरफ्तार कर लिया गया।
- **6 अप्रैल, 1930 :** नमक यात्रा में गाँधीजी दांडी पहुँचे, गाँधीजी ने नमक कानून को तोड़ा।

- **1930 :** सविनय अवज्ञा आंदोलन जारी, नमक सत्याग्रह, गाँधीजी का दांडी मार्च, प्रथम गोलमेज सम्मेलन।
- **5 मार्च, 1930 :** गाँधीजी इरविन समझौते पर हस्ताक्षर।
- **दिसम्बर, 1931 :** गाँधीजी द्वितीय गोलमेज सम्मेलन के लिए रवाना।
- **1931 :** द्वितीय गोलमेज सम्मेलन गाँधी इरविन समझौता, भारत की जनगणना।
- **1932 :** कांग्रेस आंदोलन का सुपरसैशन, तृतीय गोलमेज सम्मेलन।
- **सितम्बर, 1932 :** गाँधीजी और अंबेडकर के बीच पूना समझौता।
- **1934 :** सविनय अवज्ञा आंदोलन वापस।
- **1935 :** भारत सरकार अधिनियम प्राप्त टायल एसेंट।

प्रकरण (TOPIC)-3
सामूहिक अपनेपन का भाव
(The Sense of Collective Belonging)

त्वरित समीक्षा (Revision Notes) :

- **किसान (Farmers) :** किसानों के लिए स्वराज की लड़ाई भारी लगान के खिलाफ लड़ाई थी। जब 1931 में लगानों के कम हुए बिना आंदोलन वापस ले लिया गया तब किसानों को बड़ी निराशा हुई। फलस्वरूप जब 1932 में आंदोलन दुबारा शुरू हुआ तो उनमें से बहुत से किसानों ने आंदोलन में हिस्सा लेने से इनकार कर दिया। गरीब किसान केवल लगान में ही कमी नहीं चाहते थे। वे चाहते थे कि उन्हें जमींदारों को जो भाड़ा चुकाना था उसे माफ कर दिया जाए। इसके लिए उन्होंने कई रेडिकल आंदोलनों में हिस्सा लिया जिनका नेतृत्व अकसर समाजवादियों और कम्यूनिस्टों के हाथ में होता था। अमीर किसानों और जमीदारों के भय से कांग्रेस "भाड़ा विरोधी" आंदोलनों को समर्थन देने में प्राय: हिचकिचाती थी। इसी कारण गरीब किसानों और कांग्रेस के बीच संबंध अनिश्चित बने रहे।
- **व्यापारी वर्ग (Businessman) :** प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान भारतीय व्यापारियों और उद्योगपतियों ने भारी मुनाफा कमाया था और वे ताकतवर हो चुके थे। अपने कारोबार को फैलाने के लिए उन्होंने ऐसी औपनिवेशिक नीतियों का विरोध किया जिनके कारण उनकी व्यावसायिक गतिविधियों में रुकावट आती थी। वे विदेशी वस्तुओं के आयात से सुरक्षा चाहते थे और रुपया-स्टर्लिंग विदेशी विनिमय अनुपात में बदलाव चाहते थे जिससे आयात में कमी आ जाए। 1920 में भारतीय औद्योगिक एवं व्यावसायिक कांग्रेस और 1927 में भारतीय वाणिज्य एवं उद्योग परिसंघ (फिक्की) का गठन किया गया। ज्यादातर व्यवसायी स्वराज को एक ऐसे युग के रूप में देखते थे जहाँ कारोबार पर औपनिवेशिक पाबंदियाँ नहीं होंगी और व्यापार व उद्योग निर्बाध ढंग से फल-फूल सकेंगे। उन्हें उग्र गतिविधियों का भय था। वे लंबी अशांति की आशंका और कांग्रेस के युवा सदस्यों में समाजवाद के बढ़ते प्रभाव से डरे हुए थे।
- **औद्योगिक श्रमिक (Industrial Workers) :** औद्योगिक श्रमिकों ने सविनय अवज्ञा आंदोलन से दूरी बना ली थी। जैसे-जैसे उद्योगपति कांग्रेस के नजदीक आ रहे थे, मजदूर कांग्रेस से छिटकने लगे थे। फिर भी कुछ मजदूरों ने सविनय अवज्ञा आंदोलन में हिस्सा लिया। कांग्रेस अपने कार्यक्रम में मजदूरों की माँगों को समाहित करने में हिचकिचा रही थी। कांग्रेस को लगता था कि इससे उद्योगपति दूर चले जाएँगे।
- **औरतों की भागीदारी (Women's Participation) :** सिविल नाफरमानी (सविनय अवज्ञा) आंदोलन में औरतों ने बड़े पैमाने पर हिस्सा लिया। शहरी इलाकों में ज्यादातर ऊँची जातियों की महिलाएँ सक्रिय थीं जबकि ग्रामीण इलाकों में सम्पन्न किसान परिवारों की महिलाएँ आंदोलन में हिस्सा ले रही थीं। लंबे समय तक कांग्रेस संगठन में किसी भी महत्वपूर्ण पद पर औरतों को जगह देने से हिचकिचाती रही। कांग्रेस को महिलाओं की प्रतीकात्मक उपस्थिति में ही दिलचस्पी थी।

इनके बारे में जानें— (Know the Terms)

1. **रीति रिवाज (Folklores) :** पारम्परिक विश्वास, रीति रिवाज और कहानियाँ समुदाय में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में मौखिक रूप से जाती हैं। अनेक राष्ट्रवादी नेताओं ने लोक कथाओं व गाथाओं से राष्ट्रवाद का विचार लिया। ऐसा विश्वास है कि पुराने रीतिरिवाज हमें पुरानी परम्परा और संस्कृति की सही तस्वीर दिखाते हैं।

2. **इतिहास की पुर्नव्याख्या (Reinterpretation of History) :** बहुत सारे भारतीयों का मानना था कि ब्रिटिश सरकार ने भारतीय इतिहास को विभिन्न तरीकों से बदलकर प्रस्तुत किया। इसके जवाब में भारत के लोग अपनी महान उपलब्धियों की खोज में अतीत की ओर देखने लगे। उन्होंने उस गौरवमयी प्राचीन युग के बारे में लिखना शुरू किया जब कला और वास्तु शिल्प, विज्ञान और गणित, धर्म और संस्कृति, कानून और दर्शन, हस्तकला और व्यापार सभी फल-फूल रहे थे।

महत्वपूर्ण तिथियाँ (Know the Dates) :

- **1930 :** डॉ. बी. आर. अम्बेडकर ने दलित वर्ग का गठन किया।
- **1937 :** प्रान्तीय विधायिका के चुनाव सम्पन्न हुए।
- **1939 :** द्वितीय विश्वयुद्ध की शुरुआत।

❑❑

अध्याय – 3 भूमंडलीकृत विश्व का बनना

प्रकरण (TOIPC)-1
भूमंडलीकृत विश्व का बनना एवं उन्नीसवीं शताब्दी (विश्व अर्थव्यवस्था एवं उपनिवेशवाद)

त्वरित समीक्षा (Revision Notes)

- "वैश्वीकरण" आमतौर पर एक ऐसी आर्थिक व्यवस्था है जो मोटे तौर पर लगभग पिछले पचास सालों में ही हमारे सामने आई है।
- प्राचीन काल से ही यात्री, व्यापारी, पुजारी और तीर्थयात्री, ज्ञान, अवसरों और आध्यात्मिक शांति के लिए या उत्पीड़न/यातनापूर्ण जीवन से बचने के लिए दूर–दूर की यात्राओं पर जाते रहे हैं।
- आधुनिक काल से पहले के युग में दुनिया के दूर–दूर स्थित भागों के बीच व्यापारिक और सांस्कृतिक संपर्कों का सबसे जीवंत उदाहरण सिल्क मार्गों के रूप में दिखाई देता है।
- 'सिल्क मार्ग' नाम से पता चलता है कि इस मार्ग से पश्चिम को भेजे जाने वाले चीनी रेशम (सिल्क) का कितना महत्त्व था।
- व्यापार और सांस्कृतिक आदान–प्रदान दोनों प्रक्रियाएँ साथ–साथ चलनी थीं।
- जब भी व्यापारी और मुसाफिर नए देश में जाते थे, जाने–अनजाने वहाँ नई फसलों के बीज बो आते थे।
- साधारण के आलू का इस्तेमाल करने पर यूरोप के गरीबों की जिंदगी आमूल रूप से बदल गई थी।
- आयरलैंड के गरीब काश्तकार तो आलू पर इस हद तक निर्भर हो चुके थे कि जब 1840 के दशक के मध्य में किसी बीमारी के कारण आलू की फसल खराब हो गई तो लाखों भुखमरी के कारण मौत के मुँह में चले गए।
- जब यूरोपीय जहाजियों ने एशिया तक का समुद्री रास्ता ढूँढ़ लिया और वे पश्चिमी सागर को पार करते हुए अमेरिका तक जा पहुँचे।
- आज के पेरू और मैक्सिको में मौजूद खानों से निकलने वाली कीमती धातुओं, खासतौर से चाँदी ने भी यूरोप की संपदा को बढ़ाया और पश्चिम एशिया के साथ होने वाले उसके व्यापार को गति प्रदान की।
- सोलहवीं सदी के मध्य तक आते–आते पुर्तगाली और स्पेनिश सेनाओं की विजय का सिलसिला शुरू हो चुका था। उन्होंने अमेरिका को उपनिवेश बनाना शुरू कर दिया था।
- स्पेनिश विजेताओं के सबसे शक्तिशाली हथियारों में चेचक जैसे कीटाणु थे जो स्पेनिश सैनिकों और अफसरों के साथ अमेरिका जा पहुँचे थे।
- लाखों साल से दुनिया से अलग–थलग रहने के कारण अमेरिका के लोगों के शरीर में यूरोप से आने वाली इन बीमारियों से बचने की रोग–प्रतिरोधी क्षमता नहीं थी।
- उन्नीसवीं सदी तक यूरोप में भूख का ही साम्राज्य था। शहरों में बेहिसाब भीड़ थी और बीमारियों का बोलबाला था।
- अठारहवीं शताब्दी का काफी समय बीत जाने के बाद भी चीन और भारत को दुनिया के सबसे धनी देशों में गिना जाता था। एशियाई व्यापार में भी उन्हीं का दबदबा था।

- विशेषज्ञों का मानना है कि पन्द्रहवीं सदी से चीन ने दूसरे देशों के साथ अपने संबंध कम करना शुरू कर दिए और वह दुनिया से अलग-थलग पड़ने लगा।
- चीन की घटती भूमिका और अमेरिका के बढ़ते महत्त्व के चलते विश्व व्यापार का केन्द्र पश्चिम की ओर खिसकने लगा।
- यूरोप ही विश्व व्यापार का सबसे बड़ा केन्द्र बन गया।
- आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और तकनीकी कारकों ने पूरे समाजों की कायापलट कर दी और विदेश संबंधों को नए ढर्रे में ढाल दिया।
- अर्थशास्त्रियों ने अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक विनिमय में तीन तरह की गतियों या "प्रवाहों" का उल्लेख किया है।
  - **(i)** व्यापार का प्रवाह
  - **(ii)** श्रम का प्रवाह
  - **(iii)** पूँजी का प्रवाह
- अठारहवीं सदी के आखिरी दशकों में ब्रिटेन की आबादी तेजी से बढ़ने लगी थी। नतीजा, ब्रिटेन में भोजन की माँग तेजी से बढ़ी।
- भूस्वामियों के दबाव में सरकार ने मक्का के आयात पर भी पाबंदी लगा दी थी।
- जिन कानूनों के सहारे सरकार ने मक्का के आयात की पाबंदी लागू की थी उन्हें "कार्न लॉ" कहा जाता था।
- कॉर्न लॉ के निरस्त हो जाने के बाद बहुत कम कीमत पर खाद्य पदार्थों का आयात किया जाने लगा। आयातित खाद्य पदार्थों की लागत ब्रिटेन में पैदा होने वाले खाद्य पदार्थों से कम थी।
- खेतिहर इलाकों को बंदरगाहों से जोड़ने के लिए रेलवे की जरूरत थी।
- नयी जमीनों पर खेती करने के लिए यह आवश्यक था कि दूसरे इलाकों के लोग वहाँ आकर बसें। यानी नए घर बनाना और नयी बस्तियाँ बसाना भी जरूरी था।
- इन सारे कामों के लिए पूँजी और श्रम की जरूरत थी। इसके लिए लंदन जैसे वित्तीय केन्द्रों से पूँजी आने लगी।
- अमेरिका और आस्ट्रेलिया जैसे जिन स्थानों पर मजदूरों की कमी थी वहाँ लोगों को ले जाकर बसाया जाने लगा यानी श्रम का प्रवाह होने लगा।
- उन्नीसवीं सदी में यूरोप के लगभग पाँच करोड़ लोग अमेरिका और आस्ट्रेलिया में जाकर बस गए। पूरी दुनिया में करीब पन्द्रह करोड़ लोग बेहतर भविष्य की चाह में अपने घर-बार छोड़कर दूर-दूर देशों में जाकर बसने लगे थे।
- 1890 तक एक वैश्विक कृषि अर्थव्यवस्था सामने आ चुकी थी।
- ब्रिटिश भारतीय सरकार ने अर्द्ध-रेगिस्तानी परती जमीनों को उपजाऊ बनाने के लिए नहरों का जाल बिछा दिया ताकि निर्यात के लिए गेहूँ और कपास की खेती की जा सके।
- रेलवे, भाप के जहाज, टेलिग्राफ ये सब तकनीकी बदलाव बहुत महत्त्वपूर्ण रहे। उनके बिना उन्नीसवीं सदी में आए परिवर्तनों की कल्पना नहीं की जा सकती थी।
- औपनिवेशीकरण के कारण यातायात और परिवहन साधनों में काफी सुधार किए गए।
- माँस उत्पादों के व्यापार से इस प्रक्रिया का अच्छा अंदाजा मिलता है। 1870 के दशक तक अमेरिका से यूरोप को माँस का निर्यात नहीं किया जाता था। उस समय केवल जिंदा जानवर ही भेजे जाते थे जिन्हें यूरोप ले जाकर ही काटा जाता था।
- माँस खाना एक महँगा सौदा था और यूरोप के गरीबों की पहुँच से बाहर था।
- यूरोप के गरीबों की जीवन स्थिति सुधरी तो देश में शांति स्थापित होने लगी और दूसरे देशों में साम्राज्यवादी मंसूबों का समर्थन मिलने लगा।
- उन्नीसवीं शताब्दी के आखिरी दशकों में व्यापार बढ़ा और बाजार तेजी से फैलने लगे।
- उन्नीसवीं सदी के आखिर में ब्रिटेन और फ्रांस ने अपने शासन वाले विदेशी क्षेत्रफल में भारी वृद्धि कर ली थी। बेल्जियम और जर्मनी नयी औपनिवेशिक ताकतों के रूप में सामने आए।
- अफ्रीका में 1890 के दशक में रिंडरपेस्ट नामक बीमारी बहुत तेजी से फैल गई। मवेशियों में प्लेग की तरह फैलने वाली इस बीमारी से लोगों की आजीविका और स्थानीय अर्थव्यवस्था पर गहरा असर पड़ा। यह इस बात का उदाहरण है कि औपनिवेशिक समाजों पर यूरोपीय साम्राज्यवादी ताकतों के प्रभाव से बड़े पैमाने पर क्या असर पड़े। इस उदाहरण से पता चलता है कि हमलों और विजय के इस युग में दुर्घटनावश फैल गई मवेशियों की बीमारी ने भी हजारों लोगों का जीवन व भाग्य बदल कर रख दिया और दुनिया के साथ उनके संबंधों को नयी शक्ल में ढाल दिया।

- उन्नीसवीं सदी के आखिर में यूरोपीय ताकतें अफ्रीका के विशाल भूक्षेत्र और खनिज भंडारों को देखकर इस महाद्वीप की ओर आकर्षित हुई थीं।
- लेकिन अफ्रीका में काम करने वाले मजदूरों की बहुत बड़ी कमी थी। मजदूरों की भर्ती और उन्हें अपने पास रोके रखने के लिए मालिकों ने बहुत सारे हथकंडे आजमा कर देख लिए लेकिन बात नहीं बनी।
- मजदूरों पर भारी भरकम कर लाद दिए गए जिसका भुगतान तभी किया जा सकता था जब करदाता बागानों या खदानों में काम करता हो।
- उन्नीसवीं सदी में भारत और चीन के लाखों मजदूरों को बागानों, खदानों और सड़क व रेलवे निर्माण परियोजनाओं में काम करने के लिए दूर–दूर के देशों में ले जाया जाता था।
- भारतीय अनुबंधित श्रमिकों को खास तरह के अनुबंध या एग्रीमेंट के तहत ले जाया जाता था।
- भारत के ज्यादातर अनुबंधित श्रमिक मौजूदा पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य भारत और तमिलनाडु के सूखे इलाकों से जाते थे।
- भारतीय अनुबंधित श्रमिकों को मुख्य रूप से कैरीबियाई द्वीप समूह (मुख्यत: त्रिनिदाद, गुयाना और सुरीनाम) मारीशस व फिजी ले जाया जाता था।
- उन्नीसवीं सदी की इस अनुबंध व्यवस्था को बहुत सारे लोगों ने "नयी दास प्रथा" का भी नाम दिया है।
- बीसवीं सदी के शुरुआती सालों से ही हमारे देश के राष्ट्रवादी नेता इस प्रथा का विरोध करने लगे थे। उनकी राय में यह बहुत अपमानजनक और कूट व्यवस्था थी। इसी दबाव के कारण 1921 में इसे खत्म कर दिया गया।
- शिकारीपूरी श्रॉफ और नट्टूकोट्टई उन बहुत सारे बैंकरों और व्यापारियों में से थे जो मध्य एवं दक्षिण पूर्व एशिया में निर्यातोन्मुखी खेती के लिए कर्ज देते थे। इसके लिए वे या तो अपनी जेब से पैसा लगाते थे या यूरोपीय बैंकों से कर्जा लेते थे।
- अफ्रीका में यूरोपीय उपनिवेशकारों के पीछे–पीछे भारतीय व्यापारी और महाजन भी जा पहुँचे।
- औद्योगीकरण के बाद ब्रिटेन में भी कपास का उत्पादन बढ़ने लगा था। इसी कारण वहाँ के उद्योगपतियों ने सरकार पर दबाव डाला कि वह कपास के आयात पर रोक लगाए और स्थानीय उद्योगों की रक्षा करे।
- ब्रिटेन में आयातित कपड़ों पर सीमा शुल्क थोप दिए गए। वहाँ महीन भारतीय कपास का आयात कम होने लगा।
- उन्नीसवीं शताब्दी में भारतीय बाजारों में ब्रिटिश औद्योगिक उत्पादों की बाढ़ सी आ गई थी।
- ब्रिटेन से जो माल भारत भेजा जाता था उसकी कीमत भारत से ब्रिटेन भेजे जाने वाले माल की कीमत से ज्यादा होती थी। भारत के साथ ब्रिटेन हमेशा "व्यापार अधिशेष" की अवस्था में रहता था।
- ब्रिटेन इस मुनाफे के सहारे दूसरों देशों के साथ होने वाले व्यापारिक घाटे की भरपाई कर लेता था। बहुपक्षीय बंदोवस्त ऐसे ही काम करता है।

इनके बारे में जाने (Know the Terms)

- **विश्व में व्याप्त [Global (Worldwide)]-** विश्व के सभी देशों का एकत्रीकरण।
- **वैश्वीकरण (Globalisation)-** वैश्वीकरण आमतौर पर एक ऐसी आर्थिक व्यवस्था है जो मोटे तौर पर पिछले सालों में हमारे सामने आई है। इसमें व्यापार पूँजी और श्रम का प्रवाह होता है।
- **सिल्क मार्ग (Silk Route)-** एक ऐसा मार्ग जिसका उपयोग व्यापारी चीन से पश्चिम को चीनी रेशम भेजने के लिए करते थे।
- **कौड़ी (Cowrie)-** एक हिन्दी शब्द जिसका अर्थ कौड़ियाँ है। जिन्हें पैसे या मुद्रा के रूप में इस्तेमाल किया जाता था।
- **श्रमिक (Coolies)-** भारत के अनुबंधित श्रमिक जिन्हे कैरीबियाई द्वीप समूह में श्रमिक बनाकर भेजा गया था।
- **कॉर्न लॉ (Corn Law)-** ब्रिटिश कानून जिसके द्वारा मक्का के आयात को प्रतिबंधित कर दिया गया था।
- **अनुबंधित श्रमिक (Indentured Labour)-** भारतीय अनुबंधित श्रमिकों को खास तरह के अनुबंध के तहत ले जाया जाता था। इन अनुबंधों में यह शर्त होती थी कि यदि मजदूर अपने मालिक के बागानों में पाँच साल काम कर लेंगे तो वे स्वदेश लौट सकते हैं।

महत्वपूर्ण तिथियाँ (Know the Dates)

- **3000 ईसा पूर्व (3000 BCE)-** समुद्री तटों पर होने वाले व्यापार के माध्यम से सिंधु घाटी की सभ्यता उस इलाके से भी जुड़ी हुई थी जिसे आज हम पश्चिमी एशिया के नाम से जानते हैं।
- **ईसा पूर्व-15 वीं शताब्दी (BCE-15th century)-** सिल्क मार्ग जो पन्द्रहवीं शताब्दी तक अस्तित्व में थे।

- **मध्य सोलहवीं शताब्दी (Mid sixteenth century)**– पुर्तगाली और स्पेनिशों ने अमेरिका को उपनिवेश बनाना शुरू कर दिया था।
- **1845-1849** –के बीच पड़े भयनाक आयरिश आलू अकाल के दौरान आयरलैंड के लगभग **10,00,000** लाख भुखमरी के कारण मर गए थे।
- **1885** – यूरोप के ताकतवर देशों की बर्लिन में एक बैठक हुई जिसमें अफ्रीका को आपस में बाँट लिया गया था।
- **1890** – तक एक वैश्विक कृषि अर्थव्यवस्था समाने आ चुकी थी।
- **1890** – रिंडरपेस्ट (मवेशियों का प्लेग) ने अफ्रीकी लोगों के जीवन को प्रभावित किया व स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी प्रभावित किया।
- **1892** – रिंडरपेस्ट बीमारी अफ्रीका के अटलांटिक तट तक जा पहुँची।
- **1900** – बीसवीं सदी के शुरुआती सालों से ही भारत के राष्ट्रवादी अनुबंधित श्रमिकों की प्रथा का विरोध करने लगे थे। उनकी राय में यह बहुत अपमानजनक और क्रूर व्यवस्था थी।
- **1914-1918** – प्रथम विश्वयुद्ध लड़ा गया।
- **1921** – अनुबंधित श्रमिक व्यवस्था को समाप्त कर दिया गया।

प्रकरण (TOPIC)–2
महायुद्धों के बीच अर्थव्यवस्था और विश्व अर्थव्यवस्था का पुनर्निर्माण
(The Inter-War Economy and Rebuilding The world Economy)

त्वरित समीक्षा (Revision Notes)

- पहला विश्वयुद्ध (1914-18) मुख्य रूप से यूरोप में ही लड़ा गया। लेकिन उसके असर सारी दुनिया में महसूस किए गए। इस दौरान पूरी दुनिया में चौतरफा आार्थिक एवं राजनीतिक अस्थिरता बनी रही।
- यह पहला आधुनिक औद्योगिक युद्ध था। इस युद्ध में मशीनगनों, टैंकों, हवाई जहाजों और रासायनिक हथियारों का भयानक पैमाने पर इस्तेमाल किया गया।
- मृतकों और घायलों में से ज्यादातर कामकाजी उम्र के लोग थे। इस महाविनाश के कारण यूरोप में कामकाज के लायक लोगों की संख्या कम रह गई।
- इस युद्ध के लिए ब्रिटेन को अमेरिकी बैंकों और अमेरिकी जनता से भारी कर्जा लेना पड़ा। फलस्वरूप इस युद्ध ने अमेरिका को कर्जदार की बजाय कर्जदाता देश बना दिया।
- युद्ध से पहले ब्रिटेन दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था था। युद्ध के बाद सबसे बड़ा लंबा संकट ब्रिटेन को ही झेलना पड़ा। जिस समय ब्रिटेन युद्ध से जूझ रहा था उसी समय भारत और जापान में उद्योग विकसित होने लगे थे।
- युद्ध के बाद भारतीय बाजार में पहले वाली वर्चस्वशाली स्थिति प्राप्त करना ब्रिटेन के लिए बहुत मुश्किल हो गया था। अब उसे जापान से भी मुकाबला करना था।
- युद्ध के कारण आर्थिक उछाह का माहौल पैदा हो गया था क्योंकि माँग, उत्पादन और रोजगारों में भारी इजाफा हुआ था।
- युद्ध से पहले पूर्वी यूरोप विश्व बाजार में गेहूँ की आपूर्ति करने वाला एक बड़ा केन्द्र था। युद्ध के दौरान यह आपूर्ति अस्त–व्यस्त हुई तो कनाडा, अमेरिका और आस्ट्रेलिया में गेहूँ की पैदावर अचानक बढ़ने लगी।
- लेकिन जैसे ही युद्ध समाप्त हुआ पूर्वी यूरोप में गेहूँ की पैदावार सुधरने लगी और विश्व बाजारों में गेहूँ की अति हालात पैदा हो गए। अनाज की कीमतें गिर गईं, ग्रामीण आय कम हो गई और किसान गहरे कर्ज में फँस गए।
- 1920 के दशक की अमेरिकी अर्थव्यवस्था की एक बड़ी खासियत थी बृहत उत्पादन का चलन। कार निर्माता हेनरी फोर्ड बृहत उत्पादन के विख्यात प्रणेता थे।
- टी–माडल नामक कार बृहत उत्पादन पद्धति से बनी पहली कार थी।
- बृहत उत्पादन पद्धति ने इंजीनियरिंग आधारित चीजों की लागत और कीमतों में कमी ला दी। इसके साथ ही बहुत सारे लोग फ्रिज, वाशिंग मशीन, रेडियो, ग्रामोफोन प्लेयर्स आदि भी खरीदने लगे। ये सब चीजें हायर–परचेज व्यवस्था के तहत खरीदी जानी थीं।
- मकानों के निर्माण और घरेलू चीजों की जरूरत में निवेश से रोजगार और माँग बढ़ती थी तो दूसरी ओर उपभोग भी बढ़ता था। बढ़ते उपभोग के लिए और ज्यादा निवेश की जरूरत थी जिससे और नए रोजगार और आमदनी में वृद्धि होने लगती थी।

- आर्थिक महामंदी की शुरुआत 1929 से हुई जिसे 1929 की महामंदी के नाम से जाना गया।
- इस दौरान दुनिया के ज्यादातर हिस्सों में उत्पादन, रोजगार, आय और व्यापार में भयानक गिरावट दर्ज की गई।
- महामंदी का पहला कारण कृषि क्षेत्र में अति उत्पादन की समस्या बनी हुई थी।
- महामंदी का दूसरा कारण 1920 के दशक के मध्य में बहुत सारे देशों ने अमेरिका से कर्जे लेकर अपनी निवेश संबंधी जरूरतों को पूरा किया था। जब हालात अच्छे थे तो अमेरिका से कर्जा जुटाना आसान था लेकिन संकट का संकेत मिलते ही अमेरिकी उद्यमियों के होश उड़ गए।
- अमेरिकी पूँजी के लौट जाने से पूरी दुनिया पर असर जरूर पड़ा। यूरोप के कई बैंक धराशायी हो गए। कई देशों की मुद्रा की कीमत बुरी तरह गिर गई।
- महामंदी ने समाजों अंतर्राष्ट्रीय संबंधों और राजनीति तथा लोगों के दिलो-दिमाग पर उसकी जो छाप पड़ी वह जल्दी मिटने वाली नहीं थी।
- औपनिवेशिक भारत कृषि वस्तुओं का निर्यातक और तैयार मालों का आयातक बन चुका था। महामंदी ने भारतीय व्यापार को फौरन प्रभावित किया।
- शहरी निवासियों के मुकाबले किसानों और काश्तकारों को ज्यादा नुकसान हुआ। यद्यपि कृषि उत्पादों की कीमत तेजी से नीचे गिरीं लेकिन सरकार ने लगान वसूली में छूट देने से साफ इनकार कर दिया।
- पूरे देश में काश्तकार पहले से भी ज्यादा कर्जे में डूब गए। खर्चे पूरे करने के चक्कर में उनकी बचत खत्म हो चुकी थीं, जमीन सूदखोरों के पास गिरवीं पड़ी थी, घर में जो गहने–जेवर थे बिक चुके थे। भारत कीमती धातुओं खासतौर से सोने का निर्यात करने लगा।
- प्रसिद्ध अर्थशास्त्री कीन्स का मानना था कि भारतीय सोने के निर्यात से भी वैश्विक अर्थव्यवस्था को पुनर्जीवित करने में काफी मदद मिली।
- पहला विश्वयुद्ध खत्म होने के केवल दो दशक बाद दूसरा विश्वयुद्ध शुरू हो गया। इस युद्ध में मौत और तबाही की कोई हद बाकी नहीं बची थी।
- यह युद्ध दो बड़े खेमों के बीच था। एक गुट में धुरी शक्तियाँ (मुख्य रूप से नात्सी जर्मनी, जापान और इटली) थीं तो दूसरा खेमा मित्र राष्ट्रों (ब्रिटेन, सोवियत संघ, फ्रांस और अमेरिका) के नाम से जाना जाता था।
- इस युद्ध ने बेहिसाब आर्थिक और सामाजिक तबाही को जन्म दिया।
- युद्धोत्तर काल में पुनर्निर्माण का काम दो बड़े प्रभावों के साये में आगे बढ़ा। पश्चिमी विश्व में अमेरिका आर्थिक, राजनीतिक और सैनिक दृष्टि से एक वर्चस्वशाली ताकत बन चुका था। दूसरी ओर सोवियत संघ भी एक वर्चस्वशाली शक्ति के रूप में सामने आया।
- दो महायुद्धों के बीच मिले आर्थिक अनुभवों से अर्थशास्त्रियों और राजनीतिज्ञों ने दो अहम् सबक निकाले–
  - **(i)** बृहत उत्पादन पर आधारित किसी औद्योगिक समाज को व्यापक उपभोग के बिना कायम नहीं रखा जा सकता।
  - **(ii)** दूसरा सबक बाहरी दुनिया के साथ आर्थिक संबंधों में था।
- युद्धोत्तर अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था का मुख्य उद्देश्य यह था कि औद्योगिक विश्व में आर्थिक स्थिरता एवं पूर्ण रोजगार बनाए रखा जाए।
- ब्रेटन वुड्स सम्मेलन में निम्न पर सहमति बनी–
  - **(i)** सदस्य देशों के विदेश व्यापार में लाभ और घाटे से निपटने के लिए ब्रेटन वुड्स सम्मेलन में ही अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आई. एम. एफ.) की स्थापना की गई।
  - **(ii)** युद्धोत्तर पुनर्निर्माण के लिए पैसे का इंतजाम करने के वास्ते अंतर्राष्ट्रीय पुनर्निर्माण एवं विकास बैंक (जिसे आम बोल चाल में विश्व बैंक कहा जाता है) का गठन किया गया।
- ब्रेटन वुड्स व्यवस्था ने पश्चिमी औद्योगिक राष्ट्रों और जापान के लिए व्यापार तथा आय में वृद्धि के एक अप्रतिम युग का सूत्रपात किया।
- दूसरा विश्वयुद्ध खत्म होने के बाद भी दुनिया का एक बहुत बड़ा भाग यूरोपीय औपनिवेशिक शासन के अधीन था। दो दशकों में एशिया और अफ्रीका के ज्यादातर उपनिवेश स्वतंत्र, स्वाधीन राष्ट्र बन चुके थे।
- आई. एम. एफ. और विश्व बैंक का गठन तो औद्योगिक देशों की जरूरतों को पूरा करने के लिए किया गया था।
- ज्यादातर विकासशील देशों को पचास और साठ के दशक में पश्चिमी अर्थव्यवस्थाओं की तेज प्रगति से कोई लाभ नहीं हुआ। इस समस्या को देखते हुए उन्होंने एक नयी अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक प्रणाली के लिए आवाज़ उठाई और समूह 77 (जी-77) के रूप में संगठित हो गए।

एन. आई. ई. ओ. से उनका आशय एक ऐसी व्यवस्था से था जिसमें उन्हें अपने संसाधनों पर सही मायने में नियंत्रण मिल सके जिसमें उन्हें विकास के लिए अधिक सहायता मिले, कच्चे माल के सही दाम मिलें और अपने तैयार मालों को विकसित देशों के बाजारों में बेचने के लिए उचित पहुँच मिले।

- सत्तर के दशक के मध्य से बेरोजगारी बढ़ने लगी। नब्बे के दशक के प्रारंभिक वर्षों तक वहाँ काफी बेरोजगारी रही।
- सत्तर के दशक के आखिर सालों में बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ भी एशिया के देशों में उत्पादन केन्द्रित करने लगीं जहाँ वेतन कम थे।
- विश्व बाजारों पर अपना प्रभुत्व कायम करने के लिए प्रतिस्पर्धा कर रहीं विदेशी बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने चीन में जमकर निवेश किया क्योंकि वहाँ तुलनात्मक रूप से वेतन कम थे।
- उद्योगों को कम वेतन वाले देशों में ले जाने से वैश्विक व्यापार और पूँजी प्रवाहों पर भी असर पड़ा।

इनके बारे में जाने (Know the Terms)

- **औद्योगिक युद्ध (Industrial War) :** आर्थिक गतिविधियाँ जो कच्चे माल से फैक्ट्रियों में बनाई जाने वाली वस्तुओं से संबंधित होती हैं, जैसे-मशीनगनों का उपयोग, टैंक हवाई जहाज, रासायनिक हथियार आदि।
- **हेनरी फोर्ड (Henry Ford) :** कार निर्माता हेनरी फोर्ड बृहत उत्पादन के विख्यात प्रणेता थे।
- **हायर-परचेज (Hire-Purchase) :** एक ऐसी व्यवस्था जिसमें खरीददार वस्तुएँ कर्जे पर खरीदते थे और उनकी कीमत साप्ताहिक या मासिक किस्तों में चुकाई जाती थीं।
- **महामंदी (The Great Depression) :** आर्थिक महामंदी की शुरुआत 1929 से हुई और यह संकट 30 के दशक के मध्य तक चलता रहा। इस दौरान दुनिया के ज्यादातर हिस्सों के उत्पादन, रोजगार, आय और व्यापार में भयानक गिरावट आई।
- **बैंक उधार (Bank Loan) :** बैंक द्वारा किसी ग्राहक को निश्चित ब्याज पर दिया जाने वाला धन बैंक लोन होता है, जिसके लिए एक निश्चित समय के लिए लोन की सुरक्षा के लिए कुछ गिरवीं भी रखता है।
- **सहयोगी (मित्र राष्ट्र) (Allies) :** प्रथम युद्ध से पहले ब्रिटेन, फ्रांस और रूस मित्र राष्ट्र थे जो प्रथम विश्वयुद्ध में एक साथ लड़े बाद में अमेरिका भी इनके साथ हो गया।
- **केन्द्रीय शक्तियाँ (Central Powers) :** केन्द्रीय शक्तियाँ यानी जर्मनी, आस्ट्रिया, हंगरी और आटोमन तुर्की थे जो प्रथम विश्वयुद्ध में एक साथ मिलकर लड़े।
- **धुरी शक्तियाँ (Axis Powers) :** द्वितीय विश्वयुद्ध में नात्सी जर्मनी, जापान और इटली को धुरी शक्तियों के रूप में जाना गया।
- **विनिमय दर (Exchange Rates) :** इस व्यवस्था के जरिए अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की सुविधा के लिए विभिन्न देशों की राष्ट्रीय मुद्राओं को एक-दूसरे के साथ जोड़ा जाता है। मोटे तौर पर विनिमय दर दो प्रकार की होती है। स्थिर विनिमय दर और परिवर्तनशील विनिमय दर।
- **स्थिर विनिमय दर (Fixed Exchange Rates) :** जब विनिमय दर स्थिर होती है और उनमें आने वाले उतार-चढ़ावों को नियंत्रित करने के लिए सरकारों को हस्तक्षेप करना पड़ता है तो ऐसी विनिमय दर को स्थिर विनिमय दर कहा जाता है।
- **लचीली या परिवर्तनशील विनिमय दर (Flexible or Floating Exchange Rates) :** इस तरह की विनियम दर विदेशी मुद्रा बाजार में विनिमय मुद्राओं की माँग या आपूर्ति के आधार पर और सिद्धान्ततः सरकारों के हस्तक्षेप के बिना घटती-बढ़ती रहती है।
- **आयात शुल्क (Tariff) :** किसी दूसरे देश से आने वाली चीजों पर वसूल किया जाने वाला शुल्क। यह कर या शुल्क उस जगह लिया जाता है जहाँ से वह चीज देश में आती है, यानी सीमा पर, बंदरगाह या हवाई अड्डे पर।
- **होसे (Hosay) :** इमाम हुसैन के नाम पर दिया गया। त्रिनिदाद में मुहर्रम के अवसर पर मनाया जाने वाला त्यौहार जिसमें विभिन्न धर्मों व नस्लों के मजदूर हिस्सा लेते थे।
- **बागान (Plantation) :** वह स्थान जहाँ नकदी फसलें चाय, कॉफी, कपास, तंबाकू, गन्ना आदि की खेती की जाती है।
- **बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ (MNCs) :** एक साथ बहुत सारे देशों में व्यवसाय करने वाली कंपनियों को बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ कहा जाता है।
- **अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (I. M. F) :** सदस्य देशों के विदेश व्यापार में लाभ और हानि से निपटने के लिए ब्रेटन वुड्स सम्मेलन में ही अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आई. एम. एफ.) की स्थापना की गई।
- **आई. बी. आर. डी. (IBRD) :** युद्धोत्तर पुनर्निर्माण के लिए पैसे का इंतजाम करने के वास्ते अंतर्राष्ट्रीय पुनर्निर्माण एवं विकास बैंक (जिसे आम बोलचाल में विश्व बैंक कहा जाता है) का गठन किया गया।
- **जी-77 (G-77) :** ज्यादातर विकासशील देशों को पचास और साठ के दशक में पश्चिमी अर्थव्यवस्थाओं की तेज प्रगति से को लाभ नहीं हुआ। इस समस्या को देखते हुए उन्होंने एक नई अन्तर्राष्ट्रीय प्रणाली (NIEO) के लिए आवाज उठाई और 77 देश (जी-77) के रूप में संगठित हो गए।

महत्वपूर्ण तिथियाँ (Know the Dates)

- **1914-1918 –** प्रथम विश्वयुद्ध लड़ा गया।
- **1921 –** अनुबंधित श्रमिक व्यवस्था को समाप्त कर दिया गया।
- **1923 –** अमेरिका शेष विश्व को पूँजी का निर्यात दोबारा करने लगा और वह दुनिया में सबसे बड़ा कर्जदाता देश बन गया।
- **1929-1935 –** महामंदी का दौर
- **1939-1945 –** द्वितीय विश्वयुद्ध लड़ा गया।
- **जुलाई, 1944 –** अमेरिका स्थित न्यू हैम्पशर के ब्रेटन वुड्स नामक स्थान पर संयुक्त राष्ट्र मौद्रिक एवं वित्तीय सम्मेलन में सहमति बनी।
- **1947 –**विश्व बैंक और आई. एम. एफ. ने औपचारिक रूप से काम करना शुरू किया।
- **1949 –** चीन क्रांति के बाद विश्व अर्थव्यवस्था से अलग–थलग ही था।
- **1970 का अंतिम दशक –** बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने एशियाई देशों में अपना उत्पादन शुरू कर दिया जहाँ श्रम सस्ता था।

❑❑

अध्याय – 4 औद्योगीकरण का युग

प्रकरण-1
ब्रिटेन में औद्योगीकरण
(Indusrialization in Britain)

त्वरित समीक्षा (Revision Notes) :

- ई.टी. पॉल म्यूजिक कंपनी ने सन् 1900 में संगीत की एक किताब प्रकाशित की थी जिसकी जिल्द पर दी गई तस्वीर में "नयी सदी के उदय" (डॉन ऑफ द सेंचुरी) का ऐलान किया था। तस्वीर के मध्य में एक देवी जैसी तस्वीर है। यह देवी हाथ में नयी शताब्दी की ध्वजा लिए प्रगति का फरिश्ता दिखाई देती है। उसका एक पाँव पंखों वाले पहिए पर टिका हुआ है। यह पहिया समय का प्रतीक है। उसकी उड़ान भविष्य की ओर है। उसके पीछे उन्नति के चिह्न तैर रहे हैं, रेलवे, कैमरा, मशीनें, प्रिंटिंग प्रेस और कारखाना।
- औद्योगीकरण का इतिहास विकास की एक कहानी है और आधुनिक युग तकनीकी के विकास का समय है।
- इंग्लैण्ड और यूरोप में फैक्ट्रियों की स्थापना से पहली ही अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार के लिए बड़े पैमाने पर औद्योगिक उत्पादन देने लगा था। यह उत्पादन फैक्ट्रियों में नहीं होता था। बहुत सारे इतिहासकार औद्योगीकरण के इस चरण को आदि औद्योगीकरण का नाम देते हैं।
- आदि औद्योगीकरण व्यवस्था का नियंत्रण सौदागरों और उत्पादनकर्ताओं के हाथ में होता था। बहुत सारे उत्पादनकर्ता फैक्ट्रियों में नहीं बल्कि अपने परिवार के सदस्यों के साथ मिलकर अपने घरों व खेतों पर काम करते थे।
- औद्योगिक क्रांति के बाद नई मशीनों और भाप की शक्तियों ने जानवरों और सामान्य शक्तियों का स्थान उत्पादन करने के लिए ले लिया। औद्योगिक क्रांति से लघु उद्योगों का स्थान फैक्ट्रियों ने ले लिया।
- सबसे पहले 1730 के दशक में इंग्लैण्ड में कारखाने खुले।
- रिचर्ड आर्कराइट ने सूती कपड़ा मिल की रूपरेखा सामने रखी। ब्रिटेन में सूती कपड़ा मिल और धातुओं के कारखानों की संख्या बढ़ती जा रही थी।
- तेजी से बढ़ता हुआ कपास उद्योग 1840 के दशक तक औद्योगीकरण के पहले चरण में सबसे बड़ा उद्योग बन चुका था।
- उद्योगों में काम करने वाले श्रमिकों को फैक्ट्री श्रमिकों के रूप में जाना जाता था।
- उन्नीसवीं सदी के मध्य तक औसत मजदूर मशीनों पर काम करने वाला नहीं बल्कि परंपरागत कारीगर और मजदूर ही होता था।
- कपड़ा उद्योग एक गतिशील उद्योग था लेकिन उसके उत्पादन का बड़ा हिस्सा कारखानों में नहीं बल्कि घरेलू इकाइयों में होता था।
- मशीन उद्योगों के युग से पहले अंतर्राष्ट्रीय कपड़ा बाज़ार में भारत के रेशमी और सूती कपड़ों का ही दबदबा रहता था।

- **औद्योगीकरण—**
  - **(i)** औद्योगीकरण के प्रथम चरण में सूती वस्त्र उद्योग सबसे प्रमुख उद्योग था।
  - **(ii)** कपड़ा उद्योग।
  - **(iii)** परंपरागत उद्योग पूरी तरह ठहराव की स्थिति में भी नहीं थे। खाद्य प्रसंस्करण, निर्माण, पाटरी, काँच के काम, चर्मशोधन, फर्नीचर और औज़ारों के उत्पादन जैसे बहुत सारे गैर-मशीनी क्षेत्रों में जो तरक्की हो रही थी वह मुख्य रूप साधारण और छोट-छोटे आविष्कारों का ही परिणाम थी।
  - **(iv)** प्रौद्योगिकी बदलावों की गति धीमी थी। औद्योगिक भूदृश्य पर ये बदलाव नाटकीय तेजी से नहीं फैले।
- विक्टोरियाई कालीन ब्रिटेन में मानव श्रम की कोई कमी नहीं थी। उद्योगपतियों को श्रमिकों की कमी या वेतन के मद में भारी लागत जैसी कोई परेशानी नहीं थी।
- विक्टोरियाई कालीन ब्रिटेन में उच्च वर्ग के लोग-कुलीन और पूँजीपति वर्ग हाथों से बनी चीज़ों को ही तरजीह देते थे।
- जिन देशों में मजदूरों की कमी होती है, वहाँ उद्योगपति मशीनों का इस्तेमाल करना ज्यादा पसंद करता है ताकि कम से कम मजदूरों का इस्तेमाल करके वे अपना काम चला सकें।
- बाजार में श्रम की बहुतायत से मजदूरों की जिदंगी भी प्रभावित हुई।
- बहुत सारे उद्योगों में मौसमी काम की वजह से कामगारों को बीच-बीच में बहुत समय तक खाली बैठना पड़ता था।
- बेरोजगारी की आशंका के कारण मजदूर नई प्रौद्योगिकी से चिढ़ते थे।
- जब ऊन उद्योग में स्पिनिंग जेनी मशीन का इस्तेमाल शुरू किया गया तो हाथ से ऊन कातने वाली औरतें इस तरह की मशीनों पर हमला करने लगीं।
- मशीन उद्योग के युग से पहले अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार में भारत के रेशमी और सूती उत्पादों का ही दबदबा रहता था।
- निर्यात व्यापार के नेटवर्क में बहुत सारे भारतीय व्यापारी और बैंकर सक्रिय थे।
- 1750 के दशक तक भारतीय सौदागरों के नियंत्रण वाला नेटवर्क टूटने लगा था। यूरोपीय कंपनियों की ताकत बढ़ती जा रही थी। कंपनी ने दो तरह से ताकत प्राप्त की।
  - **(i)** पहले उन्होंने स्थानीय दरबारों से कई तरह की रियायतें हासिल कीं।
  - **(ii)** दूसरे उन्होंने व्यापार पर इजारेदारी अधिकार प्राप्त कर लिए।
- सूरत व हुगली बंदरगाह कमजोर पड़ रहे थे और बम्बई कलकत्ता की स्थिति सुधर रही थी। पुराने बंदरगाहों की जगह नए बंदरगाहों का बढ़ता महत्त्व औपनिवेशिक सत्ता की बढ़ती ताकत का संकेत था।
- निर्यात करने के लिए वस्तुओं की सुचारु आपूर्ति होती रहे इसके लिए ईस्ट इंडिया कंपनी राजनीतिक सत्ता स्थापित करना चाहती थी जिससे उसके व्यापार पर एकाधिकार बना रहे।
- कंपनी ने प्रतिस्पर्धा खत्म करने, लागतों पर अंकुश रखने और कपास व रेशम से बनी चीज़ों की नियमित आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए प्रबंधन और नियंत्रण की नई व्यवस्था लागू कर दी। ईस्ट कंपनी ने दो चरणों में काम किया—
  - **(i)** कंपनी ने बुनकरों पर निगरानी रखने, माल इकट्ठा करने और कपड़ों की गुणवत्ता जाँचने के लिए वेतनभोगी कर्मचारी तैनात कर दिए गए जिन्हें गुमाश्ता कहा जाता था।
  - **(ii)** कंपनी का माल बेचने वाले बुनकरों को अन्य खरीदरों के साथ कारोबार करने पर पाबंदी लगा दी गई। इसके लिए उन्हें पेशगी रकम दी जाती थी। एक बाद काम का ऑर्डर मिलने पर बुनकरों को कच्चा माल खरीदने के लिए कर्जा दिया जाता था। जो कर्जा लेते थे उन्हें अपना बनाया हुआ कपड़ा गुमाश्ता को ही देना पड़ता था।
- जब इंग्लैण्ड में कपास उद्योग विकसित हुआ तो वहाँ के उद्योगपति दूसरे देशों से आने वाले आयात को लेकर परेशान दिखाई देने लगे। उन्होंने सरकार पर दबाव डाला कि वह आयातित कपड़े पर आयात शुल्क वसूल करे।
- मैनचेस्टर के व्यापारियों ने ईस्ट इंडिया कंपनी पर दबाव डाला कि वह ब्रिटिश कपड़ों को भारतीय बाज़ार में बेचे।
- भारत में उसी समय सूती वस्त्र बुनकरों ने दो समस्याओं का सामना किया—
  - **(i)** उनका निर्यात बाज़ार ढह रहा था।
  - **(ii)** स्थानीय बाज़ार मैनचेस्टर के कारण सिकुड़ने लगा था।

- जब अमेरिकी गृहयुद्ध शुरू हुआ और अमेरिका से कपास की आमद बंद हो गई तो ब्रिटेन भारत से कच्चा माल मँगाने लगा।
- भारत से कच्चे कपास के निर्यात में वृद्धि से उसकी कीमत आसमान छूने लगीं। भारतीय बुनकरों को कच्चे माल के लाले पड़ गए। उन्हें मनमानी कीमत पर कच्ची कपास खरीदनी पड़ती थी।

इनके बारे में जानें— (Know the Terms)

- **औद्योगीकरण (Industrialization) :** औद्योगीकरण वह प्रक्रिया है जो अर्थव्यस्था के लिए कृषि के प्राथमिक उत्पादों (कच्चे माल) को वस्तुओं के उत्पादन में बदलती है।
- **आदि-औद्योगीकरण (Proto-Industrialization) :** औद्योगीकरण के प्रारंभ होने से पहले का समय आदि-औद्योगीकरण कहा जाता है।
- **औद्योगीकरण क्रांति (Industrial Revolution) :** औद्योगीकरण क्रांति ने लघु उद्योगों को फैक्ट्रियों में परवर्तित कर दिया।
- **स्पिनिंग जेनी (Spinning Jenny) :** जेम्स हरग्रीब्ज़ द्वारा 1764 में बनाई गई इस मशीन ने कताई की प्रक्रिया तेज कर दी और मजदूरों की माँग घटा दी।
- **गुमाश्ता (Gomasthas) :** गुमाश्ता वेतनभोगी कर्मचारी थे जिन्हें ईस्ट इंडिया कंपनी ने बुनकरों पर निगरानी रखने, आपूर्ति को इकट्ठा करने तथा कपड़ों की गुणवत्ता की जाँच के लिए रखा था।

महत्वपूर्ण तिथियाँ (Know the Dates) :

- **1600 :** ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना।
- **1730 :** इंग्लैण्ड में सबसे पहले कारखाने खुले।
- **1764 :** जेम्स हरग्रीब्ज़ ने स्पिनिंग जैनी का आविष्कार किया।
- **1771 :** रिचर्ड आर्कराइट ने सूती कपड़ा मिल की रूपरेखा सामने रखी।
- **1779 :** ए.डी. क्राम्पटन ने 'म्यूल' का आविष्कार किया। यह स्पिनिंग जैनी सूती कपड़ा मिल का मेल था।
- **1871 :** जेम्सवाट ने स्टीम इंजन को पेटेंट कराया।
- **1871 :** मैथ्यू बूल्टन ने स्टीम इंजन का नया मॉडल तैयार किया।
- **1830-40 दशक :** द्वारकानाथ टैगोर ने बंगाल में संयुक्त उद्यम कंपनियाँ लगाईं।

प्रकरण (TOPIC) –2
भारत में औद्योगीकरण

(Industrialization in India)

त्वरित समीक्षा (Revision Notes)

- बंबई में पहली कपड़ा मिल 1854 में लगी और दो साल बाद उसमें उत्पादन होने लगा।
- उसी समय बंगाल में जूट मिल खुलने लगी। जूट की पहली मिल बंगाल में 1855 में लगी।
- उत्तरी भारत में एल्गिन मिल 1860 के दशक में कानपुर में खुली।
- सालभर बाद अहमदाबाद की कपड़ा मिल भी चालू हो गई।
- अठारहवीं सदी के अन्त से, अंग्रेज़ों ने भारत से चीन के लिए अफीम का निर्यात शुरू कर दिया तथा चीन से चाय खरीद कर इंग्लैण्ड के लिए भेजी जाती थी।
- बंगाल में द्वारकानाथ टैगोर ने चीन के साथ व्यापार में खूब पैसा कमाया और वे उद्योगों में निवेश करने लगे। 1830-40 के दशक में उन्होंने 6 संयुक्त उद्यम कंपनियाँ लगा ली थीं।
- बंबई में डिनशॉ पेटिट और आगे चलकर देश में विशाल औद्योगिक साम्राज्य स्थापित करने वाले जमशेदजी नुसरवानजी टाटा जैसे पारसियों ने आंशिक रूप से चीन को निर्यात करके और आंशिक रूप से इंग्लैण्ड को कच्ची कपास निर्यात करके पैसा कमा लिया था।
- यूरोपीय व्यापारियों-उद्योगपतियों के अपने वाणिज्यिक परिसंघ थे जिनमें भारतीय व्यवसायियों को शामिल नहीं किया जाता था।

- फैक्ट्रियों के विस्तार से मजदूरों की माँग बढ़ने लगी। जिन किसानों-कारीगरों को गाँव में काम नहीं मिलता था वे काम के लिए औद्योगिक केन्द्रों की तरफ जाने लगे थे।
- नौकरी पाना हमेशा मुश्किल था। उद्योगपति नए मजदूरों की भर्ती के लिए प्राय: एक जॉबर रखते थे।
- जॉबर कोई पुराना और विश्वस्त कर्मचारी होता था। वह अपने गाँव से लोगों को लाता था, उन्हें काम का भरोसा देता था, उन्हें शहर में जमने के लिए मदद देता था और मुसीबत में पैसे से मदद करता था।
- इस प्रकार जॉबर एक ताकतवर और मजबूत व्यक्ति बन गया था।
- औद्योगिक उत्पादन पर वर्चस्व रखने वाली यूरोपीय प्रबंधकीय एजेंसियों की कुछ खास तरह के उत्पादों में ही दिलचस्पी थी। उन्होंने औपनिवेशिक सरकार से सस्ती कीमत पर जमीन लेकर चाय व कॉफी के बागान लगाए और खनन, नील व जूट व्यवसाय में निवेश किया।
- स्वदेशी आंदोलन को गति मिलने से राष्ट्रवादियों ने लोगों को विदेशी कपड़े के बहिष्कार के लिए प्रेरित किया।
- औद्योगिक समूह अपने सामूहिक हितों की रक्षा के लिए संगठित हो गए और उन्होंने आयात शुल्क बढ़ाने तथा अन्य रियायतें देने के लिए सरकार पर दबाव डाला।
- प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान ब्रिटिश कारखाने सेना की जरूरतों को पूरा करने के लिए युद्ध संबंधी उत्पादन में व्यस्त थे इसलिए भारत में मैनचेस्टर के माल का आयात कम हो गया। भारतीय बाज़ारों को रातों-रात एक विशाल देशी बाज़ार मिल गया।
- युद्ध लंबा खिंचा तो भारतीय कारखानों में भी फौज के लिए जूट की बोरियाँ, फौजियों के लिए वर्दी के कपड़े, टेंट और चमड़े के जूते, घोड़े व खच्चर की जीन तथा बहुत सारे अन्य सामान बनने लगे।
- आधुनिकीकरण न कर पाने और अमेरिका, जर्मनी व जापान के मुकाबले कमजोर पड़ जाने के कारण ब्रिटेन की अर्थव्यवस्था चरमरा गई।
- जब बंगाल और बंबई में बड़े उद्योग स्थापित हो गए, तो देश के शेष हिस्से में लघु उद्योग पनपने लगे।
- बीसवीं सदी के दूसरे दशक तक आते-आते ऐसे बुनकर थे जो फ्लाई शटल वाले करघों का इस्तेमाल करने लगे थे। इससे कामगारों की उत्पादन क्षमता बढ़ी, उत्पादन तेज हुआ और श्रम की माँग में कमी आई।
- जब मैनचेस्टर के उद्योगपतियों ने भारत में कपड़ा बेचना शुरू किया तो वे कपड़े के बंडलों पर लेबल लगाते थे जिस पर मोटे अक्षरों में "मेड इन मैनचेस्टर" लिखा होता था।

इनके बारे मे जानें— (Know the Terms)

- **फुलर (Fuller) :** ऐसा व्यक्ति जो फुल करता है यानि चुन्नटों के सहारे कपड़े को समेटता है।
- **स्टेपलर (Stapler) :** ऐसा व्यक्ति जो रेशों के हिसाब से ऊन को स्टेपल करता है या छाँटता है।
- **सिपाही (Sepoy) :** एक भारतीय सैनिक जो ब्रिटिश सरकार की नौकरी करता था।
- **रंगसाज (Dyer) :** ऐसा व्यक्ति जो कपड़ों की रंगाई करता है।
- **जॉबर (Jobber) :** जॉबर ऐसा कर्मचारी होता था जिससे उद्योगपति मिलों में नए मजदूरों की भर्ती का काम कराते थे।
- **कार्डिंग (Carding) :** वह प्रक्रिया जिसमें कपास या ऊन आदि के रेशों को कताई के लिए तैयार किया जाता था।
- **गिल्ड् (Guild) :** गिल्ड्स उत्पादकों के संगठन होते थे। ये उत्पादकों पर नियंत्रण रखते थे, प्रतिस्पर्धा और मूल्य तय करते थे तथा व्यवसाय में नए लोगों को आने से रोकते थे।
- **महानगर (Metropolis) :** किसी देश या राज्य का अधिक जनसंख्या वाला शहर, किसी क्षेत्र की राजधानी भी हो सकता है।
- **खानाबदोश (Vagrant) :** ऐसा व्यक्ति जिसके पास घर और नौकरी नहीं है मुख्य रूप से जो बेघर है।
- **फ्लाई शटल (Fly Shuttle) :** यह रस्सियों और पुलियों के जरिए चलने वाला एक यांत्रिक औज़ार है जिसका बुनाई के लिए इस्तेमाल किया जाता है। यह क्षैतिज धागे (ताना) को लम्बवत धागे (बाना) में पिरो देती है।

महत्वपूर्ण तिथियाँ (Know the Dates) :

- **1854 :** बम्बई में पहला कॉटन मिल स्थापित हुआ।
- **1855 :** बंगाल में पहला जूट मिल स्थापित हुआ।
- **1856 :** बम्बई के पहले कॉटन मिल में उत्पादन शुरू हुआ।

- **1863 :** लन्दन में भूमिगत रेलवे का चालन प्रारम्भ।
- **1874 :** मद्रास की पहली स्पिनिंग ज़ैनी मशीनों से उत्पादन प्रारंभ हुआ।
- **1900 :** ई. टी. पॉल म्यूजिक कंपनी ने संगीत की एक किताब प्रकाशित की थी।
- **1912 :** जे. एन. टाटा ने जमशेदपुर में भारत का पहला लौह एवं इस्पात संयंत्र स्थापित किया।
- **1917 :** मारवाड़ी व्यापारी सेठ हुकमचन्द ने कलकत्ता में पहली जूट मिल स्थापित की।

❑❑

अध्याय – 5 मुद्रण संस्कृति और आधुनिक दुनिया

प्रकरण (TOPIC)-1
मुद्रण संस्कृति और आधुनिक विश्व
(Print Culture and Modern World)

त्वरित समीक्षा (Revision Notes)

- मुद्रण की सबसे पहली तकनीक, चीन, जापान और कोरिया में विकसित हुई। यह छपाई हाथ से होती थी।
- 594 ई. से चीन में स्याही लगे काठ के ब्लॉक या तख्ती पर कागज को रगड़कर किताबें छापी जाने लगी थीं।
- एक लंबे अरसे तक मुद्रित सामग्री का सबसे बड़ा उत्पादक चीनी राजतंत्र था।
- किताबों का सुलेखन या खुशनवीसी करने वाले लोग दक्ष सुलेखक या खुशखत होते थे, जो हाथ से बड़े सुन्दर-सुडौल अक्षरों में सही-सही कलात्मक लिखाई करते थे।
- शंघाई नई मुद्रण संस्कृति का एक प्रमुख केन्द्र था।
- जापान की सबसे पुरानी, 868 ई. में छपी पुस्तक 'डायमंड सूत्र' है।
- मध्यकालीन जापान में कवि भी छपते थे और गद्यकार भी और किताबें सस्ती और सुलभ थीं।
- अठारहवीं सदी के अंत में एदो (बाद में जिसे तोक्यो के नाम से जाना गया) के शहरी इलाकों की चित्रकारी में शालीन शहरी संस्कृति का पता मिलता है।
- सदियों तक चीन से रेशम और मसाले रेशम मार्ग से यूरोप आते रहे थे।
- ग्यारहवीं सदी में चीनी कागज भी रेशम मार्ग से यूरोप पहुँचा।
- 1430 के दशक में स्ट्रैसबर्ग के योहान गुटेन्बर्ग ने पहली प्रिंटिंग प्रेस बनाई।
- गुटेन्बर्ग द्वारा छापी गई पहली पुस्तक बाइबिल थी।
- 180 प्रतियाँ छापने में लगभग तीन वर्ष का समय गुटेन्बर्ग को लगा।
- शुरू-शुरू में छपी किताबें भी अपने रंग-रूप और साज-सज्जा में हस्तलिखित पांडुलिपियों जैसी दिखती थीं।
- अमीरों के लिए बनाई किताबों में छपे पन्ने पर हाशिए की जगह बेल-बूटों के लिए जगह खाली छोड़ दी जाती थी।
- मुद्रण-क्रांति ने लोगों की जिंदगी बदल दी।
- 1517 में धर्म-सुधारक मार्टिन लूथर ने रोमन कैथोलिक चर्च की कुरीतियों की आलोचना करते हुए अपनी पिच्चआनवे (95) स्थापनाएँ लिखीं।
- छापेखाने से विचारों के व्यापक प्रचार-प्रसार और बहस-मुबाहिसे के द्वार खुले।
- रोमन चर्च ने प्रकाशकों और पुस्तक-विक्रेताओं पर कई तरह की पाबंदियाँ लगाईं और 1558 से प्रतिबंधित किताबों की सूची रखने लगे।
- इंग्लैण्ड में पेनी चैपबुक्स या एकपैसिया किताबें बेचने वालों को चैपमैन कहा जाता था।
- फ्रांस में बिब्लियोथीक ब्ल्यू का चलन था, जो सस्ते कागज पर छपी और नीली जिल्द में बँधी किताबें हुआ करती थीं।
- अखबार और पत्रों में युद्ध और व्यापार से जुड़ी जानकारी के अलावा दूर देशों की खबर होती थी।

- जब आइजैक न्यूटन जैसे वैज्ञानिकों ने अपने आविष्कार प्रकाशित करने शुरू किए तो उनके लिए विज्ञान बोध में पगा एक बड़ा पाठक वर्ग तैयार हो चुका था।
- टॉमस पेन, बॉल्तेयर और ज्याँ जॉक रूसो जैसे वैज्ञानिकों की किताबें भी भारी मात्रा में पढ़ी जाने लगीं।
- मुद्रण संस्कृति ने फ्रांसीसी क्रांति के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ रचीं।
- उन्नीसवीं सदी के आखिर से प्राथमिक शिक्षा के अनिवार्य होने के चलते बच्चे, पाठकों की एक अलग श्रेणी बन गए।
- फ्रांस में 1857 में सिर्फ बाल-पुस्तकें छापने के लिए एक प्रेस या मुद्रणालय स्थापित किया गया।
- पेनी मैगजींस या एकपैसिया पत्रिकाएँ विशेष रूप से महिलाओं के लिए छपने लगीं।
- मशहूर उपन्यासकारों में लेखिकाएँ अग्रणी थीं : जेन आस्टिन, ब्राण्ट बहनें, जॉर्ज इलियट आदि थीं।
- उन्नीसवीं सदी के इंग्लैंड में ऐसे पुस्तकालयों का उपयोग सफेद कॉलर मजदूरों, दस्तकारों और निम्न वर्गीय लोगों को शिक्षित करने के लिए किया गया।
- मजदूरों को अपने सुधार और आत्म-अभिव्यक्ति के लिए थोड़ा वक्त मिलने लगा। उन्होंने बड़ी संख्या में राजनीतिक पर्चे और आत्मकथाएँ लिखीं।
- अठारहवीं सदी के अंत तक प्रेस धातु से बनने लगे थे।
- उन्नीसवीं सदी के मध्य तक न्यूयार्क के रिचर्ड एम.हो.ने शक्ति चालित बेलनाकार प्रेस को कारगर बना लिया था। इससे प्रति घंटे 8000 शीट या ताव छप सकते थे। इस प्रेस का उपयोग समाचार पत्रों के छापने में किया जाने लगा।
- उन्नीसवीं सदी के अंत तक ऑफसेट प्रेस आ गया था, जिससे एक साथ छः रंग की छपाई मुमकिन थी।
- 1930 की आर्थिक मंदी आने से प्रकाशकों को किताबों की बिक्री गिरने का भय बिरने हुआ।
- मुद्रकों और प्रकाशकों ने अपने उत्पाद बेचने के लिए नए गुर अपनाए। 1920 के दशक में लोकप्रिय किताबें एक सस्ती शृंखला शिलिंग शृंखला के तहत छापी गईं।

इनके बारे में जानें— (Know the Terms)

- **खुशनवीसी या सुलेखन (Calligraphy) :** सुंदर और सुडौल लेखन की कला।
- **डायमंड सूत्र (Diamond Sutra) :** जापान की सबसे पुरानी 868 ई. में छपी पुस्तक।
- **कम्पोजीटर (Compositor) :** छपाई के लिए इबारत कम्पोज करने वाला व्यक्ति।
- **निरंकुश शासन (Despotism) :** राजकाज की ऐसी व्यवस्था, जिसमें किसी एक व्यक्ति को संपूर्ण शक्ति प्राप्त हो, और उस पर न कानूनी पाबंदी लगी हो, न ही संवैधानिक।
- **पंचांग (Almanac) :** चांद, सूरज, ज्वार भाटा के समय और लोगों के दैनिक जीवन से जुड़ी कई अहम जानकारियाँ देता वार्षिक प्रकाशन।
- **संप्रदाय (Denominations) :** किसी धर्म का एक उप-समूह।
- **गद्य-पद्य का संग्रह (Anthology) :** कहानी व पद्यों का संग्रह, जो विभिन्न लोगों द्वारा लिखा गया तथा जिसे एक किताब में छापा गया।
- **गैली (Galley) :** धातुई फ्रेम, जिसमें टाइप बिछाकर इबारत बनाई जाती थी।
- **चैप बुक्स (गुटका) (Chapbooks) :** पाकेट बुक के किताबों के आकार के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द। इन्हें आमतौर पर फेरीवाले बेचते थे। ये सोलहवीं सदी की क्रांति के समय से लोकप्रिय हुए।
- **शराबघर (Taverns) :** वह जगह जहाँ लोग शराब पीने, खाने दोस्तों से मिलने और बात-विचार के लिए जाते थे।
- **प्रोटेस्टेंट धर्मसुधार (Protestant Reformation) :** सोलहवीं सदी यूरोप में रोमन कैथलिक चर्च में सुधार का आंदोलन।
- **क्रांति (Revolution) :** आधारभूत में बदलाव का कारण।
- **उलमा (Ulama) :** इस्लामी कानून और शरिया के विद्वान।
- **वेलम (Vellum) :** चर्म-पत्र या जानवरों के चमड़े से बनी लेखन की सतह।
- **न्यू टेस्टामेंट (New Testament) :** बाइबिल का द्वितीय भाग जिसमें जीसस क्राइस्ट के जीवन और उसकी शिक्षाओं का वर्णन किया गया।

- **लिखना (Scribes) :** हाथ से सुन्दर लिखने की कुशलता।
- **प्लाटेन (Platen) :** लेटरप्रेस छपाई में प्लाटेन एक बोर्ड होता है, जिसे कागज के पीछे दबाकर टाइप की छाप ली जाती थी। पहले ये बोर्ड काठ का होता था, बाद में इस्पात का बनने लगा।
- **पार्चमेंट (Parchment) :** लिखने के वास्ते भेड़ या बकरी की खाल से तैयार किया गया कागज।

महत्वपूर्ण तिथियाँ (Know the Dates) :

- **594 ई. :** चीन में स्याही लगे काठ के ब्लॉक या तख्ती पर कागज को रगड़कर किताबें छपने लगी थीं।
- **768-770 ई. :** चीनी बौद्ध प्रचारक छपाई की तकनीक लेकर जापान आए।
- **868 ई. :** प्रथम जापानी पुस्तक डायमंड सूत्र छापी गई।
- **11वीं सदी :** चीनी कागज रेशम मार्ग से यूरोप पहुँचा।
- **1295 ई. :** मार्को पोलो नामक महान खोजी यात्री चीन काफी साल तक खोज करने के बाद वापस इटली लौटा।
- **1448 ई. :** योहान गुटेन्बर्ग ने छपाई मशीन का आविष्कार किया।
- **1450-1550 ई. :** साल के दरम्यान ज्यादातर यूरोपीय देशों में छापेखाने लग गए थे।
- **1517 ई. :** धर्म सुधारक मार्टिन लूथर ने रोमन कैथलिक चर्च की कुरीतियों की आलोचना करते हुए अपनी पिच्चानवे स्थापनाएँ लिखीं। प्रोटेस्टेंट धर्म सुधार की शुरुआत हुई।
- **1558 ई. :** रोमन चर्च ने प्रकाशकों और पुस्तक विक्रेताओं पर कई तरह की पाबंदियाँ लगाईं और प्रतिबंधित किताबों की सूची रखने लगे।

प्रकरण (TOPIC)–2
उन्नीसवीं सदी में भारत में छपाई मशीन का विकास
(Development of Printing Machiere in India in 19th Century)

त्वरित समीक्षा (Revision Notes) :

- भारत में संस्कृत, अरबी, फारसी और विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में हस्तलिखित पांडुलिपियों की पुरानी और समृद्ध परंपरा थी।
- भारत में पांडुलिपियाँ ताड़ के पत्तों या हाथ से बने कागज पर नकल कर बनाई जाती थीं।
- 1710 ई. में डच प्रोटेस्टेंट धर्म-प्रचारकों ने 32 तमिल किताबें छापीं, जिनमें से कई पुरानी किताबों का अनुवाद थीं।
- जेम्स ऑगस्टस हिक्की ने 1780 से 'बंगाल गजट' नामक एक साप्ताहिक पत्रिका का संपादन शुरू किया।
- अठारहवीं सदी के अंत तक कई सारी पत्र-पत्रिकाएँ छपने लगीं।
- उन्नीसवीं सदी की शुरुआत से ही धार्मिक मसलों को लेकर बहस का बाजार गर्म था।
- कुछ तो मौजूदी रीति-रिवाजों की आलोचना करते हुए उनमें सुधार चाहते थे, जबकि कुछ अन्य समाज-सुधारकों के तर्कों के खिलाफ खड़े थे।
- यह समय सामाजिक और धार्मिक सुधारों के बीच आपसी विवाद का था।
- यह वह समय था जब समाज और धर्म-सुधारकों तथा हिंदू रूढ़िवादियों के बीच विधवा-दाह, एकेश्वरवाद, ब्राह्मण पुजारीवर्ग और मूर्ति-पूजा जैसे मुद्दों को लेकर तेज बहस ठनी हुई थी।
- राजा राममोहन राय ने 1821 में संवाद कौमुदी प्रकाशित किया, और रूढ़िवादियों ने उनके विचारों से टक्कर लेने के लिए समाचार चंद्रिका का सहारा लिया। दो फारसी अखबार-जाम-ए-जहाँ नामा और शम्सुल अखबार भी 1882 में प्रकाशित हुए।
- सन् 1867 में स्थापित देवबंद सेमिनरी ने मुसलमान पाठकों को रोजमर्रा का जीवन जीने का सलीका और इस्लामी सिद्धान्तों के मायने समझाते हुए हजारों फतवे जारी किए।
- हिंदुओं के बीच भी छपाई से खासतौर पर स्थानीय भाषाओं में धार्मिक पढ़ाई को काफी बल मिला।

- तुलसीदास की सोलहवीं सदी की किताब रामचरितमानस का पहला मुद्रित संस्करण 1810 में कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।
- लखनऊ के नवल किशोर प्रेस और बंबई के श्री वेंकटेश्वर प्रेस में अनेक भारतीय भाषाओं में अनगिनत धार्मिक किताबें छपीं।
- 19वीं सदी के अंत में एक नयी तरह की दृश्य-संस्कृति भी आकार ले रही थी।
- राजा रवि वर्मा जैसे चित्रकारों ने आम खपत के लिए तस्वीरें बनाईं।
- बाजार में सुलभ सस्ती तस्वीरें और कैलेंडर खरीदकर गरीब भी अपने घरों और दफ्तरों में सजाया करते थे।
- 1870 के दशक तक पत्र-पत्रिकाओं में सामाजिक-राजनीतिक विषयों पर टिप्पणी करते हुए कैरिकेचर और कार्टून छपने लगे थे।
- कैलाशवाशिनी देवी जैसी महिलाओं ने 1860 के दशक में महिलाओं के अनुभवों पर लिखना शुरू किया कैसे वे घरों से बंदी और अनपढ़ बनाकर रखी जाती हैं, कैसे वे घर भर के काम का बोझ उठाती हैं, और जिनकी सेवा वे करती हैं, वही उन्हें कैसे दुत्कारते हैं।
- हिन्दी की छपाई 1870 के दशक से प्रारंभ हुई।
- पंजाब में भी बीसवीं सदी के आरंभ से ही लोकप्रिय लोक साहित्य बड़े पैमाने पर छापा गया।
- बंगाल में केंद्रीय कलकत्ता का एक पूरा इलाका-बटाला लोकप्रिय किताबों के प्रकाशन को समर्पित हो गया। यहाँ पर धार्मिक गुटकों और ग्रंथों के सस्ते संस्करण खरीद सकते थे। फेरी वाले बटाला के प्रकाशन लेकर घर-घर घूमते थे, जिससे महिलाओं को किताबें पढ़ने में सुविधा हो गई।
- बीसवीं सदी के आरंभ से सार्वजनिक पुस्तकालय खुलने लगे थे, जिससे किताबों की पहुँच निस्संदेह बढ़ी।
- स्थानीय विरोधी आंदोलनों से लोकप्रिय समाचार पत्रों की संख्या बढ़ने की स्थितियाँ पैदा हुईं।
- 1857 के विद्रोह के बाद प्रेस की स्वतंत्रता के प्रति रवैया बदल गया।
- 1878 में वर्नाक्युलर एक्ट पास कर दिया गया।
- जब पंजाब के क्रांतिकारियों को कालापानी भेजा गया तो बाल गंगाधर तिलक ने अपने केसरी में उनके प्रति गहरी हमदर्दी जताई। नतीजे के तौर पर उन्हें 1908 में कैद कर लिया गया, जिसके परिणामस्वरूप भारत-भर में व्यापक विरोध हुए।

इनके बारे में जानें— (Know the Terms)

- **पांडुलिपि (Manuscript) :** हाथ से लिखी गई पुस्तक या अभिलेख। पांडुलिपियाँ ताड़ के पत्तों या हाथ से बने कागज पर नकल कर बनाई जाती थीं। ये हाथ से लिखी होती थीं इनकी छपाई नहीं होती थी।
- **गाथा-गीत (Ballad) :** लोकगीत का ऐतिहासिक आख्यान, जिसे गाया-सुनाया जाता था।
- **आत्मकथा (Autobiography) :** किसी के जीवन की निजी कहानी जो स्वंय द्वारा लिखी गई होती है।
- **धर्म न्यायाधिकरण (Inquisition) :** पूर्व का कैथलिक न्यायालय जो विद्याथियों की पहचान कर उन्हें दण्डित करता था।
- **धर्म विरोधी अथवा पाखंडी (Heretical) :** जो चर्च के उपदेशों में विश्वास नहीं करते थे अथवा उन्हें स्वीकार नहीं करते थे।
- **संतुष्टि (Satiety) :** राज्य जो पूर्णरूप से आखिर तक संतुष्टि प्रदान करता है।
- **फतवा (Fatwa) :** अनिश्चय या असमंजस की स्थिति में, इस्लामी कानून जानने वाले विद्वान, सामान्यत: मुफ्ती के द्वारा की जाने वाली वैधानिक घोषणा।

महत्वपूर्ण तिथियाँ (Know the Dates) :

- **1822 :** दो फारसी अखबार जाम-ए-जहाँ नामा और शम्सुल प्रकाशित हुए।
- **1843 :** न्यूयॉर्क के रिचर्ड एम.हो. ने शक्ति चालित बेलनाकार प्रेस को कारगर बना लिया था।
- **1878 :** भारत में वर्नाक्युलर एक्ट पास किया गया।
- **1880 :** के दशक में ताराबाई शिंदे और पंडिता रमाबाई ने उच्च जातियों की नारियों की दयनीय हालत के बारे में जोश और रोष से लिखा विशेषकर विधवाओं के संबंध में।

❑❑

इकाई – II : समकालीन भारत-2

अध्याय – 1 संसाधन एवं विकास

प्रकरण (TOPIC)-1
संसाधन-प्राकृतिक और मानवीय
(Resource Natural and Artificial)

त्वरित समीक्षा (Revision Notes)

- हमारे पर्यावरण में उपलब्ध प्रत्येक वस्तु जो हमारी आवश्यकताओं को पूरा करने में प्रयुक्त की जा सकती है और जिसको बनाने के लिए प्रौद्योगिकी उपलब्ध है, जो आर्थिक रूप से संभाव्य और सांस्कृतिक रूप से मान्य है, एक "संसाधन" है।
- संसाधनों का निम्न रूप से वर्गीकरण किया जा सकता है–

  (a) उत्पत्ति के आधार पर–

  (i) जैव (ii) अजैव

  (b) समाप्यता के आधार पर–

  (i) नवीकरण योग्य (ii) अनवीकरण योग्य

  (c) स्वामित्व के आधार पर–

  (i) व्यक्तिगत (ii) सामुदायिक (iii) राष्ट्रीय (iv) अंतर्राष्ट्रीय

  (d) विकास के स्तर के आधार पर–

  (i) संभावी (ii) विकसित (iii) भंडार (iv) संचित कोष
- संसाधन जिस प्रकार, मनुष्य के जीवन यापन के लिए अति आवश्यक है, उसी प्रकार जीवन की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए भी महत्त्वपूर्ण है।
- संसाधनों के अंधाधुंध शोषण से वैश्विक पारिस्थितिकी संकट पैदा हो गया है जैसे भूमंडलीय तापन, ओजोन परत अवक्षय, पर्यावरण प्रदूषण और भूमि निम्नीकरण आदि हैं।
- **संसाधनों का विकास**—संसाधन मनुष्य के जीवन यापन के लिए आवश्यक हैं। ऐसा विश्वास किया जाता था कि संसाधन प्रकृति की देन है। परिणामस्वरूप, मानव ने इनका अंधाधुंध उपयोग किया है, जिससे निम्नलिखित मुख्य समस्याएँ पैदा हो गई हैं–

  (i) संसाधनों का ह्रास।

  (ii) संसाधन समाज के कुछ ही लोगों के हाथ में आ गए।

  (iii) अंधाधुंध शोषण से पारिस्थितिकी संकट पैदा हो गया।
- मानव जीवन की गुणवत्ता और विश्व शांति बनाए रखने के लिए संसाधनों का न्यायसंगत बँटवारा आवश्यक है।
- सतत् पोषणीय आर्थिक विकास का अर्थ है कि विकास पर्यावरण को बिना नुकसान पहुँचाए हो और वर्तमान विकास की प्रक्रिया भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकता की अवहेलना न करें।

  रियो डी जेनेरो पृथ्वी सम्मेलन, 1992—जून, 1992 में 100 से भी अधिक राष्ट्राध्यक्ष ब्राजील के शहर रियो डी जेनेरो में प्रथम अंतर्राष्ट्रीय पृथ्वी सम्मेलन में एकत्रित हुए। सम्मेलन का आयोजन विश्व स्तर पर उभरते पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक आर्थिक विकास की समस्याओं का हल ढूँढने के लिए किया गया था। इस सम्मेलन में एकत्रित नेताओं ने भूमंडलीय जलवायु परिवर्तन और जैविक विविधता पर एक घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर किए। रियो सम्मेलन में भूमंडलीय वन सिद्धांतों पर सहमति जताई और 21वीं शताब्दी में सतत् पोषणीय विकास के लिए एजेंडा 21 को स्वीकृति प्रदान की।

  एजेंडा-21—यह एक घोषणा है जिसे 1992 में ब्राजील के शहर रियो डी जेनेरो में संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण और विकास सम्मेलन (UNCED) के तत्वाधान में राष्ट्राध्यक्षों द्वारा स्वीकृत किया गया था। इसका उद्देश्य भूमंडलीय सतत् पोषणीय विकास हासिल करना है। यह एक कार्यसूची है

जिसका उद्देश्य समान हितों, पारस्परिक आवश्यकताओं एवं सम्मिलित जिम्मेदारियों के अनुसार विश्व सहयोग के द्वारा पर्यावरणीय क्षति, गरीबी और रोगों से निपटना है। एजेंडा-21 का मुख्य उद्देश्य यह है कि प्रत्येक स्थानीय निकाय अपना स्थानीय एजेंडा-21 तैयार करे।

- **भारत में संसाधन नियोजन—**संसाधन नियोजन में निम्नलिखित सोपान हैं—
  - **(i)** देश के विभिन्न प्रदेशों में संसाधनों की पहचान कर उनकी सूची तैयार करना। इस कार्य में क्षेत्रीय सर्वेक्षण, मानचित्र बनाना और संसाधनों का गुणात्मक एवं मात्रात्मक अनुमान लगाना व मापन करना।
  - **(ii)** संसाधन विकास योजनाएँ लागू करने के लिए उपयुक्त प्रौद्योगिकी कौशल और संस्थागत नियोजन ढाँचा तैयार करना।
  - **(iii)** संसाधन विकास योजनाओं और राष्ट्रीय विकास योजना में समन्वय स्थापित करना।
- भारत में 43% मैदानी क्षेत्र, 30% पर्वतीय क्षेत्र तथा 27% पठारी क्षेत्र है।
- भू-संसाधन का निम्नलिखित के रूप में प्रयोग किया जाता है—
  - **(i)** वन
  - **(ii)** कृषि के लिए अनुपलब्ध भूमि
  - **(a)** बंजर तथा कृषि अयोग्य भूमि
  - **(b)** गैर कृषि प्रयोजनों में लगाई भूमि-इमारतें, सड़क
  - **(iii)** परती भूमि के अतिरिक्त अन्य कृषि अयोग्य भूमि
  - **(a)** स्थायी चरागाहें
  - **(b)** विविध वृक्षों, वृक्ष फसलों तथा उपवनों के अधीन भूमि
  - **(c)** कृषि योग्य बंजर भूमि
  - **(iv)** परती भूमि
  - **(a)** वर्तमान परती
  - **(b)** वर्तमान के अतिरिक्त अन्य परती
  - **(v)** शुद्ध (निवल) बोया गया क्षेत्र।
- भारत का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 32.8 लाख वर्ग किमी. है। परंतु इसके 93 प्रतिशत भाग के ही उपयोग के आँकड़े उपलब्ध हैं।
- वर्तमान समय में भारत में लगभग 13 करोड़ हेक्टेयर भूमि निम्नीकृत है। इसमें से लगभग 28 प्रतिशत भूमि निम्नीकृत वनों के अंतर्गत है, 56 प्रतिशत क्षेत्र अपरदित है और शेष लवणीय और क्षारीय है।
- **भूमि निम्नीकरण के कारण—**
  - **(i)** वनोन्मूलन
  - **(ii)** अति पशुचारण
  - **(iii)** खनन एवं पत्थर निकासी
  - **(iv)** अति की कृषि से भूमि लवणीय व क्षारीय हो जाती है।
  - **(v)** सीमेंट उद्योग से भूमि धूल बढ़ जाती है।
- **भूमि संरक्षण के उपाय—**
  - **(i)** वनारोपण
  - **(ii)** चरागाहों का उचित प्रबंधन।
  - **(iii)** पेड़ों की रक्षक मेखला।
  - **(iv)** रेतीले टीलों को काँटेदार झड़ियाँ लगाकर।
  - **(v)** बंजर भूमि का उचित प्रबंधन।
  - **(vi)** खनन नियंत्रण।
  - **(vii)** औद्योगिक जल को परिष्करण के पश्चात विसर्जित करके।

इन्हें भी जानें (Know the Terms)

- **संसाधन (Resources) :** पर्यावरण में उपलब्ध प्रत्येक वस्तु जो हमारी बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करने में प्रयुक्त की जा सकती है उसे संसाधन कहते हैं।
- **जैविक संसाधन (Biotic Resources) :** इन संसाधनों की प्राप्ति जीवमंडल से होती है और इनमें जीवन व्याप्त है; जैसे—मनुष्य, वनस्पति जगत, प्राणिजात, मत्स्य जीवन, पशुधन आदि।
- **अजैव संसाधन (Abiotic Resources) :** वे सारे संसाधन जो निर्जीव वस्तुओं से बने हैं, अजैव संसाधन कहलाते हैं; जैसे—चट्टानें और धातुएँ।
- **नवीकरण योग्य संसाधन (Renewable Resources) :** वे संसाधन जिन्हें भौतिक, रासायनिक या यांत्रिक प्रक्रियाओं द्वारा नवीकृत या पुन: उत्पन्न किया जा सकता है, उन्हें नवीकरण योग्य अथवा पुन: पूर्ति संसाधन कहा जाता है। जैसे—सौर तथा पवन ऊर्जा, जल, वन व वन्य जीव।
- **अनवीकरण योग्य संसाधन (Non-renewable Resources) :** इन संसाधनों का विकास एक लंबे भू-वैज्ञानिक अंतराल में होता है। खनिज और जीवाश्म ईंधन इसके उदाहरण हैं।
- **प्राकृतिक संसाधन (Natural Resources) :** प्राकृतिक संसाधन हमें भूमि, जल, वन और खनिजों के रूप में प्राप्त हैं।
- **मानवीय संसाधन (Man-Made Resources) :** वे संसाधन जिन्हें मनुष्य द्वारा मशीनों की सहायता से तैयार किया जाता है।
- **व्यक्तिगत संसाधन (Individual Resources) :** वे संसाधन जो निजी स्वामित्व में होते हैं, व्यक्तिगत संसाधन कहलाते हैं। जैसे—किसान की भूमि, बाग, चरागाह आदि निजी संसाधन हैं।
- **सामुदायिक स्वामित्व वाले संसाधन (Community owned Resources) :** ये संसाधन समुदाय के सभी सदस्यों को उपलब्ध होते है। जैसे— गाँव की शामिलात भूमि (चारण भूमि, तालाब, शमशान आदि)।
- **राष्ट्रीय संसाधन (National Resources) :** तकनीकी तौर पर पाए जाने वाले सारे संसाधन राष्ट्रीय है। सारे खनिज पदार्थ, जल संसाधन, वन, वन्यजीव, राजनीतिक सीमाओं की सारी भूमि राष्ट्रीय संसाधन है।
- **अंतर्राष्ट्रीय संसाधन (International Resources) :** वे संसाधन जो किसी भी राष्ट्र के निजी नहीं होते हैं, अंतर्राष्ट्रीय संसाधन कहलाते हैं।
- **संभावी संसाधन (Potential Resources) :** वे संसाधन जो किसी प्रदेश में विद्यमान होते हैं, परंतु इनका उपयोग नहीं किया गया है।
- **विकसित संसाधन (Developed Resources) :** वे संसाधन जिनका सर्वेक्षण किया जा चुका है और उनके उपयोग की गुणवत्ता और मात्रा निर्धारित की जा चुकी है, विकसित संसाधन कहलाते हैं।
- **भंडार (Stock) :** पर्यावरण में उपलब्ध वे पदार्थ जो मानव की आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकते हैं, परंतु उपयुक्त प्रौद्यागिकी के अभाव में उनकी पहुँच से बाहर हैं, भंडार में शामिल हैं।
- **संचित (Reserve) :** यह संसाधन भंडार का ही हिस्सा है, जिन्हें उपलब्ध तकनीकी ज्ञान की सहायता से प्रयोग में लाया जा सकता है, परंतु इनका उपयोग अभी आरंभ नहीं हुआ है।
- **संसाधनों का विकास (Sustainable development) :** संसाधन जिस प्रकार, मनुष्य के जीवनयापन के लिए अति आवश्यक हैं, उसी प्रकार जीवन की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए भी महत्त्वपूर्ण हैं। ऐसा विश्वास किया जाता था कि संसाधन प्रकृति की देन हैं।
- **संसाधन नियोजन (Resource Planning) :** संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग के लिए नियोजन एक सर्वमान्य रणनीति है।
- **संसाधनों का संरक्षण (Resources Conservation) :** संसाधन किसी भी तरह के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। परंतु संसाधनों का विवेकहीन उपयोग और अति उपयोग के कारण कई सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय समस्याएँ पैदा हो सकती हैं।
- **कुल कृषि क्षेत्र (Gross Cropped area) :** एक कृषि वर्ष में एक बार से अधिक बोए गए क्षेत्र को शुद्ध (निवल) बोए गए क्षेत्र में जोड़ दिया जाए तो वह सकल कृषित क्षेत्र कहलाता है।
- **परती भूमि (Fallow Land) :** जहाँ एक कृषि वर्ष या उससे कम समय से खेती न की गई हो।
- **बेकार भूमि (Waste Land) :** ऐसी भूमि जो कृषि योग्य नहीं है, उसे बेकार भूमि कहते हैं।
- **कुल बोया क्षेत्र (Net Sown area) :** एक वर्ष में कुल बोया गया क्षेत्र।
- **चरागाह (Pasture) :** घासयुक्त भूमि जो जानवरों को उनका भोजन उपलब्ध कराती है उसे चरागाह भी कहते हैं।

प्रकरण (TOPIC)–2

भूमि एक संसाधन के रूप में (Land As a Resource)

त्वरित समीक्षा (Revision Notes)

- मिट्टी अथवा मृदा सबसे महत्त्वपूर्ण नवीकरण योग्य प्राकृतिक संसाधन है। यह पौधों के विकास का माध्यम है जो पृथ्वी पर विभिन्न प्रकार के जीवों का पोषण करती है।
- मृदा बनने की प्रक्रिया में उच्चावच, जनक शैल अथवा संस्तर शैल, जलवायु, वनस्पति और अन्य जैव पदार्थ और समय मुख्य कारक हैं।
- मृदा जैव (ह्यूमस) और अजैव दोनों प्रकार के पदार्थों से बनती है।
- मृदा बनने की प्रक्रिया को निर्धारित करने वाले तत्वों, उनके रंग, गहराई, गठन, आयु व रासायनिक और भौतिक गुणों के आधार पर भारत की मृदाओं को विभिन्न प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता है।
- भारत में अनेक प्रकार के उच्चावच, भू-आकृतियाँ, जलवायु और वनस्पतियाँ पाई जाती हैं। इस कारण अनेक प्रकार की मृदाएँ विकसित हुई हैं।

(i) जलोढ़ मृदा (Alluvial Soil)—

(a) यह मृदा विस्तृत रूप से फैली हुई है और यह देश की महत्त्वपूर्ण मृदा है। वास्तव में संपूर्ण उत्तरी मैदान जलोढ़ मृदा से बना है।

(b) आयु के आधार पर जलोढ़ मृदाएँ दो प्रकार की हैं—पुराना जलोढ़ (बांगर), और नया जलोढ़ (खादर) है।

(c) अधिकतर जलोढ़ मृदाएँ पोटाश, फास्फोरस और चूनायुक्त होती हैं।

(d) गन्ना, चावल, गेहूँ और अन्य अनाजों और दलहन फसलों के लिए जलोढ़ मृदा उपयुक्त होती है।

(ii) काली मृदा (Black Soil)—

(a) इन्हें "रेगर" मृदाएँ भी कहा जाता है। इन मृदाओं का रंग काला होता है।

(b) काली मृदा कपास की खेती के लिए उचित मानी जाती है।

(c) काली मृदाएँ महाराष्ट्र, सौराष्ट्र, मालवा, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ के पठार पर पाई जाती है।

(d) काली मृदाएँ कैल्शियम कार्बोनेट, मैग्नीशियम, पोटाश और चूने जैसे पौष्टिक तत्त्वों से परिपूर्ण होती हैं। परंतु इनमें फास्फोरस की मात्रा कम होती है। काली मृदा बहुत महीन कणों अर्थात् मृत्तिका से बनी है। इसकी नमी धारण करने की क्षमता बहुत होती है।

(iii) लाल और पीली मृदा (Red and Yellow Soil)—

(a) लाल मृदा दक्कन पठार के पूर्वी और दक्षिणी हिस्सों में रवेदार आग्नेय चट्टानों पर कम वर्षा वाले भागों में विकसित हुई है।

(b) लाल और पीली मृदाएँ उड़ीसा, छत्तीसगढ़, मध्य गंगा के मैदान के दक्षिणी छोर पर और पश्चिमी घाट के पहाड़ी पद पर पाई जाती है।

(c) इन मृदाओं का लाल रंग रवेदार आग्नेय और रूपांतरित चट्टानों में लौह धातु के प्रसार के कारण होता है। इनका पीला रंग इनमें जलयोजन के कारण होता है।

(iv) लेटराइट मृदा (Laterite Soil)—

(a) लेटराइट मृदा उच्च तापमान और अत्यधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में विकसित होती है।

(b) इस मृदा में ह्यूमस की मात्रा कम पाई जाती है।

(c) ये मृदाएँ मुख्य तौर पर कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु, मध्य प्रदेश और उड़ीसा तथा असम के पहाड़ी क्षेत्रों में पाई जाती है।

(d) यह मृदा चाय, काफी, काजू और मूँगफली की फसल के लिए उपयुक्त है।

(v) मरुस्थलीय मृदा (Arid Soil)—

(a) ये मृदाएँ आमतौर पर रेतीली और लवणीय होती हैं।

(b) इन मृदाओं में ह्यूमस और नमी की मात्रा कम होती है।

(c) ये मृदाएँ पश्चिमी राजस्थान में पाई जाती हैं।

(vi) वन मृदा (Forest Soil)—

(a) ये मृदाएँ आमतौर पर पहाड़ी और पर्वतीय क्षेत्रों में पाई जाती हैं।

(b) नदी घाटियों में ये मृदाएँ दोमट और सिल्टदार होती हैं, परंतु ऊपरी ढालों पर इनका गठन मोटे कणों का होता है।

- **मृदा अपरदन (Soil Erosion)—**

(i) मानवीय क्रियाओं जैसे वनोन्मूलन, अति पशुचारण, निर्माण और खनन इत्यादि से मृदा अपरदन होता है।

(ii) प्राकृतिक तत्त्व जैसे पवन, हिमनदी और जल के द्वारा भी मृदा अपरदन होता है।

- **मृदा संरक्षण (Soil Conservation)—**

(a) समोच्च जुताई।

(b) पट्टी कृषि।

(c) सीढ़ीदार खेती।

(d) पेड़ों को कतारों में लगाकर रक्षक मेखला बनाना।

(e) घास की पट्टियाँ उगाकर।

इनके बारे में जाने (Know the Terms)

- **मृदा अपरदन (Soil Erosion) :** मृदा के ऊपरी हिस्से का कटाव कई कारणों से होता है; जैसे— प्राकृतिक तत्त्व पवन, हिमनदी और जल मिट्टी को बहाते हैं जिसे मृदा अपरदन कहते हैं।
- **वाहिकाएँ (Gullies) :** बहता जल मृत्तिकायुक्त मृदाओं को काटते हुए गहरी वाहिकाएँ बनाता है जिन्हें अवनलिकाएँ कहते हैं।
- **चादर अपरदन (Sheet erosion) :** कई बार जल विस्तृत क्षेत्र को ढ़के हुए ढाल के साथ नीचे की ओर बहता है। ऐसी स्थिति में इस क्षेत्र की ऊपरी मृदा घुलकर जल के साथ बह जाती है, इसे चादर अपरदन कहा जाता है।
- **पवन अपरदन (Wind erosion) :** पवन द्वारा मैदान अथवा ढालू क्षेत्र से मृदा को उड़ा ले जाने की प्रक्रिया को पवन अपरदन कहा जाता है।
- **पट्टी कृषि (Strip Farming) :** बड़े खेतों को पट्टियों में बाँटा जाता है। फसलों के बीच में घास की पट्टियाँ उगाई जाती हैं। ये पवनों द्वारा जनित बल को कमजोर करती हैं। इस तरीके को पट्टी कृषि कहते हैं।
- **समोच्च जुताई (Contour Ploughing) :** ढाल वाली भूमि पर समोच्च रेखाओं के समानांतर हल चलाने से ढाल के साथ बहाव की गति घटती है इसे समोच्च जुताई कहा जाता है।
- **रक्षक मेखला (Shelter belt) :** पेड़ों को कतारों में लगाकर रक्षक मेखला बनाना भी पवनों की गति को कम करता है।

❑❑

अध्याय – 2 जल संसाधन

प्रकरण (TOPIC)-I
जल दुर्लभता और जल संरक्षण की आवश्यकता : बहुउद्देशीय नदी परियोजनाएँ और समन्वित जल संसाधन प्रबंधन।

शीघ्र पुनर्विचार (Quick Review)

- तीन-चौथाई धरातल जल से ढंका हुआ है, परंतु इसमें प्रयोग में लाने योग्य अलवणीय जल का अनुपात बहुत कम है। यह अलवणीय जल हमें सतही अपवाह और भौम जल स्रोत से प्राप्त होता है। जिनका लगातार नवीकरण और पुनर्भरण जलीय चक्र द्वारा होता है।
- **जल दुर्लभता**—वर्षा में वार्षिक और मौसमी परिवर्तन के कारण जल संसाधनों की उपलब्धता में समय और स्थान के अनुसार विभिन्नता है। परंतु अधिकतया जल की कमी इसके अतिशोषण, अत्यधिक प्रयोग और समाज के विभिन्न वर्गों में जल के असमान वितरण के कारण होती है।

- जल संसाधन की प्रचुर मात्रा होते हुए भी पानी की दुर्लभता (कमी) के निम्न कारण हैं—
  - **(i)** जल की दुर्लभता अत्यधिक और बढ़ती जनसंख्या और उसके परिणामस्वरूप जल की बढ़ती माँग और उसका असमान वितरण इसका एक कारण है।
  - **(ii)** किसानों द्वारा सिंचाई के लिए अपने निजी नलकूप और कुँए बनाए गए हैं जिनसे भौम जल स्तर नीचे गिर सकता है और लोगों के लिए जल उपलब्धता की कमी हो सकती है।
  - **(iii)** स्वतंत्रता के बाद भारत में तेजी से औद्योगीकरण और शहरीकरण हुआ, उद्योगों की बढ़ती हुई संख्या के कारण अलवणीय जल संसाधनों पर दबाव बढ़ रहा है।
  - **(iv)** शहरों की बढ़ती संख्या और जनसंख्या तथा शहरी जीवन शैली के कारण न केवल जल और ऊर्जा की आवश्यकता में भी बढ़ोत्तरी हुई है इससे समस्याएँ और गहरी हुई हैं।
- शहरी आवास समितियों या कॉलोनियों में ज्यादातर घरों में लोगों के निजी भौम जल पंप पानी की आवश्यकता के लिए लगे हुए हैं जिससे जल संसाधनों का अति शोषण हो रहा है।
- **बहुउद्देशीय नदी परियोजनाएँ और समन्वित जल संसाधन प्रबंधन—**
- पुरातत्व वैज्ञानिक और ऐतिहासिक अभिलेख/दस्तावेज बताते हैं कि हमने प्राचीन काल से ही सिंचाई के लिए पत्थरों और मलबे से बाँध, जलाशय अथवा झीलों के तटबंध और नहरों जैसी उत्कृष्ट जलीय कृतियाँ बनाई हैं।
- **कुछ जलीय बाँध (कृतियाँ) निम्नलिखित हैं—**
  - **(i)** ईसा से एक शताब्दी पहले इलाहाबाद के नजदीक श्रिंगवेरा में गंगा नदी की बाढ़ के जल को संरक्षित करने के लिए एक उत्कृष्ट जल संरक्षण तंत्र बनाया गया था।
  - **(ii)** चन्द्रगुप्त मौर्य के समय वृहत् स्तर पर बाँध, झील और सिंचाई तंत्रों का निर्माण कराया गया।
  - **(iii)** अपने समय की सबसे बड़ी कृत्रिम झीलों में से एक भोपाल झील, 11वीं शताब्दी में बनाई गई थी।
  - **(iv)** 14वीं शताब्दी में इल्तुतमिश ने दिल्ली में सिटी फोर्ट क्षेत्र में जल की आपूर्ति के लिए हौज खास (एक विशिष्ट तालाब) बनवाया।
- **बाँधों के उपयोग—**
  - **(i)** सिंचाई
  - **(ii)** विद्युत उत्पादन
  - **(iii)** औद्योगिक और घरेलू उपयोग जल की आपूर्ति
  - **(iv)** बाढ़ नियंत्रण
  - **(v)** मनोरंजन
  - **(iv)** आंतरिक नौचालन
  - **(vii)** मछली पालन
- इसलिए बाँधों को बहुउद्देशीय परियोजनाएँ भी कहा जाता है।
- जवाहरलाल नेहरू गर्व से बांधों को "आधुनिक भारत के मंदिर" कहा करते थे। उनका मानना था कि इन परियोनाओं के चलते कृषि और ग्रामीण अर्थव्यवस्था, औद्योगीकरण और नगरीय अर्थव्यवस्था समन्वित रूप से विकास करेगी।
- **बहुउद्देशीय परियोजनाओं के विरोध के कारण—**
  - **(i)** तलछट बहाव में कमी।
  - **(ii)** अत्यधिक तलछट जलाशय की तली पर जमा होता रहता है।
  - **(iii)** नदी जलीय जीव आवासों में भोजन की कमी हो जाती है।
  - **(iv)** अंडे देने की ऋतु में जलीय जीवों का नदियों में स्थानांतरण अवरुद्ध हो जाता है।
  - **(v)** बाढ़ के मैदान में बनाए जाने वाले जलाशयों द्वारा वहाँ मौजूद वनस्पति और मिट्टियाँ जल में डूब जाती हैं।

इन्हें भी जानें (Know About it)

- **जल चक्र (Hydrological cycle) :** यह एक चक्र है जिसमें पानी जमीन से आकाश में वाष्पित होकर चला जाता है तथा पुन: वर्षा के रूप में जमीन पर वापस आता है इसे जल चक्र कहते हैं।
- **ताजा पानी (Fresh Water) :** यह पानी समुद्री नहीं होता है तथा नमकीन अथवा खारा भी नहीं होता है।
- **भौम जल (Ground Water) :** यह जल भूमि के नीचे के स्थान से संतृप्तीकरण परत से बाहर निकाला जाता है जिसे कुँओं और अन्य माध्यमों से बाहर निकाला जाता है।

- **जलीयकृत ढाँचे (Hydraulic Structure) :** सभी बाँध, झील, नहरें, कुएँ तथा तालाब आदि इन सभी में वर्षा जल का ही संग्रहण होता है।
- **जल विद्युत (Hydrooelectricity) :** यह ऊर्जा है जिसका उत्पादन बहते हुए जल से किया जाता है।
- **बाँध (Dam) :** बाँध बहते जल को रोकने, दिशा देने या बहाव कम करने के लिए खड़ी की गई बाधा है जो आमतौर पर जलाशय, झील अथवा जलभरण बनाती है।
- **बहुउद्देशीय परियोजनाएँ (Multipurpose) :** बहुउद्देशीय परियोजना अथवा नदी घाटी परियोजना एक साथ बहुत सारे लाभ, जैसे—सिंचाई, बाढ़ नियंत्रण, जल विद्युत का उत्पादन एवं पर्यटन प्रदान करती है। भाखड़ा नांगल एक पर्यटन स्थल है।

प्रकरण (TOPIC)–2
वर्षा जल संग्रहण (Rainwater Harvesting)

शीघ्र पुनर्विचार (Quick Review)

- बहु-उद्देशीय परियोजनाओं के अलाभप्रद असर और उन पर उठे विवादों के चलते वर्षाजल संग्रहण तंत्र इनके सामाजिक-आर्थिक और पारिस्थितिक तौर पर व्यवहार्थ विकल्प हो सकते हैं।
- पहाड़ी और पर्वतीय क्षेत्र में लोगों ने 'गुल' अथवा 'कुल' (पश्चिमी हिमालय) जैसी वाहिकाएँ, नदी की धारा का रास्ता बदलकर खेतों से सिंचाई के लिए बनाई जाती हैं।
- राजस्थान में पीने का पानी एकत्रित करने के लिए "छत वर्षा जल संग्रहण" का तरीका आम था। यह निम्न प्रकार से किया जाता था—
  - **(i)** छत वर्षा जल संग्रहण के लिए पी.वी.सी. के पाइप का उपयोग किया जाता है।
  - **(ii)** छनन करने के लिए रेती व ईंटों का उपयोग होता था।
  - **(iii)** भूमिगत पाइपों के माध्यम से पानी को नीचे ले जाया जाता है जहाँ से तुरंत उपयोग में लिया जाता है।
  - **(iv)** अतिरिक्त पानी को नीचे (हौदी) से कुंओं में डाल दिया जाता है।
  - **(v)** कुंओं के पानी से भूमिगत जल का पुनर्भरण किया जाता है।
  - **(vi)** बाद में इस जल का उपयोग किया जा सकता है।
- राजस्थान के शुष्क और अर्द्ध-शुष्क क्षेत्रों विशेषकर बीकानेर, फलोदी और बाड़मेर में, लगभग हर घर में पीने का पानी संग्रहीत करने के लिए भूमिगत टैंक अथवा टाँका हुआ करते थे।
- वर्षाजल अथवा "पालरपानी" जैसा कि इसे इन क्षेत्रों में पुकारा जाता है, प्राकृतिक जल का शुद्धतम रूप समझा जाता है।
- आज पश्चिमी राजस्थान में छत वर्षाजल संग्रहण की रीति इंदिरा गांधी नहर से उपलब्ध बारहमासी पेयजल के कारण कम होती जा रही है।
- कर्नाटक के मैसूर जिले में स्थित एक सुदूर गाँव गंडाथूर में ग्रामीणों ने अपने घर में जल आवश्यकता पूर्ति छत वर्षाजल संग्रहण की व्यवस्था की हुई है।
- छत वर्षाजल संग्रहण की क्रिया शिलांग व मेघालय में काफी प्रचलित है।
- मेघालय में नदियों व झरनों के जल को बाँस द्वारा बने पाइप द्वारा एकत्रित करके 200 वर्ष पुरानी विधि प्रचलित है।
- तमिलनाडु देश का एकमात्र राज्य है जहाँ पूरे राज्य में हर घर में छत वर्षाजल संग्रहण ढाँचों का बनाना आवश्यक कर दिया गया है। इस संबंध में दोषी व्यक्तियों पर कार्यवाही हो सकती है।

इनके के बारे में जानें (Know About it)

- **वर्षाजल संग्रहण (Rain Water harvesting) :** वर्षाजल संग्रहण की प्रक्रिया में पहले वर्षा जल को इकट्ठा किया जाता है, फिर इस को एक स्थान पर भंडारित किया जाता है उसके पश्चात इसे विभिन्न उपयोगों में लाते हैं।
- **जलीय चट्टानी पर्त (Aquifer) :** एक चट्टान अथवा मिट्टी की परत जो पानी अपने अंदर सोख कर रखती है।
- **जल दुर्लभता (Water Scarcity) :** माँग के अनुपात में पानी की कमी को जल दुर्लभता कहते हैं।
- **'गुल' अथवा कुल (Guls or Kuls) :** पर्वतीय क्षेत्रों में लोगों ने 'गुल' अथवा 'कुल' (पश्चिमी हिमालय) जैसी वाहिकाएँ नदी की धारा का रास्ता बदलकर खेतों में सिंचाई के लिए बनाई हैं।

- **बाढ़ जल वाहिकाएँ (Inundation Canal) :** वर्षा के मौसम में बाढ़ के मैदान में लोग अपने खेतों की सिंचाई के लिए जल वाहिकाएँ बनाते थे।
- **ड्रिप सिंचाई (Drip Irrigation) :** नदियों व झरनों के जल को बाँस द्वारा बने पाइप द्वारा एकत्रित करके सैकड़ों मीटर की दूरी तक ले जाया जाता है। अंत में पानी का बहाव 20 से 80 बूँद प्रति मिनट तक घटाकर पौधे पर छोड़ दिया जाता है।

अध्याय - 3 वन एवं वन्य जीवन

परिचय

- हमारी पृथ्वी जीवधारियों, सूक्ष्म-जीवाणुओं से लेकर बैक्टीरिया, जोंक से लेकर वटवृक्ष, हाथी और ब्लू व्हेल तक का घर है।

भारत में वनस्पतिजात और प्राणिजात

- भारत, जैव विविधता के सन्दर्भ में विश्व के सबसे समृद्ध देशों में से एक है और विश्व की सारी उपजतियों की 8 प्रतिशत संख्या (लगभग 16 लाख) पाई जाती है।
- अनुमानत: भारत में 10 प्रतिशत वन्य वनस्पतिजात और 20 प्रतिशत स्तनधारियों के लुप्त होने का खतरा है।
- इनमें से कई उपजातियाँ तो नाजुक अवस्था में हैं और लुप्त होने के कगार पर हैं। इनमें चीता, गुलाबी सिर वाला बत्तख, पहाड़ी कोयल आदि शामिल हैं।

जातियों का वर्गीकरण

- अंतर्राष्ट्रीय प्राकृति संरक्षण और प्रकृति संसाधन संघ के अनुसार निम्नलिखित श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है—
  - **(i)** संकटग्रस्त जातियाँ जिनके लुप्त होने का खतरा है, जैसे—काला हिरण, मगरमच्छ, भारतीय जंगली गधा आदि।
  - **(ii)** सुभेद्य जातियाँ वह है जिनकी संख्या घट रही हैं और यदि इनकी संख्या पर विपरीत प्रभाव डालने वाली परिस्थितियाँ नहीं बदली जाती हैं अैर इनकी संख्या घटती रहती हैं तो यह संकटग्रस्त जातियों की श्रेणी में शामिल हो जाएँगी, जैसे—नीली भेड़, एशियाई हाथी, गंगा नदी की डॉल्फिन इत्यादि।
  - **(iii) दुर्लभ जातियाँ**—इन जातियों की संख्या बहुत कम है और इनको प्रभावित करने वाली विषम परिस्थितियाँ नहीं परिवर्तित होती तो संकटग्रस्त जातियों की श्रेणी में आ सकती हैं।
  - **(iv) स्थानिक जातियाँ**—इस प्रकार की जातियाँ प्राकृतिक या भौगोलिक सीमाओं से अलग विशेष क्षेत्र में पाई जाती हैं, जैसे—अंडमानी टील, निकोबारी कबूतर, अंडमानी जंगली सूअर और अरुणाचल के मिथुन आदि।
  - **(v) लुप्त जातियाँ**—ये वे जातियाँ हैं जो इनके रहने के आवासों में खोज करने पर अनुपस्थित पाई गयी हैं, जैसे—एशियाई चीता, गुलाबी सिरवाली बत्तख।

भारत में वन एवं वन्य जीवन का संरक्षण

- **(i)** संरक्षण से पारिस्थितिक बनी रहती है तथा हमारे जीवन साध्य संसाधन—जल, वायु और मृदा बने रहते हैं।
- **(ii)** पर्यावरण संरक्षकों ने राष्ट्रीय वन्य जीवन सुरक्षा की पुरजोर माँग पर भारतीय वन्य जीव (रक्षण) अधिनियम 1972 में लागू किया गया जिसमें वन्य जीवों के आवास रक्षण के अनेक प्रावधान थे।
- **(iii)** 1973 में भारत सरकार ने बाघों के संरक्षण के लिए 'प्रोजेक्ट टाइगर' की शुरुआत की जिसका उद्देश्य बाघ जैसे संकटग्रस्त जाति को बचाना था।
- **(iv)** वन्य जीवन अधिनियम 1980 और 1986 के तहत् सैकड़ों तितलियों, पतंगों, भृगों और ड्रैगनफ्लाई को भी संरक्षित जातियों में शामिल किया गया है।
- **(v)** 1991 में पौधों की भी 6 जातियाँ पहली बार इस सूची में रखी गयी।

वन एवं वन्य जीव संसाधनों के प्रकार और वितरण

- **(i)** भारत में अधिकतर वन और वन्य जीवन या तो प्रत्यक्ष रूप में सरकार के अधिकार क्षेत्र में हैं या वन विभाग अथवा अन्य विभागों के जरिये सरकार के प्रबंधन में है।
- **(ii)** वनों को निम्नलिखित वर्गों में बाँटा गया है—
  - **(अ) आरक्षित वन**—वन और वन्य प्राणियों के संरक्षण में आरक्षित वनों को सर्वाधिक मूल्यवान माना जाता है। देश में आधे से अधिक वन क्षेत्र आरक्षित वन घोषित किये गये हैं।
  - **(ब) रक्षित वन**—इन वनों को और अधिक नष्ट होने से बचाने के लिए इनकी सुरक्षा की जाती है। देश के कुल वन क्षेत्र का एक तिहाई हिस्सा रक्षित है।

(स) अवर्गीकृत वन—अन्य सभी प्रकार के वन और बंजरभूमि जो सरकार, व्यक्तियों और समुदायों के स्वामित्व में होते हैं, अवर्गीकृत वन कहलाते हैं।

समुदाय और संरक्षण

(i) वन हमारे देश में कुछ मानव प्रजातियों के आवास भी हैं।

भारत के कुछ क्षेत्रों में स्थानीय दीर्घकाल में अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सरकारी अधिकारियों के साथ मिलकर अपने आवस स्थलों के संरक्षण में जुटे हैं।

(ii) सरिस्का बाघ रिजर्व में राजस्थान के गाँवों के लोग वन्य जीव रक्षण अधिनियम के तहत वहाँ से खनन कार्य बंद करवाने के लिए संघर्षरत हैं।

(iii) हिमालय में प्रसिद्ध 'चिपको आन्दोलन' कई क्षेत्रों में वन कटाई रोकने में कामयाब रहा है।

यह भी दिखाया कि स्थानीय पौधों की जातियों को प्रयोग करके सामुदायिक वनीकरण अभियान को सफल बनाया जा सकता है।

(iv) टिहरी के किसानों का बीज बचाओ आन्दोलन और नवदानय ने दिखा दिया है कि रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग के बिन भी विविध फसल उत्पादन द्वारा आर्थिक रूप से व्यवहार्य कृषि उत्पादन संभव है।

(v) भारत में संयुक्त वन प्रबंधन कार्यक्रम की शुरुआत 1988 में हुई जब उड़ीस राज्य ने संयुक्त वन प्रबंधन का पहला प्रस्ताव पास किया। इसके अंतर्गत क्षारित वनों के बचाव के लिए कार्य किया जाता है और गाँव के स्तर पर संस्थाएँ बनाई जाती हैं जिसमें ग्रामीण और वन विभाग के अधिकारी संयुक्त रूप से कार्य करते हैं।

अध्याय – 3 कृषि

प्रकरण (TOPIC)-I

कृषि के प्रकार, फसलों के तरीके और मुख्य फसलें

(Types of Farming, Cropping pattern and Major Crops)

त्वरित समीक्षा (Revision Notes)

- कृषि एक प्राथमिक क्रिया है, जो हमारे लिए अधिकांश खाद्यान्न उत्पन्न करती है। भारत की दो तिहाई जनसंख्या कृषि कार्यों में संलग्न है।
- कृषि हमारे देश की प्राचीन आर्थिक क्रिया है। जीवन निर्वाह खेती से लेकर वाणिज्य खेती तक कृषि के अनेक प्रकार हैं। वर्तमान समय में भारत के विभिन्न भागों में निम्नलिखित प्रकार के कृषि तंत्र अपनाए गए हैं—

  (i) प्रारंभिक जीविका निर्वाह कृषि—प्रारंभिक जीवन निर्वाह कृषि भूमि के छोटे टुकड़ों पर आदिम कृषि औजारों जैसे लकड़ी के हल, डाओ (dao) और खुदाई करने वाली छड़ी तथा परिवार अथवा समुदाय श्रम की मदद से की जाती थी। इस प्रकार की कृषि प्राय: मानसून, मृदा की प्राकृतिक उर्वरता और फसल उगाने के लिए अन्य पर्यावरणीय परिस्थितियों की उपयुक्तता पर निर्भर करती है।

  (ii) गहन जीविका कृषि—इस प्रकार की कृषि उन क्षेत्रों में की जाती है जहाँ भूमि पर जनसंख्या का दबाव अधिक होता है। यह श्रम गहन खेती है जहाँ अधिक उत्पादन के लिए अधिक मात्रा में जैव रासायनिक निवेशों और सिंचाई का प्रयोग किया जाता है।

  (iii) वाणिज्यिक कृषि—इस प्रकार की कृषि के मुख्य लक्षण आधुनिक निवेशों जैसे अधिक पैदावार देने वाले बीजों, रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के प्रयोग से उच्च पैदावार प्राप्त करना है। कृषि के वाणिज्यीकरण का स्तर विभिन्न प्रदेशों में अलग-अलग है।

- भारत में तीन शस्य ऋतुएँ-रबी, खरीफ और ज़ायद हैं।
- रबी फसलों को शीत ऋतु में अक्टूबर से दिसम्बर के मध्य बोया जाता है। और ग्रीष्म ऋतु में अप्रैल से जून के मध्य काटा जाता है।
- खरीफ फसलें देश के विभिन्न क्षेत्रों में मानसून के आगमन के साथ बोई जाती हैं और सितम्बर-अक्टूबर में काट ली जाती हैं।
- रबी और खरीफ ऋतुओं के बीच ग्रीष्म ऋतु में बोई जाने वाली फसल को ज़ायद कहा जाता है।
- भारत में उगाई जाने वाली मुख्य फसलें-चावल, गेहूँ, मोटे अनाज, दालें, चाय, कॉफी, गन्ना, तिलहन, कपास और जूट आदि हैं।

- ज्वार, बाजरा और रागी भारत में उगाए जाने वाने मुख्य मोटे अनाज हैं। यद्यपि इन्हें मोटे अनाज कहा जाता है परंतु इनमें पोषक तत्वों की मात्रा अत्यधिक होती है। उदाहरणतया रागी में प्रचुर यात्रा में लोहा, कैल्शियम, सूक्ष्म पोषक और भूसी मिलती है।
- भारत विश्व में दालों का सबसे बड़ा उत्पादक तथा उपभोक्ता देश है। शाकाहारी खाने में दालें सबसे अधिक प्रोटीन दायक होती हैं।
- तुर (अरहर), उड़द, मूंग, मसूर, मटर और चना भारत की मुख्य दलहनी फसलें हैं।
- भारत विश्व का सबसे बड़ा तिलहन उत्पादक देश है। मूँगफली, सरसों, नारियल, तिल, सोयाबीन, अरंडी, बिनौला, अलसी और सूरजमुखी भारत में उगाई जाने वाली मुख्य तिलहन फसलें हैं। इनमें से अधिकतर खाद्य हैं और खाना बनाने में प्रयोग किए जाते हैं।

  बागवानी फसलें—भारत विश्व में सबसे अधिक फलों और सब्जियों का उत्पादन करता है। भारत उष्ण और शीतोष्ण कटिबंधीय दोनों ही प्रकार के फलों का उत्पादक है।
- भारत विश्व की लगभग 13 प्रतिशत सब्जियों का उत्पादन करता है। भारत का मटर, फूलगोभी, प्याज, बंदगोभी, टमाटर, बैंगन और आलू उत्पादन में प्रमुख स्थान है।
- भारत की अखाद्य फसलों में रबड़, रेशेदार फसलें कपास व जूट आदि हैं।
- कपास, जूट, सन और प्राकृतिक रेशम भारत में उगाई जाने वाली चार प्रमुख रेशेदार फसलें हैं।
- जूट को सुनहरा रेशा कहा जाता है। इसकी उच्च लागत के कारण और कृत्रिम रेशों और पैकिंग सामग्री विशेषकर नाइलोन की कीमत कम होने के कारण, बाजार में इसकी माँग कम हो रही है।
- रेशम उत्पादन के लिए रेशम के कीड़ों का पालन 'रेशम उत्पादन' (Sericulture) कहलाता है।

इन्हें भी जानें— (Know the Terms)

- **कृषि (Agriculture) :** बीज बोना, फसल उगाना और पशु पालना, एक विज्ञान और कला है, जिसे कृषि कहते हैं।
- **प्रारंभिक जीविका निर्वाह कृषि (Primitive Subsistence Farming) :** कृषि भूमि के छोटे टुकड़ों पर आदिम कृषि औजारों जैसे लकड़ी के हल, डाओ (dao) और खुदाई करने वाली छड़ी तथा परिवार अथवा समुदाय श्रम की मदद से की जाती है।
- **बागवानी कृषि (Plantation Farming) :** इस प्रकार की कृषि में, विशाल क्षेत्र में एक ही फसल पैदा की जाती है।
- **वाणिज्यिक कृषि (Commercial farming) :** ऐसी कृषि जिसमें किसान ऐसी फसलों को उगाता है जिनका उद्देश्य उन्हें केवल बेचना होता है अर्थात् उत्पादन केवल बेचने के लिए किया जाता है।
- **रेशम उत्पादन (Sericulture) :** रेशम उत्पादन के लिए रेशम के कीड़ों का पालन 'रेशम उत्पादन' कहलाता है।
- **बागवानी फसलें (Horticulture) :** सब्जियाँ, फलों और फूलों की कृषि बागवानी कृषि कहलाती है।
- **झूम कृषि (Jhuming) :** किसान जमीन के टुकड़े साफ करके उन पर अपने परिवार के भरण पोषण के लिए अनाज व अन्य खाद्य फसलें उगाते हैं।
- **रबी (Rabi) :** फसलें शरद ऋतु की शुरुआत में बोई जाती हैं तथा ग्रीष्म ऋतु की शुरुआत से पहले काट ली जाती हैं।
- **खरीफ (Kharif) :** मानसून के प्रारंभ के साथ बोई जाती है तथा शरद ऋतु की शुरुआत से पहले काट ली जाती है।
- **ज़ायद (Zaid) :** ये फसल रबी और खरीफ के बीच में कम समय के लिए बोई व काटी जाती है इसमें सब्जियाँ, खीरा, ककड़ी आदि पैदा की जाती हैं।
- **मोटे अनाज (Millets) :** ज्वार, बाजरा और रागी को मोटे अनाज कहते हैं। इन्हें मोटे अनाज के नाम से जाना जाता है।
- **फसल चक्र (Crop Rotation) :** एक ही क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की फसलें अलग-अलग उगाये जाने तथा जमीन की उर्वरता को बनाए रखना ही फसल चक्र है।

प्रकरण (TOPIC)–2
प्रौद्योगिकीय और संस्थागत सुधार
(Technological and Institutional Reforms)

त्वरित समीक्षा (Revision Notes)

- 60 प्रतिशत से भी अधिक लोगों की आजीविका प्रदान करने वाली कृषि में कुछ गंभीर तकनीकी एवं संस्थागत सुधार लाने की आवश्यकता है। देश में संस्थागत सुधार लाने के लिए जोतों की चकबंदी, सहकारिता तथा जमींदारी आदि को समाप्त करने को प्राथमिकता दी गई।

- भोजन एक आधारभूत आवश्यकता है और देश के प्रत्येक नागरिक को ऐसा भोजन मिलना चाहिए जो न्यूनतम पोषण स्तर प्रदान करे। यदि हमारी जनसंख्या के किसी भाग को यह उपलब्ध नहीं होता है, तो वह खाद्य सुरक्षा से वंचित है।
- भारत की खाद्य सुरक्षा नीति का प्राथमिक उद्देश्य सामान्य लोगों को खरीद सकने योग्य कीमतों पर खाद्यान्नों की उपलब्धता को सुनिश्चित करना है। इससे निर्धन भोजन प्राप्त करने में समर्थ हुए हैं।
- हरित क्रांति से छोटे व सीमान्त किसानों की स्थितियों में थोड़ा सा सुधार हुआ।
- 1980 तथा 1990 के दशकों में व्यापक भूमि विकास कार्यक्रम शुरू किया गया जो संस्थागत और तकनीकी सुधारों पर आधारित था।
- संस्थागत और तकनीकी सुधारों की दिशा में उठाए गए कुछ महत्त्वपूर्ण कदमों में सूखा, बाढ़, चक्रवात, आग तथा बीमारी के लिए फसल बीमा के प्रावधान और किसानों को कम दर पर ऋण सुविधाएँ प्रदान करने के लिए ग्रामीण बैंकों, सहकारी समितियों और बैंकों की स्थापना सम्मिलित थे।
- किसानों के लाभ के लिए भारत सरकार ने "किसान क्रेडिट कार्ड" और व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा योजना (पीएआईएस) भी शुरू की है।
- कृषि के महत्त्व को समझते हुए भारत सरकार ने इसके आधुनिकीकरण के लिए भरसक प्रयास किए हैं। भारतीय कृषि में सुधार के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद व कृषि विश्वविद्यालय की स्थापना, पशु चिकित्सा सेवाएँ और पशु प्रजनन केन्द्र की स्थापना, बागवानी विकास, मौसम विज्ञान और मौसम के पूर्वानुमान के क्षेत्र में अनुसंधान और विकास को वरीयता दी गई है।
- वर्तमान में भारतीय किसान को अंतर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा से एक बड़ी चुनौती का सामना कृषि सेक्टर में विशेष रूप से करना पड़ रहा है।
- कृषि में विकास दर कम हो रही है जो कि एक चिंताजनक स्थिति है।
- रासायनिक उर्वरकों पर सहायिकी कम करने से उत्पादन लागत बढ़ रही है।
- कृषि उत्पादों पर आयकर घटाने से भी देश में कृषि पर हानिकारक प्रभाव पड़ा है।
- किसान कृषि में पूँजी निवेश कम कर रहे हैं, जिसके कारण कृषि में रोजगार घट रहे हैं।
- समाज के सभी वर्गों को खाद्य उपलब्धता सुनिश्चित कराने के लिए हमारी सरकार ने सावधानीपूर्वक राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा प्रणाली की रचना की है। इसके दो घटक हैं : (क) बफर स्टॉक, (ख) सार्वजानिक वितरण प्रणाली (पी.डी.एस.)।
- भारतीय खाद्य निगम (एफ. सी. आई.) सरकार द्वारा घोषित न्यूनतम समर्थन मूल्यों पर किसानों से खाद्यान्न प्राप्त करती है।
- ऊँचा न्यूनतम समर्थन मूल्य, निवेशों में सहायिकी और एफ. सी. आई द्वारा शर्तिया खरीद ने शस्य प्रारूप को बिगाड़ दिया है, जो न्यनूतम समर्थन मूल्य उन्हें मिलता है उसके लिए गेहूँ और चावल की अधिक फसलें उगाई जा रही हैं। पंजाब और हरियाणा इसके अग्रणी उदाहरण हैं।
- धीरे-धीरे खाद्य फसलों की कृषि का स्थान फलों, सब्जियों, तिलहनों और औद्योगिक फसलों की कृषि लेती जा रही है।
- वैश्वीकरण के तहत भारतीय किसानों को चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।
- हरित क्रांति के दौरान रसायनों के अधिक प्रयोग जलभूतों के सूखने और जैव विविधता विलुप्त होने के कारण भूमि का निम्नीकरण हुआ है। आज 'जीन क्रांति' संकेत शब्द है, जिसमें जननिक इंजीनियारिंग शामिल है।
- आज कार्बनिक (Organic) कृषि का अधिक प्रचलन है क्योंकि यह उर्वरकों तथा कीटनाशकों जैसे कारखानों में निर्मित रसायनों के बिना की जाती है।
- भारतीय किसानों को शस्यावर्तन करना चाहिए और खाद्यान्नों के स्थान पर कीमती फसलें उगानी चाहिए। इससे आमदनी अधिक होगी और इसके साथ पर्यावरण निम्नीकरण में कमी आएगी।

इन्हें भी जानें— (Know the Terms)

- **सिंचाई (Irrigation) :** खड़ी फसल में कृत्रिम रूप से पानी बरसाने (डालने) को सिंचाई के नाम से जाना जाता है।
- **आई.सी.ए.आर. (ICAR) :** भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद।
- **एफ.सी.आई. (FCI) :** भारतीय खाद्य निगम
- **कार्बनिक कृषि (Organic Farming) :** ऐसी कृषि जो उर्वरकों तथा कीटनाशकों जैसे कारखानों में निर्मित रसायनों के बिना की जाती है।
- **न्यूनतम समर्थन मूल्य (Minimum Support Price) :** फसल का एक कम से कम निश्चित मूल्य फसल की पैदावार से पहले सरकार फसल का निश्चित मूल्य घोषित करती है।
- **किसान क्रेडिट कार्ड (Kisan Credit Card) :** यह एक क्रेडिट कार्ड है जो भारत में किसानों को लाभ दिलाने के लिए उपलब्ध कराया जाता है।

❑❑

अध्याय – 4 खनिज तथा ऊर्जा संसाधन

प्रकरण (TOPIC)-1
खनिजों का उपयोग एवं आर्थिक महत्व
(Minerals and their mode of occurrence)

त्वरित समीक्षा (Revision Notes)

- **खनिज—**
  - **(i)** खनिज एक प्राकृतिक रूप से विद्यमान समरूप तत्त्व है।
  - **(ii)** चट्टानों में खनिज दरारों, जोड़ों, भ्रंशों व विदरों में मिलते हैं।
  - **(iii)** एक खनिज विशेष जो निश्चित तत्त्वों का योग है, उन तत्त्वों का निर्माण उस समय के भौतिक व रासायनिक समय के भौतिक व रासायनिक परिस्थितियों का परिणाम है।
  - **(iv)** भौतिक व रासायनिक क्रियाओं के फलस्वरूप ही खनिजों में विविध रंग, कठोरता, चमक, घनत्व तथा विविध क्रिस्टल पाए जाते हैं। भू–वैज्ञानिक इन्हीं विशेषताओं के आधार पर खनिजों का वर्गीकरण करते हैं।
- **खनिजों का महत्त्व—**
  - **(i)** प्रत्येक वो वस्तु जिसका हम प्रयोग करते हैं, खाना, पीना सभी में खनिज हैं।
  - **(ii)** मूल्यवान खनिजों की उपस्थिति से किसी व्यक्ति अथवा राष्ट्र का विकास संभव है।
  - **(iii)** खनिजों से हमारा जीवन आरामदायक व सुविधाजनक बनता है।
  - **(iv)** पृथ्वी पर होने वाली जैविक क्रियाओं के लिए खनिज उत्तरदायी है।
- **चट्टानों में खनिज**–
  - **(i)** चट्टानें खनिजों के समरूप यौगिक हैं।
  - **(ii)** चट्टानों का निर्माण प्राकृतिक रूप से खनिजों के कणों से मिलकर होता है। इसके परिणामस्वरूप ही खनिजों में विविध रंग, कठोरता, चमक, घनत्व तथा विविध क्रिस्टल पाए जाते हैं।
  - **(iii)** पृथ्वी पर उपलब्ध अधिकतर चटट्टानों के बाहरी स्वरूप विभिन्न प्रकार के खनिजों का सम्मिश्रण है।
  - **(iv)** यद्यपि 2000 से अधिक खनिजों की पहचान की जा चुकी है, लेकिन अधिकतर चट्टानों में केवल कुछ ही खनिजों की बहुतायत है।

इनके बारे में जाने (Know the Terms)

- **खनिज (Mineral)-** खनिज एक प्राकृतिक रूप से विद्यमान समरूप तत्त्व है जिसकी एक निश्चित आंतरिक संरचना है।
- **धात्विक खनिज (Metallic Minerals)**—धात्विक खनिजों में धातु कच्चे माल के रूप में समाहित होती हैं। धातु कठोर रूप में होती हैं जिन्हें अधिक ऊष्मा व गर्म करके उनके असली रूप में प्राप्त किया जाता है। लौह अयस्क, बॉक्साइट, मैंग्नीज अयस्क आदि इसके उदाहरण हैं।
- **अधात्विक खनिज (Non-Metallic Minerals)**—अधात्विक खनिज धातु के रूप में नहीं होते हैं। चूना पत्थर, अभ्रक, पोटाश, सल्फर आदि इन खनिजों के उदाहरण हैं। कोयला और पेट्रोलियम के रूप में पाए जाने वाले खनिज भी अधात्विक खनिज हैं।
- **चट्टान (Rock)**—चट्टानें खनिजों के समरूप तत्त्वों के यौगिक हैं। अधिकतर चट्टानें विभिन्न अनुपातों के अनेक खनिजों का योग है।
- **अयस्क (Ores)**—चट्टानों में जो खनिज प्राप्त होते हैं वे अन्य अवयवों या तत्त्वों का मिश्रण होते हैं जिसके लिए 'अयस्क' शब्द का प्रयोग किया जाता है।
- **खनन (Mining)**—चट्टानों से खनिजों को बाहर निकालने की प्रक्रिया को खनन कहते हैं।
- **खुला खनन करना (Open cast mining)**—कुछ खनिज जो सतह के नीचे होते हैं उन्हें सतह की खुदाई करके प्राप्त किया जाता है इसे खुले खनन के नाम से जाना जाता है।

- **गहराई में खनन (Shaft mining)-** गहरी खुदाई को शाफ्ट माइनिंग कहते हैं जो खनिज काफी नीचे गहराई में पाए जाते हैं उनका खनन गहरी खुदाई करके किया जाता है।

प्रकरण (TOPIC) –2
भारत में खनिजों का संरक्षण
Conserevation of Minerals in India)

त्वरित समीक्षा (Revision Notes)

- सभी प्रकार के खनिज समाप्त होने वाले हैं, गंभीर समस्या यह है कि जिन सभी प्रकार के खनिज संसाधनों के निर्माण व सांद्रण में लाखों वर्ष लगे हैं, हम उनका शीघ्रता से उपयोग कर रहे हैं।
- **खनन में दक्षता**– वर्तमान प्रौद्योगिकियाँ अपनी दक्षता में इस समय अपर्याप्त हैं। संसार में अभी भी विकास करने के लिए वास्तविक रूप से बहुत दक्ष प्रौद्योगिकी उपलब्ध है जो वर्तमान में लाभदायक प्रौद्योगिकी के नाम से जानी जाती है। जैसे– पेट्रोलियम पदार्थों को शुद्ध करने में बहुत सारा भण्डार बेकार हो जाता है, आज इस बेकार भण्डार के उपयोग से बहुत सारे उत्पाद बनाए जा सकते हैं।
- **विकल्प**– दुर्लभ कोटि के अयस्कों का कम लागतों पर प्रयोग करने के लिए उन्नत प्रौद्योगिकियों का सतत विकास करते रहना होगा। उदाहरण के लिए पूर्व में बिजली उद्योग में ताँबे का प्रयोग किया जाता था। लेकिन अब ताँबे के स्थान पर एल्यूमीनियम, बहुत सारी अन्य धातुओं का उपयोग कापर के स्थान पर किया जा रहा है।
- **पुनः चक्रण**– इस्पात के छोटे संयंत्रों में सारे विश्व में बचे टुकड़े (Scrap) का प्रयोग किया जा रहा है, यह पुनः चक्रण का सबसे अच्छा उदाहरण है। यह बेकार माल को कम करने में सहायता करता है, लेकिन इससे पुनः चक्रण की कुशलता विकसित होती है। पुनः चक्रण खर्चीला है, विभिन्न प्रकार के खनिजों के मिश्रण करने में उनके अनुपात में समस्या खड़ी होती है। अन्यथा लोहा, कॉपर, जिंक और अन्य प्रकार के खनिजों का और पुनः चक्रण ज्यादा किया जाता।
- **कम से कम निर्यात**– निर्यात कम से कम किया जाए तथा मूल्य बढ़ाकर उत्पादों का निर्यात किया जाए।

  अपने खनिज संसाधनों को सुनियोजित एवं सतत् पोषणीय ढंग से प्रयोग करने के लिए एक तालमेल युक्त प्रयास करना होगा। दुर्लभ कोटि के अयस्कों का कम लागतों पर प्रयोग करने के लिए उन्नत प्रौद्योगिकियों का सतत् विकास करते रहना होगा। धातुओं का पुनः चक्रण, रद्दी धातुओं का प्रयोग तथा अन्य प्रतिस्थापनाओं का उपयोग भविष्य में हमारे खनिज संसाधनों के संरक्षण के उपाय हैं।

इनके बारे में जानें (Know the Terms)

- **लौहयुक्त खनिज (Ferrous Minerals) :** इन खनिजों में लौह का विस्तार (मिश्रण) होता है, उदाहरण– लौह अयस्क, मैंग्नीज आदि।
- **अलौह खनिज (Non-Ferrous Minerals) :** इन खनिजों में लौह का विस्तार (मिश्रण) नहीं होता है। जैसे— कॉपर, एल्यूमीनियम इत्यादि।
- **धात्विक खनिज (Metallic Minerals) :** इन खनिजों के अन्तर्गत धातु का विस्तार होता है; जैसे– लौह अयस्क, टिन इत्यादि।
- **अधात्विक खनिज (Non-Metallic Minerals) :** इन खनिजों में धातु का विस्तार (मिश्रण) नहीं होता है। जैसे–अभ्रक, नमक आदि।

प्रकरण (TOPIC)-3
ऊर्जा संसाधन—प्रकार और परंपरागत स्रोत
(Power Resources-Types and Conventional Sources)

त्वरित समीक्षा (Revision Notes)

- **ऊर्जा संसाधन**– किसी कार्य को करने के लिए ऊर्जा चाहिए इसे शक्ति भी कहते हैं। मापने की आधुनिक इकाई 'वाट' है। सभी क्रियाकलापों के लिए ऊर्जा आवश्यक है। इसकी आवश्यकता खाना बनाने, प्रकाश व ताप उपलब्ध कराने, वाहन तथा उद्योगों में मशीनों को चलाने के लिए होती है।
- **ऊर्जा–शक्ति का साधन**– शक्ति का प्रमुख साधन ऊर्जा है जो हमें जीवाश्म ईंधन जैसे–कोयला, पेट्रोलियम, प्राकृतिक गैस, यूरेनियम, गिरते हुए पानी, सूर्य, पवन आदि से मिलती है। वायु, सूर्य की किरणें और गिरता हुआ पानी ऊर्जा को विद्युत में बदलता है, जबकि अन्य जैसे कोयला, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस को सीधे तौर पर गाड़ियों और मशीनों के संचालन में प्रयोग किया जाता है। जीवाश्म ईंधनों को जलाना पड़ता है, उनसे बहुत सारी गैसें प्राप्त होती है और उनसे जो रद्दी (waste) प्राप्त होती हैं वे पर्यावरण को नुकसान पहुँचाती

है। 2/5 वैश्विक ऊर्जा तेलों को जलाने (उपयोग) से प्राप्त होती है तथा शेष ऊर्जा कोयला और गैस के उपयोग से मिलती है।

- **विद्युत**– विद्युत तीन तरीकों से प्राप्त होती है– जल विद्युत, तापीय विद्युत व यूरेनियम विद्युत।
- **कोयला**– कोयला ऊर्जा का प्रमुख स्त्रोत है, इसलिए इसे "उद्योगों की माता" अथवा 'काला सोना' के नाम से जाना जाता है। कोयला औद्योगिक क्रांति का आधार था। लोहा व इस्पात उद्योग और रासायनिक उद्योगों में इसका प्रयोग कच्चे माल के रूप में किया जाता है। तापीय विद्युत पैदा करने में यह एक प्रमुख ईंधन है। कोयला उत्पादन में विश्व में भारत का सातवाँ स्थान है।
- **कोयला के प्रकार**– कोयला निम्न चार रूपों (प्रकार) में पाया जाता है–
- **एन्थ्रेसाइट**– इसमें 80 प्रतिशत कार्बन, कठोर, काला एवं ठोसपन लिए होता है। यह केवल जम्मू एवं कश्मीर में पाया जाता है। यह उच्चतम गुणों वाला कठोर (हार्ड) कोयला होता है।
- **बिटुमिनस**– इसमें 60-80 प्रतिशत तक कार्बन होता है, वाणिज्यिक उपयोग में इसका सर्वाधिक उपयोग होता है।
- **लिग्नाइट**– इसमें 60 प्रतिशत तक कार्बन होता है, यह मुलायम होने के साथ अधिक नमीयुक्त होता है। इसे 'भूरा कोयला' के नाम से भी जाना जाता है।
- **पीट**– इसमें 50 प्रतिशत कार्बन होता है और यह लकड़ी की तरह जलता है।
- **पेट्रोलियम**– यह तरल जीवाश्य ईंधन है, जिसे जमीन पर तेल के कुँओ को खोदकर ड्रिल करके अथवा समुद्री क्षेत्र से लाया जाता है। इस कच्चे तेल को परिवहन द्वारा शोधनशालाओं को पहुँचाया जाता है जहाँ इन्हे गैसों व पेट्रोलरसायनों में बदलकर शुद्ध किया जाता है। तेल शोधन शालाएँ– संश्लेषित वस्त्र, उर्वरक तथा असंख्य रसायन उद्योगों में एक नोड़ीय बिंदु का काम करती हैं। शोधन शालाएँ ताप, प्रकाश, मशीनों को चलाने वाहनों को चलाने, चिकने तेल (Lubricants) और कच्चा माल प्लास्टिक बनाने व रसायन आदि बनाने के लिए उपलब्ध कराती है।
- **प्राकृतिक गैस**– प्राकृतिक गैस एक महत्त्वपूर्ण स्वच्छ ऊर्जा संसाधन है जो पेट्रोलियम के साथ अथवा अलग भी पाई जाती है। इसे आसानी से पेट्रोलियम के कुँओ से प्राप्त किया जा सकता है। ऊर्जा व उर्वरक उद्योग प्राकृतिक गैस के प्रमुख प्रयोक्ता हैं। कार्बन डाई–ऑक्साइड के कम उत्सर्जन के कारण प्राकृतिक गैस को पर्यावरण–अनुकूल माना जाता है।

इन्हे भी जानें (Know the Terms)

- **ऊर्जा के नवीकरणीय संसाधन :** इस संसाधनों की भरपाई की जा सकती है इनका प्रयोग करने के बाद पुन: प्रयोग किया जा सकते है जैसे – सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा आदि।
- **ऊर्जा के अनवीकरणीय संसाधन :** ऊर्जा के ये संसाधन समाप्त होने वाले हैं प्रयोग में आने के बाद न तो इनकी क्षति पूर्ति की जा सकती है और न ही इनका दुबारा प्रयोग किया जा सकता है जैसे– जीवाश्म ईंधन आदि।

प्रकरण (TOPIC)-4
गैर परंपरागत संसाधन एवं ऊर्जा संसाधनों का संरक्षण
(Non-Convential Resources and the Conservation of Power Resources)

त्वरित समीक्षा (Revision Notes)

- **ऊर्जा के गैर परंपरागत स्त्रोत**– निम्नलिखित छ: गैर परंपरागत ऊर्जा के मुख्य स्त्रोत है– सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, ज्वारीय ऊर्जा, जैविक ऊर्जा, अवशिष्ट पदार्थ जनित ऊर्जा एवं जल विद्युत।
- ऊर्जा संसाधनों का संरक्षण—

(i) ऊर्जा आर्थिक विकास की बुनियादी आवश्यकता है। अर्थव्यवस्था के प्रत्येक क्षेत्रक में विकास के लिए ऊर्जा निवेश की आवश्यकता है।

(ii) ऊर्जा के सभी संस्थान सीमित है।

(iii) औद्योगीकरण, आधुनिकीकरण व शहरीकरण के लिए ऊर्जा की खपत सभी रूपों में निरन्तर बढ़ रही है।

- हम ऊर्जा संसाधनों का कैसे संरक्षण कर सकते है?

(i) ऊर्जा के विकास के सतत् पोषणीय मार्गों को विकसित करने की तुरंत आवश्यकता है। ऊर्जा का विकास पर्यावरण की कीमत पर नहीं किया जाए अथवा भविष्य की पीढ़ी की आवश्यकताओं की भी अनदेखी नहीं हो।

(ii) हमें ऊर्जा के सीमित संसाधनों के न्यायसंगत उपयोग के लिए सावधानी पूर्ण उपागम बनाना होगा।

(iii) खनिजों की बर्बादी कम से कम करनी होगी।

(iv) ऊर्जा संसाधनों को शोषण से बचाने के लिए आधुनिक तकनीकों का प्रयोग करना होगा।

(v) ऊर्जा संसाधनों का निर्यात कम–से–कम करना होगा।

(vi) ऊर्जा संसाधनों को बचाने के लिए उसके विकल्पों का प्रयोग करना होगा।

(vii) ऊर्जा संसाधनों के पुन: चक्रण को बढ़ावा देना होगा।

इनके बारे में जाने (Know the Terms)

- **सौर ऊर्जा :** यह सूर्य से मिलने वाली रोशनी व ताप ऊर्जा है।
- **पवन ऊर्जा :** यह वह ऊर्जा है जो बहने वाली हवा की सहायता से बड़ी मात्रा में बनती है।
- **बायो गैस :** ग्रामीण इलाकों में झाड़ियों, कृषि अपशिष्ट, पशुओं और मानव जनित अपशिष्ट के उपयोग से घरेलू उपयोग हेतु बायो गैस उत्पन्न की जाती है।
- **भू–तापीय ऊर्जा :** पृथ्वी के आंतरिक भागों से ताप का प्रयोग कर उत्पन्न की जाने वाली विद्युत को भू–तापीय ऊर्जा कहते हैं।

❑❑

अध्याय – 5 विनिर्माण उद्योग

प्रकरण (TOPIC)-1

विनिर्माण उद्योग–परिचय, अवस्थिति और वर्गीकरण

Manufacturing- Introduction, Location and classification.

त्वरित समीक्षा (Revision Notes)

- कच्चे पदार्थ को मूल्यवान उत्पाद में परिवर्तित कर अधिक मात्रा में वस्तुओं के उत्पादन को विनिर्माण या वस्तु निर्माण कहा जाता है। उद्योग जो प्राथमिक माल से परिसज्जित (Finished) माल तैयार करते हैं वे द्वितीयक क्षेत्रक के विनिर्माण उद्योग हैं।
- विनिर्माण उद्योग चारों ओर से एक अत्यावश्यक भूमिका का निर्वहन करता है विशेष रूप से देश के आर्थिक विकास में। किसी देश की आर्थिक उन्नति विनिर्माण उद्योगों के विकास से मापी जाती है।
- भारत पारंपरिक रूप से एक कृषि प्रधान देश है। विनिर्माण उद्योग न केवल कृषि के आधुनिकीकरण में सहायक हैं वरन् द्वितीयक व तृतीयक सेवाओं में रोजगार उपलब्ध कराकर कृषि पर हमारी निर्भरता को कम करते है। इससे लोगों की कृषि पर निर्भरता कम होती हैं। हमें अपने उत्पादों को विदेशों में निर्यात करने के अवसर मिलते हैं जिससे अपेक्षित विदेशी मुद्रा की प्राप्ति होती है। कृषि तथा उद्योग एक–दूसरे को आपस में लाभ पहुँचाते हैं।

अवस्थिति एवं वर्गीकरण–

- उद्योगों की स्थापना के लिए कच्चे माल की उपलब्धता, श्रमिक, पूँजी, शक्ति के साधन तथा बाजार आदि की उपलब्धता उद्योगों के लिए आदर्श स्थिति है।
- फलस्वरूप विनिर्माण उद्योग की स्थापना के लिए वही स्थान उपयुक्त है जहाँ ये कारक उपलब्ध हों अथवा जहाँ इन्हें कम कीमत पर उपलब्ध कराया जा सके।
- औद्योगिक प्रक्रिया के प्रारंभ होने के साथ–साथ नगरीकरण प्रारंभ होता है। कभी–कभी उद्योग शहरों में या उनके निकट लगाए जाते हैं। इस प्रकार औद्योगीकरण और नगरीकरण साथ–साथ चलते हैं। नगर उद्योगों को बाजार तथा सेवाएँ ; जैसे–बैंकिग, बीमा, परिवहन, श्रमिक तथा वित्तीय सलाह आदि उपलब्ध कराते हैं। नगर केन्द्रों द्वारा दी गई सुविधाओं से लाभांवित, कई बार बहुत से उद्योग नगरों के आस पास ही केन्द्रित हो जाते हैं जिसे "समूहन बचत" कहा जाता है। ऐसे स्थानों पर धीरे–धीरे बड़ा औद्योगिक समूहन स्थापित हो जाता है।
- स्वतंत्रता से पहले अधिकतर विनिर्माण उद्योगों की स्थापना दूरस्थ देशों से व्यापार पर आधारित थी ; जैसे– मुंबई, कोलकाता व चेन्नई आदि। परिणामस्वरूप कुछ एक नगर औद्योगिक केन्द्र के रूप में उभरे जो ग्रामीण कृषि पृष्ठ प्रदेश (Hinterland) से घिरे थे। किसी

उद्योग की अवस्थिति का निर्धारण उसकी न्यूनतम उत्पादन लागत से निर्धारित होता है। सरकारी नीतियों तथा निपुण श्रमिकों की उपलब्धता भी उद्योगों की अवस्थिति को प्रभावित करती है।

इनके बारे में जाने (Know the Terms)

- **निर्माण (उत्पादन) (Manufacturing)-** कच्चे माल से बड़ी संख्या में उत्पादन करना जिसमें वस्तु अथवा पुर्जे तैयार अवस्था में होते हैं, वह निर्माण है।
- **एन. एम. सी. सी (NMCC)-** द नेशनल मैन्यूफैक्चरिंग कम्पीटिटिवनेस कांउसिल
- **समूहन बचत (Agglomeration economies)-** नगर केन्द्रों द्वारा दी गई सुविधाओं से लाभांवित, कई बार बहुत से उद्योग नगरों के आस–पास ही केन्द्रित हो जाते हैं जिन्हें 'समूहन बचत' कहा जाता है।
- **ठेकेदार (Entrepreneur)-** एक प्रर्वतक के नए विचार जो व्यापार की शुरुआत करता है, जिसमें वह लाभ पाने की उम्मीद के साथ वित्तीय जोखिम भी उठाता है।

प्रकरण (TOPIC) –2

कृषि आधारित उद्योग (Agro-based Industries)

त्वरित समीक्षा (Revision Notes)

- उद्योगों का वर्गीकरण–

  उद्योगों को अलग–अलग समूहों में वर्गीकृत किया जा सकता है। उद्योगों का वर्गीकरण निम्न प्रकार से किया जा सकता है–

  श्रमिकों की उपलब्धता के आधार पर–

  (i) बृहत् स्तर के उद्योग **(ii)** मध्यम स्तर **(iii)** लघु स्तर के उद्योग
- कच्चे तथा तैयार माल की मात्रा व भार के आधार पर—

  (i) भारी उद्योग, जैसे लोहा व इस्पात **(ii)** हल्के उद्योग, जैसे-विद्युतीय उद्योग
- स्वामित्व के आधार पर—

  (i) निजी क्षेत्र के उद्योग **(ii)** सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योग **(iii)** संयुक्त क्षेत्र के उद्योग **(iv)** सहकारी क्षेत्र के उद्योग
- कच्चे माल के स्रोत के आधार पर–

  (i) कृषि आधारित उद्योग **(ii)** खनिज आधारित उद्योग **(iii)** वन आधारित उद्योग
- अनेक प्रकार के उद्योग–

  उद्योगों को निम्न वर्गों में भी विभाजित किया जाता है–

  (i) ग्रामीण उद्योग **(ii)** कुटीर उद्योग **(iii)** उपभोक्ता उद्योग **(iv)** गौण उद्योग **(v)** बुनियादी उद्योग **(vi)** पूँजी अधिकता उद्योग **(vii)** श्रमिक अधिकता उद्योग

इनके बारे में जाने (Know the Terms)

- **बृहत् स्तर उद्योग :** ऐसे उद्योग जिनकी प्रत्येक इकाई में बड़ी संख्या में कर्मचारी व श्रमिक काम करते हैं, जैसे—सूती वस्त्र उद्योग।
- **सार्वजनिक क्षेत्र उद्योग :** ऐसे उद्योग जिनका स्वामित्व व संचालन सरकारी एजेंसियों द्वारा किया जाता है।
- **कृषि आधारित उद्योग :** ऐसे उद्योग जो कच्चे माल कृषि उत्पादों से प्राप्त करते हैं, जैसे—चीनी उद्योग।
- **खनिज आधारित उद्योग :** ऐसे उद्योग खनिजों व धातुओं का उपयोग कच्चे माल के रूप में करते हैं, जैसे- लोहा एवं इस्पात उद्योग।
- **बुनियादी उद्योग :** ऐसे उद्योग जो अपने उत्पादों के लिए अन्य उद्योगों पर निर्भर रहते हैं, जैसे–लोहा एवं इस्पात उद्योग।

प्रकरण (TOPIC) –3
प्रमुख खनिज उद्योग
(Major Mineral Industries)

त्वरित समीक्षा (Revision Notes)

- वे उद्योग जो खनिज व धातुओं को कच्चे माल के रूप में प्रयोग करते है, खनिज आधारित उद्योग कहलाते है। लोहा तथा इस्पात उद्योग एक आधारभूत उद्योग है क्योंकि अन्य सभी भारी, हल्के और मध्यम उद्योग इनसे बनी मशीनरी पर निर्भर है। इस्पात के उत्पादन तथा खपत को प्राय: एक देश के विकास का पैमाना माना जाता है।
- लोहा तथा इस्पात उद्योग के लिए लौह अयस्क कोकिंग कोल तथा चूना पत्थर प्रमुख खनिजों का प्रयोग किया जाता है। इस्पात उद्योगों की आदर्श स्थापना के लिए वे स्थान उपयुक्त है, जहाँ कच्चे माल की उपलब्धता तथा निर्मित माल को बाजार तथा उपभोक्ताओं तक पहुँचाने के लिए भी सक्षम परिवहन के साधन उपलब्ध हों।
- भारत इस्पात का विनिर्माण कर संसार में कच्चा इस्पात उत्पादकों में नवें के स्थान पर हैं। भारत स्पंज (sponge) लौह का सबसे बड़ा उत्पादक है। भारत, संसार में इस्पात का सबसे बड़ा निर्यातक है।
- इस्पात के अधिक उत्पादन के बावजूद भी भारत में प्रति वर्ष प्रति व्यक्ति खपत केवल 63 किलोग्राम है। इस समय भारत में 10 मुख्य संकलित उद्योग तथा बहुत से छोटे इस्पात संयत्र है। संकलित इस्पात संयत्र एक बड़ा संयत्र होता है। जिसमें कच्चे माल को एक स्थान पर एकत्रित करने से लेकर इस्पात बनाने उसे ढालने और उसे आकार देने तक की प्रत्येक क्रिया की जाती है। छोटे इस्पात संयत्रो में विद्युत भट्टी, रद्दी इस्पात व स्पंज आयरन का प्रयोग होता है। इनमें री-रोलर्स होते है जिनमें इस्पात सिल्लियों का प्रयोग होता है। ये हल्के स्टील या निर्धारित अनुपात के मृदु व मिश्रित इस्पात का उत्पादन करते है।
- आज चीन इस्पात का सबसे बड़ा उत्पादक है। इस्पात की सर्वाधिक खपत वाला देश भी चीन ही है। वर्ष 2004 में भारत इस्पात का सबसे बड़ा निर्यातक था जिसकी अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में हिस्सेदारी 2.25 प्रतिशत थी। छोटा नागपुर के पठारी क्षेत्र में अधिकांश लोहा तथा इस्पात उद्योग संकेन्द्रित है। इस प्रदेश में इस उद्योग के विकास के लिए अधिक अनुकूल सापेक्षित परिस्थितियाँ है। इनमें लौह अयस्क की कम लागत, उच्च कोटि के कच्चे माल की निकटता, सस्ते श्रमिक और स्थानीय बाजार में इनके माँग की विशाल संभाव्यता सम्मिलित है। यद्यपि भारत संसार का एक महत्वपूर्ण लौह इस्पात उत्पादक देश है। तथापि इनका संपूर्ण संभाव्य विकास नहीं हो पाया है। इसके निम्न कारण है–(क) उच्च लागत तथा कोकिंग कोयले की सीमित उपलब्धता, (ख) कम श्रमिक उत्पादकता, (ग) ऊर्जा की अनियमित पूर्ति, (घ) अविकसित अवसंरचना। लोहा तथा इस्पात उद्योग में भारत के अच्छे भविष्य के लिए इस्पात उद्योग को अधिक स्पर्धावान बनाने के लिए अनुसंधान और विकास के संसाधनों को नियत करने की आवश्यकता है।

इनके बारे में जाने (Know the Terms)

- **कार्बनिक रसायन (Organic Chemicals) :** कार्बनिक रसायनों में पेट्रोरसायन शामिल है। जो कृत्रिम रबर, प्लास्टिक, रंजक पदार्थ, दवाईयाँ, औषध रसायनों के बनाने में प्रयोग किए जाते है।
- **अकार्बनिक रसायन (Inorganic Chemicals) :** अकार्बनिक रसायनों में सलफ्यूरिक अम्ल (उर्वरक, कृत्रिम वस्त्र, प्लास्टिक, गोंद, रंग रोगन, डाई आदि के निर्माण में प्रयुक्त, नाइट्रिक अम्ल, क्षार, सोडा ऐश Soda Ash) (काँच, साबुन, शोध का अपयार्जक, कागज में प्रयुक्त होने वाले रसायन) तथा कॉस्टिक सोडा आदि शामिल है।

प्रकरण (TOPIC) –4
औद्योगिक प्रदूषण तथा पर्यावरण निम्नीकरण–
(Industrial Pollution and Environmental Degradation) :

त्वरित समीक्षा (Revision Notes)

- हमारे प्राकृतिक संसाधनों के प्रदूषण का कारण उद्योग है। पर्यावरणीय निम्नीकरण के लिए उद्योग चार प्रकार के प्रदूषण के रूप में उत्तरदायी है वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, भूमि प्रदूषण अथवा भूमि निम्नीकरण तथा ध्वनि प्रदूषण।

- अधिक अनुपात में अनचाही गैसों की उपस्थिति जैसे सल्फर हाई ऑक्साइड, तथा कार्बन मोनो ऑक्साइड वायु प्रदूषण का कारण है। वायु में निलंबित कणनुमा पदार्थों में ठोस व द्रवीय दोनों ही प्रकार के कण होते हैं जैसे— धूलि, स्प्रे, कुहासा तथा धुँआ। वायु प्रदूषण, मानव स्वास्थय, पशुओं, पौधों, इमारतों तथा पूरे पर्यावरण पर दुष्प्रभाव डालते हैं।
- उद्योगों द्वारा कार्बनिक तथा अकार्बनिक अपशिष्ट पदार्थों के नदी में छोड़ने से जल प्रदूषण फैलता है। जल प्रदूषण के प्रमुख कारक कागज, लुग्दी, रसायन, वस्त्र तथा रंगाई उद्योग, तेल शोधन शालाएँ, चमड़ा उद्योग तथा इलैक्ट्रोप्लेटिंग उद्योग है जो रंग, अपभार्जक, अम्ल, लवण तथा भारी धातुएँ जैसे— सीसा, पारा, कीटनाशक, उर्वरक, कार्बन, प्लास्टिक और रबर सहित कृत्रिम रसायन आदि जल में, वाहित करते है। मुख्य अपशिष्ट पदार्थों में फ्लाई एश, फोस्फो जिप्सम तथा लोहा-इस्पात की अशुद्धियाँ (Slog) है।
- जल प्रदूषण का प्रमुख कारण उद्योग है जैसे— कागज उद्योग, तेल शोधन शालाएँ, टेनरीज व इलैक्ट्रोप्लेटिंग उद्योग आदि है। कारखानों तथा तापघरों से गर्म जल को बिना ठंडा किए ही नदियों तथा तालाबों में छोड़ दिया जाता है, तो जल में तापीय प्रदूषण होता है। जलीय जीवन पर इसका प्रभाव पड़ता है। परमाणु ऊर्जा संयंत्रो के अपशिष्ट व परमाणु शस्त्र उत्पादक कारखानों से कैंसर, जन्मजात विकार तथा अकाल प्रसव जैसी बीमारियाँ होती है। मृदा व जल प्रदूषण आपस में संबंधित है। मलबे का ढेर विशेषकर काँच, हानिकारक रसायन, औद्योगिक बहाव, पैकिंग, लवण तथा कूड़ा-कर्कट, मृदा को अनुपजाऊ बनाता है। वर्षा जल के साथ ये प्रदूषक जमीन से रिसते हुए भूमिगत जल तक पहुँचकर उसे भी प्रदूषित कर देते हैं।
- ध्वनि प्रदूषण से भिन्नता तथा उत्तेजना ही नही वरन् श्रवण असक्षमता दृश्यगति, रक्त चाप तथा अन्य कायिक व्यथाएँ भी बढ़ती हैं। अनचाही ध्वनि, उत्तेजना मानसिक चिंता का स्रोत है। औद्योगिक मशीनरी, निर्माण कार्य, कारखानों के उपकरण, जेनरेटर, लकड़ी काटने के कारखाने, गैस यांत्रिकी, विद्युत ड्रिल आदि ध्वनि प्रदूषण के उत्तरदायी कारक है। पर्यावरणीय निम्नीकरण की रोकथाम के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण कदम है कि औद्योगिक अपशिष्ट व गर्म पानी को नदी व झीलों में प्रवाहित करने से पहले उसका उचित शोधन किया जाना चाहिए।
- **अपशिष्ट जल का शोधन किया जाता है—**
  - **(i)** यांत्रिक साधनों द्वारा प्राथमिक शोधन। इसमें अपशिष्ट पदार्थों की छँटाई, उनके छोटे-छोटे टुकड़े करना ढकना तथा तलहट जमाव आदि सम्मिलित हैं।
  - **(ii)** जैविक प्रक्रियाओं द्वारा द्वितीय शोधन।
  - **(iii)** जैविक, रासायनिक तथा भौतिक प्रक्रियाओं द्वारा तृतीयक शोधन। इसमें अपशिष्ट जल को पुनर्चक्रण द्वारा पुन: प्रयोग योग्य बनाया जाता है।
- अपशिष्ट जल को पुनर्चक्रण द्वारा पुन: औद्योगिकरण उपयोग में लिया जा सकता है। औद्योगिक प्रयोग के लिए वर्षा जल संग्रहण के द्वारा जल को एकत्रित किया जा सकता है।
- जहाँ भूमिगत जल का स्तर कम है, वहाँ उद्योगों द्वारा इसके अधिक निष्कासन पर कानूनी प्रतिबंध होना चाहिए। वायु में निलंबित प्रदूषण को कम करने के लिए कारखानों में ऊँची चिमनियों, चिमनियों में इलेक्ट्रोस्टैटिक अवक्षेपण, स्क्रबर उपकरण तथा गैसीय प्रदूषण पदार्थों को जड़त्वीय रूप से पृथक करने के लिए उपकरण होना चाहिए। कारखानों में कोयले की अपेक्षा तेल व गैस के प्रयोग से धुँए के निष्कासन में कमी लायी जा सकती है।
- मशीनों व उपकरणों का प्रयोग किया जा सकता है तथा जेनरेटरों में साइलेंसर लगाया जा सकता है। ऐसी मशीनरी का प्रयोग किया जाए जो ऊर्जा सक्षम हों तथा कम ध्वनि प्रदूषण करें। ध्वनि अवशोषित करने वाले उपकरणों के इस्तेमाल के साथ कानों पर शोर नियंत्रण उपकरण भी पहनने चाहिए।
- भारत में राष्ट्रीय ताप विद्युत गृह कारपोरेशन विद्युत प्रदान करने वाला प्रमुख निगम है। इसके पास पर्यावरण प्रबंधनतंत्र के लिए आई एस ओ (ISO) प्रमाणपत्र है। यह निगम प्राकृतिक पर्यावरण और संसाधन जैसे जल, खनिज तेल, गैस तथा ईंधन संरक्षण नीति का हिमायती है तथा इन्हें ध्यान में रखकर ही विद्युत संयंत्रो की स्थापना करता है। ऐसा निम्न उपायों द्वारा संभव है—
  - **(i)** आधुनिक तकनीकी पर आधारित उपकरणों का सही उपयोग करके तथा विद्यमान उपकरणों में सुधार।
  - **(ii)** अधिकतम राख का इस्तेमाल कर अपशिष्ट पदार्थो का न्यूनतम उत्पादन।
  - **(iii)** पारिस्थितिकी संतुलन बनाए रखने के लिए हरित क्षेत्र की सुरक्षा तथा वृक्षारोपण के लिए प्रेरित करना।
  - **(iv)** तरल अपशिष्ट प्रबंधन, राख युक्त जलीय पुनर्चक्रण तथा राख-संग्रह (Ash Pond) प्रबंधन, द्वारा पर्यावरण प्रदूषण को कम करना।
  - **(v)** सभी ऊर्जा संयंत्रो का पारिस्थितिकीय रूप से मॉनीटर तथा समीक्षा करना एवं ऑन लाइन आंकड़ों का प्रबंधन करना।

इनके बारे में जाने (Know the Terms)

- **वायु प्रदूषण (Air Pollution) :** अधिक अनुपात में अनचाही गैसों की उपस्थिति जैसे सल्फर डाइऑक्साइड तथा कार्बन मोनोऑक्साइड वायु प्रदूषण का कारण है।

- **जल प्रदूषण (Water Pollution) :** उद्योगों द्वारा कार्बनिक तथा अकार्बनिक अपशिष्ट पदार्थों के नदी में छोड़ने से जल प्रदूषण फैलता है।
- **तापीय प्रदूषण (Thermal Pollution) :** जब कारखानों तथा तारघरों से गर्म जल को बिना ठंडा किए ही नदियों तथा तालाबों में छोड़ दिया जाता है, तो जल में तापीय प्रदूषण होता है।
- **ध्वनि प्रदूषण (Noise Pollution) :** ध्वनि प्रदूषण के प्रमुख कारण औद्योगिक तथा निर्माण कार्य, कारखानों के उपकरण, जेनरेटर, लकड़ी चीरने के कारखानों, गैस यांत्रिकी तथा विद्युत ड्रिल आदि हैं।

❑❑

अध्याय – 6 राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की जीवन रेखाएँ

प्रकरण (TOPIC)-1
परिवहन का अर्थ
(Meaning of Transportation)

त्वरित समीक्षा (Revision Notes)

- वस्तुओं को आपूर्ति स्थल से माँग स्थल तक पहुँचाने (परिवहन) वाले लोगों को व्यापारी कहते हैं।
- सक्षम परिवहन के साधन तीव्र विकास हेतु पूर्व अपेक्षित है।
- वस्तुओं तथा सेवाओं का लाना-ले जाना पृथ्वी के तीन महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों पर किया जाता है– भूमि परिवहन, जल परिवहन और वायु परिवहन।
- भूमि परिवहन में सड़क परिवहन और रेलवे तथा पाइप लाइन का प्रयोग द्रव पदार्थों व गैसों को लंबी दूरी तक पहुँचाने में किया जाता है।
- जल परिवहन को आंतरिक जल परिवहन व समुद्री परिवहन में वर्गीकृत किया जा सकता है। आंतरिक जल परिवहन, समुद्री किनारे के दो आंतरिक पत्तनों के बीच आंतरिक जल परिवहन होता है। समुद्री परिवहन एक देश से दूसरे देश में वस्तुओं को भेजने का काम करता है। वायु परिवहन को भी घरेलू (आंतरिक) और अंतर्राष्ट्रीय परिवहन में वर्गीकृत किया जा सकता है। निजी व सरकारी उड़ाने वायु परिवहन के माध्यम से भारत के विभिन्न शहरों को आपस में जोड़ती हैं। अंतर्राष्ट्रीय वायु परिवहन भारत को संसार के विभिन्न हिस्सों से जोड़ता है।
- आधुनिक विकसित विज्ञान व प्रौद्योगिकी ने संसार में कोई ऐसा स्थान नही छोड़ा है जहाँ पहुँचा नहीं जा सकता है। आज संसार अपने में एक छोटा सा स्थान लगता है।
- व्यापार एक-दूसरे के विचारों का आदान-प्रदान तथा लोगों को एक-दूसरे से जोड़ना चाहता है। ऐसा तब हुआ है जब से संचार सेवाएँ आई हैं। परिवहन लोगों व वस्तुओं को भौतिक रूप से एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाता है, जबकि संचार सेवाएँ लोगों को बिना वास्तविक परिवहन के विभिन्न स्थानों से एक-दूसरे के साथ जोड़ती है।
- संचार के कुछ सामान्य अर्थ हैं जैसै—रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा, समाचारपत्र, इंटरनेट, फैक्स तथा टेलीफोन सेवाएँ हैं। आधुनिक संचार तथा परिवहन के साधन हमारे देश और इसकी आधुनिक अर्थव्यवस्था को संचालित करते हैं। अत: यह स्पष्ट हैं कि सघन व सक्षम परिवहन का जाल तथा संचार के साधन आज विश्व, राष्ट्र व स्थानीय व्यापार हेतु पूर्व अपेक्षित हैं।
- भारत में पाँच प्रकार की परिवहन व्यवस्था है—सड़क परिवहन, रेलवे, पाइपलाइन, जल मार्ग तथा वायु मार्ग।
- **सड़क परिवहन**—सड़कों का निर्माण मुगल शासन काल से हुआ है। शेर शाह सूरी ने ग्रांड ट्रंक सड़क का निर्माण कराया जो चितागांग (अब बांग्लादेश में है), पूर्व में से पेशावर (अब पाकिस्तान में है) पश्चिम तक है।
- **रेलवे परिवहन**—भारत में रेलवे नेटवर्क 150 साल पुराना है। रेलवे लाइन की कुल लंबाई लगभग 1,15,000 किमी. है। भारतीय रेल परिवहन की मार्गीय लंबाई 66,687 किमी. है। एशिया में भारत का रेल नेटवर्क में दूसरा स्थान है तथा छठवाँ सबसे बड़ा नेटवर्क अमेरिका, रूस, कनाडा, जर्मनी तथा चीन के बाद है। भारतीय रेल प्रतिवर्ष 40,000 लाख यात्री 4,000 लाख टन माल ढोती है। रेलवे के पास 9,213 रेल इंजन, 54,506 यात्री सेवा वाहन, 6,899 अन्य कोच वाहन तथा 2,51,256 माल गाड़ियाँ वाहन 31 मार्च, 2016 तक थे।
- **पाइपलाइन**—पाइपलाइन का शुरुआती उपयोग पानी के परिवहन के लिए किया जाता था और अब इसका उपयोग कच्चा तेल, पेट्रोल उत्पाद तथा प्राकृतिक गैस के परिवहन के लिए किया जाता है।

- **आंतरिक जल परिवहन**—आंतरिक जल परिवहन की कुल लंबाई 14,500 किमी. है। निम्न जल मार्गों को भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय जल मार्ग घोषित किया गया है।
  (i) हल्दिया तथा इलाहाबाद के मध्य गंगा जल मार्ग जो 1620 किमी. लंबा है—नौगम्य जल मार्ग संख्या 1 है।
  (ii) सदिया व धुबरी के मध्य 891 किमी. लंबा ब्रह्मपुत्र नदी जल मार्ग नौगम्य जल मार्ग संख्या—2 है।
- **वायुमार्ग**—वायु परिवहन तीव्रतम, आरामदायक व प्रतिष्ठित परिवहन का साधन हैं। 1853 में वायु परिवहन का राष्ट्रीकरण कर दिया गया।

इनके बारे में जानें— (Know the Terms)

- **अन्तर्राष्ट्रीय हवाई पत्तन :** दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, चेन्नई, तिरुवन्तपुरम, बैंगलूरु, अमृतसर, हैदराबाद, अहमदाबाद, पणजी, गुहावटी और कोचीन
- **आंतरिक हवाई पत्तन :** देश में 63 आंतरिक हवाई पत्तन हैं। हवाई अड्डों का प्रबंधन एयरपोर्ट अथॉरिटी ऑफ इंडिया द्वारा किया जाता है।

तथ्यों को जाने— (Know the Facts)

- **समुद्री पत्तन :** भारत में 12 प्रमुख, 200 मध्यम व छोटे समुद्री पत्तन है।
- **पश्चिमी तट के प्रमुख पत्तन :** कांडला, मुंबई, जवाहर लाल नेहरू, मारमागाओ, न्यू मंगलौर और कोचीन।
- **पूर्वी तट के प्रमुख पत्तन :** कोलकाता, हल्दिया, पारादीप, विशाखापत्तनम, चेन्नई, एन्नोर और तूतीकोरिन
- **सबसे बड़ा पत्तन :** मुंबई

प्रकरण (TOPIC) –2
संचार का अर्थ (Meaning of Communication)

त्वरित समीक्षा (Revision Notes)

- जब से मानव पृथ्वी पर अवतरित हुआ है, उसने विभिन्न संचार माध्यमों का प्रयोग किया है। लेकिन आधुनिक समय में बदलाव की गति तीव्र है। संदेश प्राप्तकर्ता या संदेश भेजने वाले गतिविहीन रहते हुए भी लंबी दूरी का संचार बहुत आसान है।
- संचार दो प्रकार को होता है—निजी संचार और जनसंचार। निजी संचार वह है जिसमें दो और दो से अधिक व्यक्तियों का समूह होता है जो आपस में संचार करते है। निजी पत्र, ई-मेल और दूरभाषा वार्ता (Phone Calls) आदि निजी संचार के उदाहरण है।
- जन संचार में अनगिनत लोगों के नम्बर होते है तथा जन संचार भौगोलिक रूप से काफी बृहत् क्षेत्र में फैला हुआ होता है। रेडियों, दूरदर्शन, सिनेमा, समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ और इंटरनेट आदि जन संचार के उदाहरण है।
- भारत का डाक संचार तंत्र विश्व का वृहत्तम है। डाक विभाग पार्सल, निजी पत्र व्यवहार तथा तार आदि को संचालित करता है। कार्ड व लिफाफा बंद चिट्ठी पहली श्रेणी को डाक सामग्री समझी जाती है तथा विभिन्न स्थानों पर वायुयान व सड़क परिवहन द्वारा पहुँचाए जाते है।
- द्वितीय श्रेणी की डाक में रजिस्टर्ड पैकेट, किताबें, अखबार तथा पत्रिकाएँ शामिल है। ये धरातलीय डाक द्वारा पहुँचाए जाते हैं तथा इनके लिए स्थल व जल परिवहन का प्रयोग किया जाता है।
- बड़े शहरों व नगरों में डाक संचार में शीघ्रता हेतु, हाल ही में छः डाक मार्ग बनाए गए हैं। इन्हें राजधानी मार्ग, मेट्रो चैनल, ग्रीन चैनल, व्यापार (Business) चैनल भारी चैनल तथा दस्तावेज चैनल के नाम से जाना जाता है।
- दूर संचार तंत्र में भारत एशिया महाद्वीप में अग्रणी है। 37,565 दूरभाषा केन्द्र पूरे देश में कार्य कर रहै है। नगरीय क्षेत्रों के अतिरिक्त, भारत के दो तिहाई से अधिक गाँव एस.टी.डी. दूरभाषा सेवा से जुड़े हैं।
- सूचनाओं के प्रसार को आधार स्तर से उच्च स्तर तक समृद्ध करने हेतु भारत सरकार ने देश के प्रत्येक गाँव में चौबीस घंटे एस.टी.डी. सुविधा के विशेष प्रबंध किये हैं।
- पूरे देश भर में एस.टी.डी. की दरों को भी नियमित किया है। यह सब सूचना, संचार व अंतरिक्ष प्रौद्यागिकी के समंवित विकास से ही संभव हो पाया है।
- जन संचार, मानव को मनोरंजन के साथ बहुत से राष्ट्रीय कार्यक्रमों व नीतियों के विषय में जागरूक करता है। इसमें रेडियों, दूरदर्शन, समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ, किताबें तथा चलचित्र शामिल हैं।

- आकाशवाणी (ऑल इंडिया रेडियो) राष्ट्रीय क्षेत्रीय तथा स्थानीय भाषा में देश के विभिन्न भागों में अनेक वर्गों के व्यक्तियों के लिए विविध कार्यक्रम प्रसारित करता है। दूरदर्शन देश का राष्ट्रीय समाचार व संदेश माध्यम है तथा विश्व के वृहतम संचार तंत्र में एक है। यह विभिन्न आयु वर्ग के व्यक्तियों हेतु मनोरंजक, ज्ञानवर्धक, व खेल-जगत संबंधी कार्यक्रम प्रसारित करता है।
- भारत में वर्षभर अनेक समाचार-पत्र तथा सामयिक पत्रिकाएँ प्रकाशित की जाती हैं। ये पत्रिकाएँ सामयिक होने के नाते (जैसे मासिक, साप्ताहिक आदि) कई प्रकार की हैं। समाचार-पत्र लगभग 100 भाषाओं तथा बोलियों में प्रकाशित होते हैं। हमारे देश में सर्वाधिक समाचार-पत्र हिन्दी भाषा में प्रकाशित होत हैं तथा इसके बाद अंग्रेज़ी व उर्दू के समाचार-पत्र आते हैं।
- भारत विश्व में सर्वाधिक चलचित्रों का उत्पादक भी है। यह कम अवधि वाली फिल्में, वीडियो, फीचर फिल्में बनाता है।
- भारतीय व विदेशी फिल्मों को प्रमाणित करने का अधिकार केन्द्रीय फिल्म बोर्ड को है।

इनके बारे में जानें— (Know the Terms)

- **जनसंचार (Communication) :** बोलकर, लिखकर अथवा अन्य माध्यमों जैसे— टेलीफोन, पत्र दूरदर्शन आदि के द्वारा सूचनाओं के आदान-प्रदान को जनसंचार कहते हैं।
- **निजी संचार (Personal communication) :** निजी संचार के अंतर्गत पोस्टकार्ड, पत्र, टेलीग्राम, टेलीफोन और इंटरनेट आते हैं।
- **जन संचार (Mass communication) :** जन संचार के अंतर्गत हाथ की किताबें, समाचार-पत्र, परिकाएँ, समाचार, रेडियो, दूरदर्शन और फिल्में आते हैं। ये दो प्रकार के होते हैं (i) प्रिंट मीडिया (ii) इलेक्ट्रोनिक मीडिया।
- **निजी लिखा संचार (Personal Written Communication) :** हस्तलिखित चिट्ठियों द्वारा किए गए संचार को निजी लिखा संचार कह सकते हैं। भारतीय डाक संचार के भारत में डेढ़ लाख डाकघर हैं।
- **प्रथम श्रेणी डाक (First class mark) :** डाक जो हवाई माध्यम से एक स्टेशन से दूसरे स्टेशन को जाते हैं।
- **द्वितीय श्रेणी डाक (Second class mark) :** डाक जो भूमि परिवहन और जल परिवहन के द्वारा पहुँचाए जाते हैं।

प्रकरण (TOPIC) –3

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार एवं पर्यटन (International Trade and Tourism)

त्वरित समीक्षा (Revision Notes)

- राज्यों व देशों में व्यक्तियों के बीच वस्तुओं का आदान-प्रदान व्यापार कहलाता है। दो देशों के मध्य यह व्यापार अंतर्राष्ट्रीय व्यापार कहलाता है। स्थानीय व्यापार शहरों, कस्बों व गाँवों में होता है। राज्यस्तरीय व्यापार दो या अधिक राज्यों के मध्य होता है।
- एक देश के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की प्रगति उसके आर्थिक वैभव का सूचक है। इसीलिए इसे राष्ट्र का आर्थिक बैरोमीटर भी कहा जाता है।
- आयात तथा निर्यात व्यापार के घटक हैं। आयात व निर्यात का अंतर ही देश के व्यापार संतुलन को निर्धारित करता है।
- अगर निर्यात मूल्य आयात मूल्य से अधिक हो तो अनुकूल व्यापार संतुलन कहते हैं। इसके विपरीत निर्यात की अपेक्षा अधिक आयात असंतुलित व्यापार कहलाता है।
- पिछले कुछ वर्षों से निर्यात वाली वस्तुएँ निम्न है—कृषि वर्षों से संबधित उत्पाद, खनिज व अयस्क, रत्न व जवाहरात, रसायन व संबंधित उत्पाद, इंजीनियरिंग सामान तथा पेट्रोलियम उत्पाद आदि।
- भारत में आयातित वस्तुओं में पेट्रोलियम तथा पेट्रोलियम उत्पाद, मोती व बहुमूल्य रतन, अकार्बनिक रसायन, कोयला, कोक तथा कोयले का गोला, मशीनरी आदि शामिल है। एक समूह के रूप में भारी वस्तुओं के आयात में वृद्धि हुई है। इस समूह में उर्वरक, खाद्यान्न, वनस्पति, तेल व छपाई मशीनें भी शामिल है। वस्तुओं के आदान-प्रदान की अपेक्षा सूचनाओं, ज्ञान तथा प्रौद्योगिकी का आदान-प्रदान बढ़ा है। भारत अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एक सॉफ्टवेयर महाशक्ति के रूप में उभरा है तथा सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से अत्यधिक विदेशी मुद्रा अर्जित कर रहा है।
- पर्यटन अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का एक महत्त्वपूर्ण तरीका है। प्रत्येक वर्ष भारत में 26 लाख से अधिक विदेशी पर्यटक आते है। 150 लाख से अधिक व्यक्ति पर्यटन उद्योग में प्रत्यक्ष रूप से संलग्न है। विदेशी पर्यटक भारत में विरासत पर्यटन तथा व्यापारिक पर्यटन के लिए आते हैं।
- पर्यटन राष्ट्रीय एकता को प्रोत्साहित करता है तथा स्थानीय हस्तकला व सांस्कृतिक उद्यमों को प्रश्रय देता है।
- वर्ष 2014 की तुलना में वर्ष 2015 में विदेशी पर्यटकों की संख्या 4.5 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। जिससे 135193 करोड़ की विदेशी मुद्रा प्राप्त हुई है।

इनके बारे में जानें— (Know the Terms)

- **अंतर्राष्ट्रीय व्यापार** (International Trade) : दो देशों के बीच होने वाले व्यापार को अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के नाम से जाना जाता है।
- **व्यापार** (Trade) : राज्यों व देशों में व्यक्तियों के बीच वस्तुओं का आदान प्रदान व्यापार कहलाता है।
- **आर्थिक बैरोमीटर** (Economic Barometer) : एक देश के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की प्रगति उसके आर्थिक वैभव का सूचक है। इसीलिए इसे आर्थिक विकास का बैरोमीटर कहा जाता है।
- **व्यापार संतुलन** (Balance of Trade) : आयात व निर्यात के मध्य अंतर।
  (i) **अनुकूल व्यापार संतुलन**—अगर निर्यात मूल्य आयात मूल्य से अधिक हो तो उसे अनुकूल व्यापार संतुलन कहते हैं।
  (ii) **प्रतिकूल व्यापार संतुलन**—जब निर्यात की अपेक्षा अधिक आयात होता है तब व्यापार असंतुलित (प्रतिकूल) कहलाता है।
- **पर्यटन व्यापार के रूप में** (Tourism as a Trade) : पर्यटन राष्ट्रीय एकता को प्रोत्साहित करता है तथा स्थानीय हस्तकला व सांस्कृतिक उद्यमों को प्रश्रय देता है।

❑❑

इकाई – III : लोकतांत्रिक राजनीति–2

अध्याय – 1 सत्ता की साझेदारी

प्रकरण (TOPIC)-1
बेल्जियम और श्रीलंका और श्रीलंका में बहुसंख्यकवाद
(Belgium and Sri Lanka and Majoritarianism in Sri Lanka)

त्वरित समीक्षा (Revision Notes)

- बेल्जियम यूरोप का एक छोटा सा देश है। ब्रूसेल्स इस देश की राजधानी है।
- इस छोटे से देश के समाज की जातीय बुनावट बहुत जटिल है।
- बेल्जियम में लोग मुख्यत: तीन भाषाएँ बोलते हैं—डच (59 प्रतिशत), फ्रेंच (40 प्रतिशत) और जर्मन (1 प्रतिशत)।
- श्रीलंका एक द्विपीय देश है। श्रीलंका में कई जातीय समूह के लोग है।
- श्रीलंका 74 प्रतिशत सिंहली तथा 18 प्रतिशत लोग तमिल भाषा बोलते है।
- श्रीलंका में चार धर्म हैं—
  (i) बौद्ध (ii) इस्लाम (iii) हिन्दू (iv) क्रिश्चियन
- सन् 1956 में श्रीलंका में एक कानून बनाया गया जिसके तहत तमिल को दरकिनार करके सिंहली को एकमात्र राजभाषा घोषित कर दिया गया।
- सिंहली समुदाय के नेताओं ने अपनी बहुसंख्या के बल पर शासन पर प्रभुत्व जमाना चाहा। इस वजह से लोकतांत्रिक रूप से निर्वाचित सरकार ने सिंहली समुदाय की प्रभुता कायम करने के लिए अपनी बहुसंख्यक परस्ती के तहत कई कदम उठाए गए।
- यह बहुसंख्यकवाद का अनुसरण था।
- 1980 के दशक तक उत्तर-पूर्वी श्रीलंका में स्वतंत्र तमिल ईलम (सरकार) बनाने की माँग को लेकर अनेक राजनीतिक संगठन बने।
- श्रीलंका में दो समुदायों के बीच पारस्परिक अविश्वास ने बड़े टकराव का रूप ले लिया।

इसके बारे में जानें (Know About it)

- **लोकतंत्र** (Democracy) : सरकार का एक स्वरूप जिसका अर्थ है "लोगों द्वारा शासन"।
- **बहुसंख्यकवाद** (Majoritarianism) : यह मान्यता है कि अगर कोई समुदाय बहुसंख्यक है तो वह अपने मनचाहे ढंग से देश का शासन कर सकता है और इसके लिए वह अल्पसंख्यक समुदाय की जरूरत या इच्छाओं की अवहेलना कर सकता है।

OSWAAL BOOKS LEARNING MADE SIMPLE

- **विधानमंडल (विधायिका) (Legislature) :** एक विचार विमर्श का सदन जो कानून बनाने, संशोधन करने और उन्हें रदद् करने का काम करता है।
- **संघीय सरकार (Federal Government) :** पूरे देश के लिए बनने वाली एक सामान्य सरकार को संघीय या केन्द्रीय सरकार कहा जाता है।
- **सामुदायिक सरकार (Community Government) :** यहाँ सत्ता विभिन्न सामाजिक समूहों मसलन भाषायी और धार्मिक समूहों के बीच हो सकती है। इसे सामुदायिक सरकार कहते हैं।
- **गृहयुद्ध (Civil war) :** किसी देश में सरकार विरोधी समूहों की हिंसक लड़ाई ऐसा रूप ले ले कि वह युद्ध सा लगे तो उसे गृहयुद्ध कहते हैं।
- **जातीय (Ethnic) :** ऐसा सामाजिक विभाजन जिसमें हर समूह अपनी-अपनी संस्कृति को अलग मानता है यानी यह साझी संस्कृति पर आधारित सामाजिक विभाजन है।
- **भारतीय तमिल (Indian Tamil) :** भारतीय तमिल जो औपनिवेशिक शासनकाल में बागानों में काम करने के लिए भारत से लाए गए लोगों की संतान हैं।
- **श्रीलंकाई तमिल (Sri Lankan Tamil) :** मूलरूप से श्रीलंका के निवासी 'श्रीलंकाई' तमिल कहलाते हैं।

प्रकरण (TOPIC)–2
बेल्जियम में सत्ता की साझेदारी के रूप
(Accommodation in Belgium of Power Sharing)

त्वरित समीक्षा (Revision Notes)

- एक कूटनीति जिसमें समाज के प्रमुख हिस्सों को देश की सत्ता में स्थाई रूप से हिस्सेदारी प्रदान की जाए उसे सत्ता की साझेदारी कहते हैं।
- राजनीतिक समानता इसमें अन्तर्निहित हो कि सभी नागरिकों को समान अधिकार प्राप्त होंगे तथा सभी के लिए कार्यालयों और अधिकारियों के पास पहुँचने का एक समान रास्ता होगा।
- सरकार एक संस्थान है जो राज्य की इच्छाओं को पैदा करती है, उन्हें बनाती है तथा उन्हें लागू करती है।
- सरकार के तीन प्रमुख अंग हैं– **(i)** विधायिका **(ii)** कार्यपालिका **(iii)** न्यायपालिका।
- सत्ता की साझेदारी के विभाजन के दो प्रमुख कारण **(i)** युक्तिपरक और **(ii)** नैतिक तर्क हैं।
- जातीयता मानवीय जनसंख्या का लक्षण है जिसके सदस्य एक दूसरे की पहचान का सामान्य आधार सांस्कृतिक, व्यावहारिक, भाषायी और धार्मिक विशेषताएँ हैं।
- सरकार सत्ता का बँटवारा विभिन्न सामाजिक समूहों मसलन भाषायी और धार्मिक समूहों के बीच कर सकती है।
- बेल्जियम के नेताओं ने एक ऐसी व्यवस्था पर काम किया जो सभी को सक्षम बनाने तथा देश में एक-दूसरे के रहने के लिए एक बहुत ही अभिनव कार्य था।
- बेल्जियम के संविधान में इस बात का स्पष्ट प्रावधान है कि केन्द्रीय सरकार में डच और फ्रेंच भाषी मंत्रियों की संख्या समान रहेगी।
- राज्य सरकारें केन्द्र सरकार के अधीन नहीं होंगी।
- ब्रूसेल्स में अलग सरकार है और इसमें दोनों समुदायों का समान प्रतिनिधित्व है।
- केन्द्रीय और राज्य सरकारों के अलावा यहाँ एक तीसरे स्तर की सरकार भी काम करती है यानी कि "सामुदायिक सरकार"।
- सत्ता की साझेदारी वांछनीय है क्योंकि–
  - **(i)** इसकी सहायता से सामाजिक समूहों के बीच विरोध को कम करने की संभावनाएँ है।
  - **(ii)** यह लोकतंत्र के लिए बहुत ही पवित्र है।
- आधुनिक लोकतंत्र में सत्ता की साझेदारी की व्यवस्था के अनेक स्वरूप हो सकते हैं–
  - **(i)** सत्ता सरकार के विभिन्न घटकों में बँटी होती है, जैसे विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका।
  - **(ii)** सरकार के बीच भी विभिन्न स्तरों पर सत्ता का बँटवारा हो सकता है–जैसे पूरे देश के लिए सामान्य सरकार हो और फिर प्रांत या

क्षेत्रीय स्तर पर अलग-अलग सरकारें रहें।

(iii) सत्ता का बँटवारा विभिन्न सामाजिक समूहों मसलन भाषायी और धार्मिक समूहों के बीच भी हो सकता है।

(iv) सत्ता के बँटवारे का एक रूप राजनीतिक दलों विभिन्न प्रकार के दबाव समूहों और आंदोलनों में भी दिखाई देता है।

इनके बारे में जानें (Know the Terms)

- **सत्ता की साझेदारी (Power Sharing) :** सरकार के विभिन्न स्तरों पर सत्ता का बँटवारा, विभिन्न संगठनों अथवा विभिन्न समुदायों जिनसे यह सुनिश्चित हो कि सरकार आसानी से चले तथा सरकार की सारी शक्तियाँ किसी एक साथ में न रहें।
- **चातुर्यपूर्ण (Prudential) :** बुद्धिमानी पर आधारित अथवा इस बात की गणना करना कि क्या खोया क्या पाया। बुद्धिमानी पूर्ण निर्णयों में अक्सर अन्तर होता है उन निर्णयों की तुलना में जो केवल नैतिक आधार पर सोच-विचार कर लिए गए हैं।
- **जाँच पड़ताल एवं संतुलन (Check and Balances) :** एक तरीका जिसके अंतर्गत सरकार के प्रत्येक अंग की जाँच पड़ताल हो, जिससे सत्ता की साझेदारी का सभी संस्थाओं के बीच संतुलन बना रहे।
- **गठबंधन सरकार (Coalition Government) :** ऐसी सरकार जिसका गठन दो या दो से अधिक राजनीतिक दलों के गठबंधन से होता है।
- **दबाव समूह (Pressure groups) :** दबाव समूह वे संगठन हैं जो सरकार की नीतियों के प्रभावों का विरोध करते जिनसे उनके व्यक्तिगत लाभ प्रभावित होते हैं।
- **वैधानिक सरकार (Legitimate Government) :** वैधानिक सरकार वह है जिसमें, नागरिकों की भागीदारी से सत्ता प्राप्त की गई है, जो एक तरीके के साथ चलती है।
- **सत्ता का क्षितिज बँटवारा (Horizontal Division of Power) :** शासन के विभिन्न अंग जैसे विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका के बीच सत्ता का बँटवारा रहता है।
- **सत्ता का सीधा या लम्बवत् बँटवारा (Vertical Division of Power) :** निम्न और उच्च स्तर के बीच सत्ता का बँटवारा जैसे केन्द्र सरकार और राज्य सरकारों के बीच सत्ता का विभाजन।

❑❑

अध्याय – 2 संघवाद

प्रकरण (TOPIC) -I

संघवाद क्या है ? भारत संघीय देश कैसे बना ?

(What is Federalism ? What makes India a Federal Country ?)

त्वरित समीक्षा (Revision Notes)

- सत्ता का बँटवारा केन्द्र सरकार, राज्य सरकार, क्षेत्रीय सरकार और स्थानीय सरकारों के बीच होता है जिसे संघवाद के नाम से जाना जाता है।
- संघीय शासन व्यवस्था में सर्वोच्च सत्ता केन्द्रीय प्राधिकार और उसकी विभिन्न आनुषंगिक इकाइयों के बीच बँट जाती है।
- संघीय व्यवस्था की विशेषताएँ हैं–

(i) यहाँ सरकार दो या अधिक (त्रिस्तरीय) वाली होती है।

(ii) अलग-अलग स्तर की सरकारें एक ही नागरिक समूह पर शासन करती है पर कानून बनाने कर वसूलने और प्रशासन का उनका अपना-अपना अधिकार क्षेत्र होता है।

(iii) विभिन्न स्तरों की सरकारों के अधिकार- क्षेत्र संविधान में स्पष्ट रूप से वर्णित हैं। इसलिए संविधान सरकार के हर स्तर के अस्तित्व और प्राधिकार की गारंटी और सुरक्षा देता है।

(iv) संविधान के मौलिक प्रावधानों को किसी एक स्तर की सरकार अकेले नहीं बदल सकती। ऐसे बदलाव दोनों स्तर की सरकारों की सहमति

से ही हो सकते हैं।

(v) अदालतों को संविधान और विभिन्न स्तर की सरकारों के अधिकार की व्याख्या करने का अधिकार है। विभिन्न स्तर की सरकारों के बीच अधिकारों के विवाद की स्थिति में सर्वोच्च न्यायालय निर्णायक की भूमिका निभाता है।

(vi) वित्तीय स्वायत्तता निश्चित करने के लिए विभिन्न स्तर की सरकारों के लिए राजस्व के अलग-अलग स्रोत निर्धारित हैं।

(vii) इस प्रकार संघीय शासन व्यवस्था के दोहरे उद्धेश्य है—देश की एकता की सुरक्षा करना और उसे बढ़ावा देना तथा इसके साथ ही क्षेत्रीय विविधताओं का पूरा सम्मान करना।

- अर्जेंटीना, आस्ट्रिया, आस्ट्रेलिया, बेल्जियम, ब्राजील, कनाडा, जर्मनी, भारत, मैक्सिको, स्विट्जरलैंड और यूनाइटेड स्टेट्स में संघीय सरकारें है।
- संविधान में स्पष्ट रूप से केन्द्र और राज्य सरकारों के बीच विधायी अधिकारों में तीन हिस्से में बाँटा गया है। ये तीन सूचियाँ इस प्रकार हैं—

(i) संघ सूची में प्रतिरक्षा, विदेशी मामले, बैंकिग, संचार और मुद्रा जैसे राष्ट्रीय महत्त्व के विषय है। पूरे देश के लिए इन मामलों में एक तरह की नीतियों की जरूरत है। इसी कारण इन विषयों को संघ सूची में डाला गया है। संघ सूची में वर्णित विषयों के बारे में कानून का अधिकार सिर्फ केन्द्र सरकार को है।

(ii) राज्य सूची में पुलिस, व्यापार, वाणिज्य, कृषि और सिंचाई जैसे प्रांतीय और स्थानीय महत्त्व के विषय हैं। राज्य सूची में वर्णित विषयों के बारे में सिर्फ राज्य सरकार ही कानून बना सकती है।

(iii) समवर्ती सूची में शिक्षा, वन, मजदूर, संघ, विवाह, गोद लेना और उत्तराधिकार जैसे वे विषय हैं जो केन्द्र के साथ राज्य सरकारों की साझी दिलचस्पी में आते हैं। इन विषयों पर कानून बनाने का अधिकार राज्य सरकारों और केन्द्र सरकार, दोनों को ही है लेकिन जब दोनों के कानूनों में टकराव हो तो केन्द्र सरकार द्वारा बनाया गया कानून ही मान्य होता है।

- भारतीय संघ की गई इकाइयों को बहुत ही कम अधिकार हैं ये वैसे छोटे इलाके हैं जो अपने आकार के चलते स्वतंत्र प्रांत नहीं बन सकते। इन्हें किसी मौजूदा प्रांत में विलीन करना भी संभव नहीं है। ऐसे क्षेत्रों को केन्द्र शसित प्रदेश कहा जाता है।

इनके बारे में जाने (Know the Terms)

- **संघवाद (Federalism) :** संघीय शासन व्यवस्था में सर्वोच्च सत्ता केंद्रीय प्राधिकार और उसकी विभिन्न आनुषांगिक इकाइयों के बीच बट जाती है।
- **न्याय करने का अधिकार (Jurisdiction) :** ऐसा दायरा जिस पर किसी का वैधानिक अधिकार हो।
- **संघ सूची (Union List) :** संघ सूची में प्रतिरक्षा, विदेशी मामले, बैंकिग, संचार और मुद्रा जैसे राष्ट्रीय महत्व के विषय है। संघ सूची में वर्णित विषयों के बारे में कानून बनाने का अधिकार सिर्फ केन्द्र सरकार को है।
- **राज्य सूची (State List) :** राज्य सूची में पुलिस, व्यापार, वाणिज्य, कृषि जैसे प्रांतीय और स्थानीय महत्व के विषय हैं राज्य सूची में वर्णित विषयों के बारे में सिर्फ राज्य सरकार ही कानून बना सकती है।
- **समवर्ती सूची (Concurrent List) :** समवर्ती सूची में शिक्षा, वन, मजदूर संघ, गोद लेना और उत्तराधिकार जैसे वे विषय हैं जो केन्द्र के साथ राज्य सरकारों की साझी दिलचस्पी में आते हैं।
- **साथ आकर संघ बनाना (Coming together Federation) :** साथ आकर संघ बनाने के उदाहरण हैं— संयुक्त राज्य अमरीका, स्विट्जरलैंड और आस्ट्रेलिया आदि। इस तरह की संघीय व्यवस्था वाले मुल्को में आमतौर पर प्रांतो को समान अधिकार होता है। और वे केन्द्र के बरक्स ज्यादा ताकतवर होते हैं।
- **राज्य गठन संघ (Holding together Federation) :** बड़े देश द्वारा अपनी आतंरिक विविधता को ध्यान में रखते हुए राज्यों का गठन करना और फिर राज्य और राष्ट्रीय सरकार के बीच सत्ता का बँटवारा कर देना। भारत, बेल्जियम और स्पेन इसके उदाहरण हैं।
- **बाकी बचे विषय (Residuary Subjects) :** कुछ विषय ऐसे हैं जो इनमें से किसी सूची में नहीं आते हैं। कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर जैसे नए विषय जो कि संविधान बनने के बाद आए हैं। संविधान के अनुसार बाकी बने विषय केन्द्र सरकार के अधिकार क्षेत्र में चले जाते हैं।
- **भाषा नीति (Language) :** यह अन्य भाषाओं के लिए सुरक्षागार्ड है। भाषा नीति के अंतर्गत संविधान में हिन्दी के अलावा 21 भाषाओं का अनुसूचित भाषा का दर्जा दिया गया है।
- **परिगणित भाषाएँ (Scheduled Languages) :** भारतीय संविधान में अंग्रेज़ी सहित 22 भाषाओं को परिगणित (सूचीबद्ध) किया गया है जिनसे सरकारी काम-काज किया जाएगा।
- **भारतीय संघवाद (Indian Federation) :** भारत में 29 राज्य और 7 केन्द्रशासित प्रदेश है। भारत की राजधानी दिल्ली है।
- **केन्द्रशासित प्रदेश (Union Territories) :** केन्द्र शासित क्षेत्रों को राज्यों वाले अधिकार नही हैं। इन इलाकों का शासन चलाने का विशेष अधिकार केन्द्र सरकार को प्राप्त हैं इन क्षेत्रों में चंडीगढ़, लक्षद्वीप व दिल्ली आदि आते हैं।

- **क्षेत्रवाद (Regionalism) :** किसी विशेष के विषय में सोचना गर्व करना या निष्ठा रखना इस इच्छा के साथ कि उस क्षेत्र पर उनका स्वयं का ही शासन रहे।

प्रकरण (TOPIC)–2
भारत में संघीय व्यवस्था का विकेन्द्रीकरण कैसे हुआ ?
(How is Federalism practiced Decentralisation in India ?)

त्वरित समीक्षा (Revision Notes)

- भाषा के आधार पर प्रांतों का गठन हमारे देश की लोकतांत्रिक राजनीति के लिए पहली और कठिन परीक्षा थी।
- हिन्दी को राजभाषा माना गया लेकिन संविधान में हिन्दी के अलावा **21** भाषाओं को अनुसूचित भाषा का दर्जा दिया गया।
- नागालैंड, उत्तराखण्ड, और झारखण्ड जैसे राज्यों का गठन भाषा के आधार पर नहीं बल्कि संस्कृति, भूगोल और जातीयताओं की विभिन्नताओं के आधार पर किया गया है।
- केन्द्र-राज्य संबंधों में लगातार आए बदलाव का यह उदाहरण बताता है कि व्यवहार में संघवाद किस तरह मजबूत हुआ है।
- जब किसी एक दल को लोकसभा में स्पष्ट बहुमत नहीं मिला तब प्रमुख राष्ट्रीय पार्टियों को क्षेत्रीय दलों समेत अनेक पार्टियों का गठबंधन बनाकर "गठबंधन सरकार" बनानी पड़ी।
- वास्तविक विकेन्द्रीकरण की दिशा में एक बड़ा कदम **1992** में उठाया गया।
- संविधान में संशोधन करके लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था के इस तीसरे स्तर को ज्यादा शक्तिशाली और प्रभावी बनाया गया।
  - **(i)** अब स्थानीय स्वशासी निकायों के चुनाव नियमित रूप से कराना संवैधानिक बाध्यता है।
  - **(ii)** निर्वाचित स्वशासी निकायों के सदस्य तथा पदाधिकारियों के पदों में अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों और पिछड़ी जातियों के लिए सीटें आरक्षित हैं।
  - **(iii)** कम से कम एक तिहाई पद महिलाओं के लिए आरक्षित हैं।
  - **(iv)** हर राज्य में पंचायत और नगरपालिका चुनाव कराने के लिए राज्य चुनाव आयोग नामक स्वतंत्र संस्था का गठन किया गया है।
  - **(v)** राज्य सरकारों को अपने राजस्व और अधिकारों का कुछ हिस्सा इन स्थानीय स्वशासी निकायों को देना पड़ता है। सत्ता में भागीदारी की प्रकृति हर राज्य में अलग-अलग है।
- गाँवों के स्तर पर मौजूद स्थानीय शासन व्यवस्था को पंचायती राज के नाम से जाना जाता है। प्रत्येक गाँव में (और कुछ राज्यों में ग्राम समूह की) एक ग्राम पंचायत होती है।
- **ग्राम पंचायत के कार्य–**
  - **(i)** यह पूरे पंचायत के लिए फैसला लेने वाली संस्था है।
  - **(ii)** पंचायतों का काम ग्राम-सभा की देखरेख में चलता है। गाँव के सभी मतदाता इसके सदस्य होते हैं।
  - **(iii)** ग्राम पंचायत का बजट पास करने और इसके कामकाज की समीक्षा के लिए साल में कम से कम दो या तीन बार बैठक करनी होती है।
- कई ग्राम पंचायतों को मिलाकर पंचायत समिति का गठन होता है। इसे मंडल या प्रखंड स्तरीय पंचायत भी कहा जाता है।
- किसी जिले की सभी पंचायत समितियों को मिलाकर जिला परिषद का गठन होता है।
- जिला परिषद का प्रमुख इस परिषद का राजनीतिक प्रधान होता है।
- शहरों में नगरपालिका होती है। बड़े शहरों में नगर निगम का गठन होता है।
- नगरपालिका और नगर निगम, दोनों का कामकाज निर्वाचित प्रतिनिधि करते हैं।
- नगरपालिका प्रमुख नगर पालिका के राजनैतिक प्रधान होते हैं। नगर निगम के ऐसे पदाधिकार को मेयर कहते हैं।

इनके बारे में जानें (Know the Terms)

- **स्वशासन (Autonomy) :** एक क्षेत्र अथवा भूभाग जो अपने आप स्वतंत्र रूप से शासन करते हैं।
- **भाषायी राज्य (Linguistic States) :** भारत एक बहुभाषीय देश है यहाँ लोग विभिन्न भाषाएँ बोलते हैं। स्वतंत्रता के पश्चात, कुछ राज्यों का गठन लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा के आधार पर किया गया था। ये सभी भाषायी राज्य के नाम से जाने जाते हैं।
- **राज्य चुनाव आयोग (State Election Commission) :** यह संस्था प्रत्येक राज्य में होती है इसका कार्य पंचायत और नगरपालिका के चुनाव कराना है।

- **पंचायती राज (Panchayati Raj) :** शासन की एक व्यवस्था जिसमें ग्राम पंचायत प्रशासन की एक बुनियादी इकाई है। इसके तीन स्तर हैं। ग्राम, खण्ड, जिला हैं।
- **पंचायत समिति (Panchayati Samiti) :** यह भार में स्थानीय शासन संस्था है जो तहसील और खण्ड (Block) स्तर पर होती है, जिनका सम्बन्ध ग्राम पंचायत और जिला परिषद से होता है।
- **ग्राम सभा (Gram Sabha) :** वो संस्था जो ग्राम पंचायतों का निरीक्षण करती है।
- **त्रिस्तरीय व्यवस्था (Tier System) :** वह व्यवस्था है जो सरकार के स्तर के महत्व को बताती है। यह द्विस्तरीय व त्रिस्तरीय हो सकती है।
- **महापौर (Mayor) :** नगर महापालिका (नगर निगम) का अध्यक्ष महापौर के नाम से जाना जाता है।

❑❑

अध्याय – 3 जाति, धर्म और लैंगिक मसले

प्रकरण (TOPIC)–1
लिंग और राजनीति
Gender and Politics

त्वरित समीक्षा (Revision Notes)

- लैंगिक विभाजन सामाजिक विभाजन का एक धर्मतंत्र स्वरूप है जिसे हर जगह देखा जा सकता है।
- श्रम के लैंगिक विभाजन का अर्थ है लोगों के बीच काम का बँटवारा उनके लिंग के आधार पर।
- भारतीय समाज में सामाजिक विभाजन स्पष्ट रूप से जातिवाद, लैंगिक असमानता और सांप्रदायिक विभाजनों की ओर इंगित करता है।
- शुरुआत में सिर्फ पुरुषों को ही सार्वजानिक मामलों में भागीदारी करने, वोट देने या सार्वजनिक पदों के लिए चुनाव लड़ने की अनुमति थी।
- दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में औरतों ने अपने संगठन बनाए और बराबरी के अधिकार प्राप्त करने के लिए आंदोलन किए।
- इन आंदोलनों में महिलाओं के राजनीतिक और वैधानिक दर्जे को ऊँचा उठाने और उनके लिए शिक्षा तथा रोजगार के अवसर बढ़ाने को माँग की गई।
- एक पुरुष अथवा एक स्त्री जो स्त्री या पुरुषों के बराबर के अधिकारों और अवसरों में विश्वास रखते हैं उन्हें नारीवादी के नाम से जाना जाता है।
- मुख्यत: महिला आंदोलनों ने औरतों के व्यक्तिगत और पारिवारिक जीवन में भी बराबरी की माँग उठाई। इन आंदोलनों को नारीवादी आंदोलन कहा जाता है।
- भारतीय समाज अभी भी पितृ-प्रधान है।
- औरतों को अभी भी कई प्रकार से नुकसान, भेदभाव और दमन का सामना करना होता है। औरतों का शिक्षा में प्रतिशत अभी भी कम है, कार्य की समानता में कमी, कभी-कभी पुरुषों की तुलना में कम वेतन, अभिवावकों द्वारा पुत्र को ज्यादा वरीयता आदि।
- भारत में विधायिका में महिला प्रतिनिधियों का अनुपात बहुत ही कम है।
- इस समस्या को सुलझाने का एक तरीका तो निर्वाचित संस्थाओं में महिलाओं के लिए कानूनी रूप से एक उचित हिस्सा तय कर देना है। भारत में पंचायती राज के अंतर्गत कुछ ऐसी ही व्यवस्था की गई है।
- स्थानीय सरकारों यानी पंचायतों और नगरपालिकाओं में एक तिहाई पद महिलाओं के लिए आरक्षित कर दिए गए हैं।
- लैंगिक विभाजन इस बात की एक मिसाल है कि कुछ खास किस्म के सामाजिक विभाजनों को राजनीतिक रूप देने की जरूरत है।

इनके बारे में जानें (Know the Terms)

- **लैंगिक विभाजन (Gender Division) :** लैंगिक विभाजन, सामाजिक विभाजन का धर्मतंत्र स्वरूप है इसका आधार सामाजिक अपेक्षाएँ और रूढ़िवादी है।
- **लिगांनुपात (Sex Ratio) :** प्रति हजार लड़कों पर लड़कियों की संख्या को लिंगानुपात कहते हैं।

- **सांप्रदायिक राजनीति (Communal Politics) :** सांप्रदायिक राजनीति इस सोच पर आधारित होती है कि धर्म ही सामाजिक समुदाय का निर्माण करता है। इस मान्यता के अनुकूल सोचना सांप्रदायिकता है।
- **श्रम का लैंगिक विभाजन (Sexual Division of Labour) :** काम के बँटवारे का वह तरीका जिसमें घर के अंदर के सारे काम परिवार की औरतें करती हैं या अपनी देख-रेख में घरेलू नौकरों/नौकरानियों से कराती हैं।
- **नारीवादी (Feminist) :** औरत और मर्द के समान अधिकारों और अवसरों में विश्वास करने वाली महिला या पुरुष।
- **पितृ प्रधान (Patriarchy) :** इसका शाब्दिक अर्थ तो पिता का शासन है पर इस पद का प्रयोग महिलाओं की तुलना में पुरूषों का ज्यादा महत्व, ज्यादा शक्ति देने वाली व्यवस्था के लिए भी किया जाता है।
- **रूढ़िवादी (Stereotype) :** किसी विशेष व्यक्ति अथवा वस्तु के विषय में हमारी धारणा या विचार जो शुरू से बने हुए हैं उन्हीं को मानना ही रूढ़िवादिता है।
- **नारीवाद (Feminism) :** इन आंदोलनो में महिलाओं के दर्जे को ऊँचा उठाने और उनको समाज में पुरुषों के बराबर दर्जा दिलाने की माँग की जाती है।

प्रकरण (TOPIC)-2
धर्म, सांप्रदायिकता और राजनीति
(Religion, Communalism and Politics)

त्वरित समीक्षा (Revision Notes)

- भारतीय लोकतंत्र के सामने जातिवाद, सांप्रदायिकता, अशिक्षा, गरीबी और बेरोजगारी जैसी समस्याएँ हैं।
- ऐसे समुदाय जिनकी समाज में तुलनात्मक रूप से जनसंख्या कम है उन्हें अल्पसंख्यक के नाम से जाना जाता है।
- कानून जो परिवार से संबंधित मसलों जैसे विवाह, तलाक आदि को देखता है उसे पारिवारिक कानून कहते हैं।
- श्रीलंका का प्रमुख धर्म बौद्ध धर्म और नेपाल का प्रमुख धर्म हिंदू धर्म है।
- राजनीति में धर्म का उपयोग सांप्रदायिक राजनीति कहलाता है।
- किसी भी धर्म से विचारों, आदर्शों और मूल्यों को लिया जा सकता है और शायद ये राजनीति में एक भूमिका निभा सकते हैं।
- एक धार्मिक समुदाय के सदस्य के रूप में लोग अपनी आवश्यकताओं, माँगों और लोगों को राजनीति में रखने के लिए समर्थ हैं।
- सांप्रदायिक राजनीति इस सोच पर आधारित होती है कि धर्म ही सामाजिक समुदाय का निर्माण करता है।
- सांप्रदायिक के राजनीति में अनेक रूप हो सकते हैं–
  - **(i)** सांप्रदायिकता की सबसे आम अभिव्यक्ति दैनंदिन जीवन में ही दिखती है।
  - **(ii)** सांप्रदायिक सोच अक्सर अपने धार्मिक समुदाय का राजनीतिक प्रभुत्व स्थापित करने के फिराक में रहती है।
  - **(iii)** सांप्रदायिक आधार पर राजनीतिक गोलबंदी सांप्रदायिकता का दूसरा रूप है।
  - **(iv)** कई बार सांप्रदायिकता सबसे गंदा रूप लेकर संप्रदाय के आधार पर हिंसा, दंगा और नरसंहार कराती है।
- भारतीय राज्य ने किसी भी धर्म को राजकीय धर्म के रूप में अंगीकार नहीं किया है, भारत एक धर्मनिरपेक्ष राज्य है।
- संविधान सभी नागरिकों और समुदायों को किसी भी धर्म का पालन करने और प्रचार करने की आज़ादी देता है। इसके निम्न लक्षण हैं–
  - **(i)** संविधान धर्म के आधार पर किए जाने वाले किसी तरह के भेदभाव को अवैधानिक घोषित करता है।
  - **(ii)** इसके साथ ही संविधान धार्मिक समुदायों में समानता सुनिश्चित करने के लिए शासन को धार्मिक मामलों में दखल देने का अधिकार देता है।

इनके बारे में जानें (Know the Terms)

- **सांप्रदायिकता (Communalism) :** सांप्रदायिक राजनीति इस सोच पर आधारित होती है कि धर्म ही सामाजिक समुदाय का निर्माण करता है।
- **पारिवारिक कानून (Family Laws) :** विवाह, तलाक, गोदलेना और उत्तराधिकार जैसे परिवार से जुड़े मसलों से संबंधित कानून। हमारे देश में सभी धर्मों के लिए अलग-अलग पारिवारिक कानून हैं।
- **साक्षरता दर (Literacy Rate) :** देश की कुल जनसंख्या में पढ़े-लिखे लोगों के अनुपात को साक्षरता दर कहते हैं।

- **पूर्वाग्रह (Prejudice) :** बिना किसी उचित कारण के किसी व्यक्ति, समूह, रिवाजों, आदि को नापसंद करना अथवा वरीयता देना विशेषकर जब ये श्रेणी, धर्म और लिंग पर आधारित हो ये पूर्वाग्रह की स्थिति है।
- **धर्म निरपेक्ष राज्य (Secular State) :** ऐसा राज्य जिसका कोई राज्य धर्म नहीं है। यह सभी धर्मों को बराबर का स्तर प्रदान करता है।
- **धर्मनिरपेक्षवाद (Secularism) :** ऐसा विश्वास कि समाज के संगठन में धर्म अपनी सहभागिता नहीं निभाएगा।
- **शहरीकरण (Urbanisation) :** ग्रामीण जनता का शहरी क्षेत्र में जाकर निवास करना शहरीकरण है।

प्रकरण (TOPIC)-3
जाति और राजनीति (Caste and Politics)

त्वरित समीक्षा (Revision Notes)

- उच्च जाति के लोगों का व्यवहार निम्न जाति के लोगों के साथ घृणा करना जातिवाद कहलाता है।
- जातिवाद व्यवस्था बहिष्कृत समूहों के प्रति भेदभाव व बहिष्कार पर आधारित थी। उनके साथ अमानवीय और छूआ छूत का व्यवहार किया जाता था।
- गाँधी जी छूआछूत के खिलाफ थे।
- ज्योतिबा फुले, महात्मा गाँधी, डॉ. अंबेडकर और पेरियार रामास्वामी नायकर जैसे राजनेताओं ने और समाज सुधारकों ने जातिगत भेदभाव से मुक्त समाज व्यवस्था बनाने की बात और उसके लिए काम किया।
- सामाजिक आर्थिक बदलावों के चलते आधुनिक भारत में जाति संरचना और जाति व्यवस्था में भारी बदलाव आया है।
- आर्थिक विकास, शहरीकरण, साक्षरण और शिक्षा के विकास, पेशा चुनने की आजादी और गाँवों में जमींदारी व्यवस्था के कमजोर पड़ने से जाति व्यवस्था के पुराने स्वरूप और वर्ण व्यवस्था पर टिकी मानसिकता में बदलाव आ रहा है।
- भारत के संविधान ने जाति व्यवस्था से पैदा हुए अन्याय को समाप्त करने वाली नीतियों का आधार तय किया है।
- **राजनीति में जाति के विभिन्न स्वरूप हो सकते हैं–**
  - **(i)** जब पार्टियाँ चुनाव के लिए उम्मीदवारों के नाम तय करती हैं तो चुनाव क्षेत्र के मतदाताओं की जातियों का हिसाब ध्यान में रखती हैं ताकि उन्हें चुनाव जीतने के लिए जरूरी वोट मिल जाएँ।
  - **(ii)** राजनीतिक पार्टियाँ और उम्मीदवार चुनावों में समर्थन हासिल करने के लिए जातिगत भावनाओं को उकसाते हैं।
  - **(iii)** सार्वभौम वयस्क मताधिकार और एक व्यक्ति एक वोट की व्यवस्था ने राजनीतिक दलों को विवश किया कि वे राजनीतिक समर्थन पाने और लोगों को गोलबंद करने के लिए सक्रिय हों।
- देश के किसी भी एक संसदीय चुनाव क्षेत्र में किसी एक जाति के लोगों का बहुमत नहीं है।
- राजनीति भी जातियों को राजनीति के अखाड़े में लाकर जाति व्यवस्था और जातिगत पहचान को प्रभावित करती है।
- इस तरह, सिर्फ राजनीति ही जातिग्रस्त नहीं होती जाति भी राजनीतिग्रस्त हो जाती है। यह अनेक रूप लेती है–
  - **(i)** हर जाति खुद को बड़ा बनाना चाहती है। सो, पहले वह अपने समूह की जिन उप जातियों को छोटा या नीचा बताकर अपने से बाहर रखना चाहती थी अब उन्हें अपने साथ लाने की कोशिश करती है।
  - **(ii)** राजनीति में नए किस्म की जातिगत गोलबंदी भी हुई है जैसे "अगड़ा" और "पिछड़ा"।
- अनेक पार्टियाँ और गैर राजनीतिक संगठन खास जातियों के खिलाफ भेदभाव समाप्त करने, उनके साथ ज्यादा सम्मानजनक व्यवहार करने, उनके लिए जमीन-जायदाद और अवसर उपलब्ध कराने की माँग को लेकर आंदोलन करते रहे हैं।
- सिर्फ जातिगत पहचान पर राजनीति लोकतंत्र के लिए शुभ नहीं होती। इससे अक्सर गरीबी, विकास, भ्रष्टाचार जैसे ज्यादा बड़े मुद्दो से ध्यान भी भटकता है।
- कई बार जातिवाद तनाव, टकराव और हिंसा को भी बढ़ावा देता है।

इनके बारे में जानें (Know the Terms)

- **शहरीकरण (Urbanisation) :** ग्रामीण क्षेत्र की जनसंख्या का शहरी क्षेत्र में जाकर रहना शहरीकरण कहलाता है।
- **जातिवाद (Casteism) :** जातिवाद वंशानुक्रम व्यवस्था है जिसमें पेशा, राजनीतिक शक्ति, सजातीय विवाह, सामाजिक संस्कृति और सामाजिक श्रेणी सम्मिलित है। इसे वर्ण व्यवस्था के आधार पर भी परिभाषित किया जा सकता है जो जन्म आधारित होती है।

- **दलित (Dalits) :** अनुसूचित जाति (SCS) को सामान्यत: दलित के नाम से जाना जाता है।
- **आदिवासी (Adivasis) :** अनुसूचित जनजाति (STS) को आदिवासियों के नाम से जाना जाता है।
- **वर्ण व्यवस्था (Caste Hierarchy) :** जाति समूहों का पदानुक्रम जिसमें एक जाति के लोग हर हाल में सामाजिक पायदान में सबसे ऊपर रहेंगे तो किसी अन्य जाति समूह के लोग क्रमागत रूप से उनके नीचे।
- **निर्वाचक वर्ग (Electorate) :** देश के सभी लोग अथवा किसी क्षेत्र के जो चुनाव में मतदान के हकदार हैं।
- **सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार (Universal Adult Franchise) :** इसका अर्थ है वे सभी नागरिक जिनकी उम्र 18 वर्ष या उससे अधिक है उन सभी को अपना मत देने का अधिकार है।
- **व्यावसायिक गतिशीलता (Occupational Mobility) :** एक व्यवसाय से अन्य व्यवसाय में जाना, अक्सर नई पीढ़ी जब व्यवसायों को चुनती है, तो वह अपने पूर्वजों के व्यवसाय से हटकर चुनती है।

❑❑

अध्याय - 4 राजनीतिक दल

प्रकरण (TOPIC)-1
राजनीतिक दल—एक परिचय
(Political Parties–An Introduction)

त्वरित समीक्षा (Revision Notes)

- **(1) राजनीतिक दल क्या है ?**

  राजनीतिक दल को लोगों के एक ऐसे संगठित समूह के रूप में समझा जा सकता है जो चुनाव लड़ने और सरकार में राजनीतिक सत्ता हासिल करने के उद्देश्य से काम करता है।
- राजनीतिक दल समाज के सामूहिक हित को ध्यान में रखकर कुछ नीतियाँ और कार्यक्रम तय करता है। इसी आधार पर दल लोगों को यह समझाने का प्रयास करते हैं, कि उनकी नीतियाँ औरों से बेहतर हैं।
- राजनीतिक दल किसी समाज के बुनियादी राजनीतिक विभाजन को भी दर्शाते हैं। पार्टी समाज के किसी एक हिस्से से संबंधित होती है इसलिए उसका नजरिया समाज के उस वर्ग और समुदाय विशेष की तरफ झुका होता है।
- राजनीतिक दल के तीन प्रमुख हिस्से हैं—

  (i) नेता, (ii) सक्रिय सदस्य, (iii) अनुयायी या समर्थक

(2) राजनीतिक दल के कार्य—

- दल चुनाव लड़ते हैं। अधिकांश लोकतांत्रिक देशों में चुनाव राजनीतिक दलों द्वारा खड़ा किए गए उम्मीदवारों के बीच लड़ा जाता है।
- अमरीका जैसे कुछ देशों में उम्मीदवार का चुनाव दल के सदस्य और समर्थक करते हैं।
- अन्य देशों जैसे भारत में दलों के नेता ही उम्मीदवार चुनते हैं।
- दल अलग-अलग नीतियों और कार्यक्रमों को मतदाताओं के सामने रखते हैं। और मतदाता अपनी पंसद की नीतियों और कार्यक्रम चुनते हैं। लोकतंत्र में समान या मिलते-जुलते विचारों को एक साथ लाना होता है ताकि सरकार की नीतियों को एक दिशा दी जा सके।
- चुनाव हारने वाले दल शासक दल के विरोधी पक्ष की भूमिका निभाते हैं। सरकार की गलत नीतियों असफलताओं की आलोचना करने के साथ वह अपनी अलग राय भी रखते हैं। विपक्षी दल सरकार के खिलाफ आम जनता को भी गोलबंद करते हैं।
- जनमत निर्माण में दल महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। दल दबाव समूहों के साथ मिलकर आंदोलन चलाते हैं और आम लोगों की समस्याओं को हल भी कराते हैं।
- दल ही सरकारी मशीनरी और सरकार द्वारा चलाए जाने वाले कल्याण कार्यक्रमों तक लोगों की पहुँच बनाते हैं। एक साधारण नागरिक के लिए किसी सरकारी अधिकारी की तुलना में किसी राजनीतिक कार्यकर्ता से जान पहचान बनाना, उससे संपर्क साधना आसान होता है।

(3) राजनीतिक दल की जरूरत—

- राजनीतिक दलों के बिना लोकतंत्र का कोई अस्तित्व नही है क्योंकि उनके कार्यों का महत्त्व ही नहीं पता चलेगा। यदि कोई राजनीतिक दल नही होगा तब—

(i) अगर दल न हो तो सारे उम्मीदवार स्वतंत्र या निर्दलीय होगें । तब इनमें से कोई भी बड़े नीतिगत बदलाव के बारे में लोगों से चुनावी वायदे करने की स्थिति में नहीं होगा। देश कैसे चले इसके लिए कोई उत्तरदायी नहीं होगा।

(ii) बड़े समाजों के लिए प्रतिनिधित्व आधारित लोकतंत्र की जरूरत होती है। सरकार का समर्थन करने या उस पर अंकुश रखने, नीतियाँ बनवाने और नीतियों का समर्थन अथवा विरोध करने के लिए राजनीतिक दलों की जरूरत होती है।

इनके बारे में जानें (Know the Terms)

- **दल (Party) :** देश के लोगों के प्रतिनिधित्व के लिए दलों का होना आवश्यक है। वे चुनावों के होने में सहायता करते हैं और विधायिका के कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं।
- **राजनैतिक दल (Political Party) :** राजनीतिक दल को एक ऐसे संगठित समूह के रूप में देखा जा सकता है जो चुनाव लड़ने और सरकार में राजनीतिक सत्ता हासिल करने के उद्देश्य से काम करता है।

प्रकरण (TOPIC)-2
दलीय व्यवस्था के प्रकार
(Types of Party System)

त्वरित समीक्षा (Revision Notes)

- **दलीय व्यवस्था—**

  दलीय व्यवस्था तीन प्रकार की होती है—

  (i) एक-दलीय व्यवस्था, (ii) द्वि-दलीय व्यवस्था, (iii) बहु-दलीय व्यवस्था

(i) एक-दलीय व्यवस्था— कुछ देशों में केवल एक ही दल को सरकार को चलाने व नियंत्रण की अनुमति होती है। वहाँ इस व्यवस्था में कोई प्रतिद्वंदिता नहीं होती है। मोनो पार्टी प्रत्याशियों को मनोनीत करती है और मतदाताओं के लिए केवल दो विकल्प होते हैं—(a) इन सभी में से किसी को मत नहीं (b) पार्टी द्वारा मनोनीत किए गए प्रत्याशियों के नाम के आगे "हाँ" अथवा "ना" लिखना। यह व्यवस्था कम्यूनिस्ट देशों और अन्य अधिकारवादी क्षेत्रों में प्रचलित है जैसे—चीन, उत्तरी कोरिया और क्यूबा। यह व्यवस्था यू.एस.एस.आर. में भी व्याप्त थी जब तक कम्यूनिज्म था।

(ii) द्वि-दलीय व्यवस्था—कुछ देशों में सत्ता आमतौर पर दो मुख्य दलों के बीच बदलती रहती हैं। वहाँ अनेक दूसरी पार्टियाँ हो सकती है, वे भी चुनाव लड़कर कुछ सीटें जीत सकती हैं पर सिर्फ दो ही दल बहुमत पाने और सरकार बनाने के प्रबल दावेदार होते हैं। अमरीका और ब्रिटेन में ऐसी ही दो दलीय व्यवस्था है।

(iii) बहु-दलीय व्यवस्था—जब अनेक दल सत्ता के लिए होड़ में हों और दो दलों से ज्यादा के लिए अपने दम पर या दूसरों से गठबंधन करके सत्ता में आने का ठीक-ठाक अवसर हो तो उसे बहुदलीय व्यवस्था कहते हैं। भारत में भी ऐसी बहुदलीय व्यवस्था हैं इस व्यवस्था में कई दल गठबंधन बनाकर भी सरकार बना सकते हैं। जब किसी बहुदलीय व्यवस्था में अनेक पार्टियाँ चुनाव लड़ने और सत्ता में आने के लिए आपस में हाथ मिला लेती हैं तो इसे गठबंधन या मोर्चा कहा जाता है।

इनके बारे में जानें (Know the Terms)

- **एक-दलीय व्यवस्था (Mono-Party System) :** मोनो-दलीय व्यवस्था एक राजनीतिक व्यवस्था है जिसमें केवल एक ही दल को सरकार को चलाने व नियंत्रण की अनुमति होती है।
- **द्वि-दलीय व्यवस्था (Bi-Party Sytem) :** द्वि-दलीय व्यवस्था वह व्यवस्था है जिसमें सत्ता आमतौर पर दो मुख्य दलों के बीच बदलती रहती है। जिस दल का बहुमत होता है वे सरकार बनाते हैं और अन्य दल विपक्ष की भूमिका में रहते हैं।
- **बहु-दलीय व्यवस्था (Multi-Party System) :** जब अनेक दल सत्ता के लिए होड़ में हों और दो दलों से ज्यादा के लिए अपने दम पर या दूसरों से गठबंधन करके सत्ता में आने का ठीक-ठाक अवसर हो तो इसे बहुदलीय व्यवस्था कहते हैं।
- **गठबंधन सरकार (Coalition Government) :** जब किसी बहुदलीय व्यवस्था में अनेक पार्टियाँ चुनाव लड़ने और सत्ता में आने के लिए आपस में हाथ मिला लेती हैं तो इसे गठबंधन या मोर्चा कहा जाता है।

प्रकरण (TOPIC)-3
राष्ट्रीय और क्षेत्रीय दल (National and Regional Parties)

त्वरित समीक्षा (Revision Notes)

- **गठबंधन**—जब किसी बहुदलीय व्यवस्था में अनेक पार्टियाँ चुनाव लड़ने और सत्ता में आने के लिए आपस में हाथ मिला लेती हैं तो इसे गठबंधन या मोर्चा कहा जाता है। 2004 व 2009 के संसदीय चुनाव में भारत में ऐसे तीन गठबंधन थे—

  (i) राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन, (ii) संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन, (iii) वाम मोर्चा।

- **समानुपातिक हिस्सेदारी**—पार्टियों में गतिविधियों की हिस्सेदारी का स्तर भारत में सबसे ऊँचा है विकसित देशों जैसे— कनाडा, जापान, स्पेन और दक्षिण कोरिया में स्तर कम है— भारत में लोगों का समानुपातिक रूप से राजनीतिक दलों के प्रति सोच ज्यादा खुली हुई है राजनीतिक दलों की सदस्यता और ज्यादा हो रही है।

- **चुनाव आयोग**—प्रत्येक राजनीतिक दल भारत में चुनाव आयोग से पंजीकृत होता है। आयोग सभी दलों को समान मानता है पर यह बड़े और स्थापित दलों को कुछ विशेष सुविधाएँ देता है। इन्हें अलग चुनाव चिन्ह दिया जाता है जिसका प्रयोग पार्टी का अधिकृत उम्मीदवार ही कर सकता है। इस विशेषाधिकार और कुछ अन्य लाभ पाने वाली पार्टियों को "मान्यता प्राप्त दल" कहते हैं।

भारत के प्रमुख राजनीतिक दलों का परिचय—

(i) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आई.एन.सी.)

(ii) भारतीय जनता पार्टी (बी.जे.पी.)

(iii) बहुजन समाज पार्टी (बी.एस.पी.)

(iv) कम्यूनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया मार्क्सवादी (सी.पी.आई.एम.)

(v) कम्यूनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया (सी.पी.आई.)

(vi) राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एन.सी.पी.)

- **राज्य अथवा क्षेत्रीय राजनीतिक दल—**

(i) क्षेत्रीय दलों के लिए यह जरूरी नहीं है कि अपनी विचारधारा या नजरिए में ये पार्टियाँ क्षेत्रीय ही हों। इनमें से कुछ अखिल भारतीय दल हैं पर इन्हें कुछ प्रांतो में ही सफलता मिल पाई है।

(ii) समाजवादी पार्टी, समता पार्टी और राष्ट्रीय जनता दल का राष्ट्रीय स्तर पर राजनीतिक संगठन हैं और इनकी कई राज्यों में इकाइयाँ हैं लेकिन इनकी पहचान प्रांतीय अथवा क्षेत्रीय ही है।

(iii) बीजू जनता दल, सिक्किम लोकतांत्रिक मोर्चा और मिजो नेशनल फ्रंट जैसी पार्टियाँ अपनी क्षेत्रीय पहचान को लेकर सचेत हैं।

इनके बारे में जानें (Know the Terms)

- **राष्ट्रीय दल (National Party) :** कोई दल लोकसभा चुनाव में पड़े कुल वोट का अथवा चार राज्यों के विधान-सभा चुनाव में पड़े कुल वोटों का 6 प्रतिशत हासिल करता है और लोकसभा के चुनाव में कम से कम चार सीटों पर जीत दर्ज करता है तो उसे राष्ट्रीय दल की मान्यता मिलती है।

- **क्षेत्रीय दल (Regional Party) :** जब कोई दल राज्य विधान सभा के चुनाव में पड़े कुल मतों का 6 फीसदी या उससे अधिक हासिल करता है और कम से कम दो सीटों पर जीत दर्ज करता है उसे अपने राज्य के राजनीतिक दल के रूप में मान्यता मिल जाती है।

- **गठबंधन (Alliance/Coalition) :** जब किसी बहुदलीय व्यवस्था में अनेक पार्टियाँ चुनाव लड़ने और सत्ता में आने के लिए आपस में हाथ मिला लेती हैं तो इसे गठबंधन या मोर्चा कहा जाता है। भारत में 2004 और 2009 के संसदीय चुनाव में तीन प्रमुख गठबंधन थे—(i) राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन, (ii) संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन, (iii) वाम मोर्चा।

प्रकरण (TOPIC)-4
राजनीतिक दलों के लिए चुनौतियाँ और उसमें सुधार (Challenges Faced by Political Parties and it reforms)

त्वरित समीक्षा (Revision Notes)

- **पार्टी के भीतर आंतरिक लोकतंत्र की कमी—**

(i) सारी ताकत एक या कुछेक नेताओं के हाथ में सिमट जाती है।

(ii) पार्टियों के पास न सदस्यों की खुली सूची होती है, न नियमित रूप से संगठिक बैठकें होती हैं।

(iii) नियमित रूप से आतंरिक चुनाव भी नहीं होती है।

(iv) सामान्य कार्यकर्ता अनजान ही रहता है कि पार्टी के अंदर क्या चल रहा है। उसके पास न तो नेताओं से जुड़कर फैसलों को प्रभावित करने की ताकत होती है।

(v) चूँकि कुछ नेताओं के पास ही असली ताकत होती हैं इसलिए जो उनसे असहमत होते हैं उनके पार्टी में टिके रह पाना मुश्किल हो जाता है।

- **वंशवाद की चुनौती—**

(i) जो लोग ऊपर के स्तर को नेता होते हैं वे अनुचित लाभ लेते हुए अपने नजदीकी लोगों और यहाँ तक की अपने ही परिवार के लोगों को आगे बढ़ाते है।

(ii) अनेक दलों में शीर्ष पद पर हमेशा एक ही परिवार के लोग आगे आते हैं।

(iii) यह बात लोकतंत्र के लिए भी अच्छी नहीं है क्योंकि इससे अनुभवहीन और बिना जनाधार वाले लोग ताकत वाले पदों पर पहुँच जाते हैं।

(v) यह प्रवृत्ति कुछ प्राचीन लोकतांत्रिक देशों सहित कमोबेश पूरी दुनिया में दिखाई देती है।

- **पैसा और अपराधी तत्त्व—**

(i) चुनाव के समय पैसा और अपराधी तत्त्वों की घुसपैठ प्रत्यक्ष रूप दिखाई देती है।

(ii) पार्टियाँ ऐसे ही उम्मीदवारों को उतारती हैं जिनके पास काफी पैसा हो या जो पैसा जुटा सकें।

(iii) किसी पार्टी को ज्यादा धन देने वाली कंपनियाँ और अमीर लोग उस पार्टी की नीतियों और फैसलों को भी प्रभावित करते हैं।

- **पार्टियाँ मतदाताओं को सार्थक विकल्प नहीं देती हैं—**

हाल के वर्षों में दलों के बीच वैचारिक अंतर कम हो गया और यह प्रवृत्ति दुनिया भर में दिखती हैं। जैसे— ब्रिटेन की लेबर पार्टी और कंजरवेटिव पार्टी के बीच अब बड़ा कम अंतर रह गया है। दोनों दल बुनियादी मसलों पर सहमत है और उनके बीच अंतर बस ब्यौरों का रह गया है कि नीतियाँ कैसे बनाई जाएँ उन्हें कैसे लागू किया जाए।

(i) भारत में भी सभी बड़ी पार्टियों के बीच आर्थिक मसलों पर बड़ा कम अंतर रह गया है।

सुधार—इन चुनौतियों का सामना करने के लिए जरूरी है कि राजनीतिक दलों में सुधार हो। सरकार द्वारा कुछ सुधार किए गए है जो हैं, दल-बदल कानून, चुनाव लड़ने के लिए शपथ-पत्र, पार्टियों की संगठनात्मक बैठकों का आयोजन।

- **राजनीतिक पार्टियों और उनके नेताओं के सुधार के लिए कुछ सुझाव—**

(i) राजनीतिक दलों के आंतरिक कामकाज को व्यवस्थित करने के लिए कानून बनाया जाना चाहिए। सभी दल अपने सदस्यों की सूची रखें, अपने संविधान का पालन करें पार्टी में विवाद की स्थिति में एक स्वतंत्र प्राधिकारी को पंच बनाए और सबसे बड़े पदों के लिए चुनाव कराएँ यह व्यवस्था अनिवार्य की जानी चाहिए राजनीतिक दल महिलाओं को एक खास न्यूनतम अनुपात में (करीब एक तिहाई) जरूर टिकट दें। इसी प्रकार दल के प्रमुख पदों पर भी औरतों के लिए आरक्षण होना चाहिए।

(ii) चुनाव का खर्च सरकार उठाए। सरकार दलों को चुनाव लड़ने के लिए धन दे। यह मदद पेट्रोल, कागज, फोन वगैरह के रूप में भी हो सकती है या फिर पिछले चुनाव में मिले मतों के अनुपात में नकद पैसा दिया जा सकता है।

इनके बारे में जानें (Know the Terms)

- **दल-बदल (Defection) :** विधायिका के लिए किसी दल विशेष से निर्वाचित होने वाले प्रतिनिधि को उस दल को छोड़कर किसी अन्य दल में चले जाना।
- **शपथ-पत्र (Affidavit) :** किसी अधिकारी को सौंपा गया एक दस्तावेज। इसमें कोई व्यक्ति अपने बारे में निजी सूचनाएँ देता है उनके सही होने के बारे में शपथ उठाता है। इस पर सूचना देने वाले के हस्ताक्षर होते हैं।
- **चुनाव आयोग (Election Commission) :** चुनाव आयोग एक बहुसदस्यीय स्वशासी संख्या है जो संवैधानिक रूप से चुनावों को कराने व निर्देशन का जिम्मेदारी से निर्वहन करती है।

❑❑

अध्याय - 5 लोकतंत्र के परिणाम

प्रकरण (TOPIC)-1
लोकतंत्र के परिणामों का मूल्यांकन कैसे करें ?
(How Do We Assess Democracy's outcomes?)

त्वरित समीक्षा (Revision Notes)

(1) लोकतंत्र शासन की अन्य व्यवस्थाओं से बेहतर है। तानाशाही और अन्य व्यवस्थाएँ ज्यादा दोषपूर्ण हैं—

- लोकतंत्र ज्यादा बेहतर है क्योंकि—

(i) नागरिकों में समानता को बढ़ावा देता है।

(ii) व्यक्तियों की गरिमा को बढ़ाता है।

(iii) इससे फैसलों में बेहतरी होती है।

(iv) टकरावों को टालने और संभालने का तरीका देता है।

(v) इसमें गलतियों को सुधारने की गुंजाइश होती है।

(2) क्या लोकतांत्रिक सरकार उत्तरदायी है ? क्या प्रभावी (वैध) है ?

- कल्पना करो सरकार का अन्य स्वरूप जो जल्दी फैसले लेता है। लेकिन यह ऐसे निर्णय करती हैं जिन्हें लोग स्वीकार नहीं करते हैं और तब फैसलों से परेशानी हो सकती है।
- लोकतंत्र विचार-विमर्श और मोल-तोल के विचार पर आधारित है अत: फैसला लेने में थोड़ा वक्त लगता है।
- लोकतांत्रिक सरकार सारी प्रक्रिया को पूरा करने में ज्यादा समय ले सकती है।
- लेकिन इसने पूरी प्रक्रिया को माना है इसलिए इस बात की ज्यादा संभावना है कि लोग उसके फैसलों को मानेंगे और वे ज्यादा प्रभावी होगें।
- इस प्रकार लोकतंत्र में फैसला लेने में जो वक्त लगता है वह बेकार नहीं जाता है।

(3) प्रत्येक लोकतंत्र के परिणाम—

- लोकतंत्र के परिणाम के रूप में हम एक उत्तरदायी, जिम्मेदार और वैध शासन की सोचते हैं।
- आर्थिक परिणाम के रूप में, हम लोकतंत्र में ये उम्मीद करते हैं कि आर्थिक समृद्धि और विकास होगा तथा गरीबी और असमानता में कमी आएगी।
- सामाजिक परिणाम के रूप में हम लोकतांत्रिक व्यवस्था से ये उम्मीद करते हैं कि सामाजिक विभाजनों में अनुकूलता आएगी तथा सभी नागरिकों को स्वतंत्रता ओर महत्त्व मिलेगा।

इनके बारे में जानें (Know the Terms)

- **तानाशाही (Dictatorship) :** तानाशाही के अंतर्गत सारी शक्तियाँ किसी एक व्यक्ति अथवा व्यक्तियों के समूह में निहित होती है।
- **वैधानिक सरकार (Legitimate government) :** वैधानिक रूप से चुनी गई सरकार को वैधानिक सरकार कहा जाता है।
- **पारदर्शिता (Iransparency) :** लोकतांत्रिक व्यवस्था में किए गए निर्णयों की प्रक्रिया का परीक्षण किया जाता है, यही पारदर्शिता है।

प्रकरण (TOPIC)-2
राजनीतिक परिणाम (Political Outcomes)

त्वरित समीक्षा (Revision Notes)

- लोकतंत्र उत्तरदायी, जिम्मेदार और वैध शासन है।
- लोकतंत्र में इस बात की पक्की व्यवस्था होती है कि फैसले कुछ कायदे-कानून के अनुसार होगें और अगर कोई नागरिक यह जानना चाहे कि फैसले लेने में नियमों का पालन हुआ है या नहीं तो वह इसका पता कर सकता है। उसे यह न सिर्फ जानने का अधिकार हैं बल्कि उसके पास इसके साधन भी उपलब्ध हैं। इसे पारदर्शिता कहते हैं।

- नागरिकों का सूचना का अधिकार जैसे— विषयों में लोकतांत्रिक सरकारों का रिकॉर्ड अच्छा रहा है गैर–लोकतांत्रिक शासन व्यवस्थाओं की तुलना में। लोकतंत्र में सरकारों से यह उम्मीद की जाती है कि वे लोगों की माँग तथा आवश्यकताओं को ध्यान रखने वाली हों तथा भ्रष्टाचार से मुक्त शासन दें।
- बहरहाल एक मामलें में लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था निश्चित रूप से अन्य शासनों से बेहतर है, यह वैध शासन व्यवस्था है। यह सुस्त हो सकती है, कम कार्य-कुशल हो सकती है, इसमें भ्रष्टाचार हो सकता है। यह लोगों की जरूरतों की कुछ हद तक अनदेखी कर सकती है लेकिन लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था लोगों की अपनी शासन व्यवस्था है।

इनके बारे में जानें (Know the Terms)

- **उत्तरदायी सरकार (Accountable government) :** सरकार जिसका चुनाव लोगों द्वारा किया जाता है वो उनके प्रति उत्तरदायी होती है।
- **जिम्मेदार सरकार (Responsive government) :** ऐसी सरकार जिसमें लोगों को सरकार द्वारा किए जा रहे निर्णयों की प्रक्रिया के बारे में लोगों को जानने का अधिकार हो।

प्रकरण (TOPIC)-3
आर्थिक परिणाम (Economic Outcomes)

त्वरित समीक्षा (Revision Notes)

- **आर्थिक वृद्धि और विकास—**

(i) आर्थिक विकास कई कारकों मसलन देश की जनसंख्या के आकार, वैश्विक स्थिति अन्य देशों से सहयोग और देश द्वारा तय की गईं आर्थिक प्राथमिकताओं पर भी निर्भर करता है।

(ii) तानाशाही वाले कम विकसित देशों और लोकतांत्रिक व्यवस्था वाले कम विकसित देशों के बीच का अंतर नगण्य सा है।

(iii) बहरहाल, हम यह नहीं कह सकते हैं कि लोकतंत्र आर्थिक विकास का वादा (guarantee) है। पर हम यह उम्मीद कर सकते हैं कि लोकतंत्र आर्थिक विकास के मामलें में तानाशाही से नहीं पिछड़ेगा।

- **लोकतंत्र आर्थिक असमानता और गरीबी को कम करता है।**

(i) लोकतंत्र से आर्थिक असमानताओं में वृद्धि होती है। मुट्ठी भर धन कुबेर आय और संपत्ति में अपने अनुपात में बहुत ज्यादा हिस्सा पाते हैं। देश की कुल आय में उनका हिस्सा भी बढ़ता गया। समाज के सबसे निचले हिस्से के लोगों को जीवन बसर करने के लिए काफी कम साधन मिलते हैं। उनकी आमदनी गिरती गई। कई बार उन्हें भोजन, कपड़ा, मकान, शिक्षा और इलाज जैसी बुनियादी जरूरतें पूरा करने में मुश्किल आती है।

(ii) लोकतांत्रिक रूप से निर्वाचित सरकार गरीबी के प्रश्न पर गरीबी कम करने के लिए अनेक कल्याणकारी योजनाएँ बनाती है।

(iii) लोकतांत्रिक सरकारें केवल कल्याणकारी योजनाएँ ही नहीं बनाती बल्कि सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़े लोगों के लिए नौकरी, चुनावों और शौक्षणिक संस्थाओं में आरक्षण भी प्रदान करती है।

इनके बारे में जानें (Know the Terms)

- **आर्थिक विकास (Economic development) :** आर्थिक विकास से आशय देश की धन संपत्ति से है, किसी प्रदेश (क्षेत्र) अथवा समुदाय के निवासियों के बेहतर जीवन-स्तर से है।
- **तानाशाही (Dictatorship) :** सरकार का एक स्वरूप जिसमें सारी शक्तियाँ एक तानाशाह में निहित होती हैं।
- **आर्थिक असमानता (Economic Inequality) :** इसमें व्यक्तियों के जीवन स्तर में अनेकों अंतर पाए जाते हैं, समूहों में, जनसंख्या के विभिन्न समूहों के बीच अथवा विभिन्न देशों के बीच ये आर्थिक अंतर होते हैं।

प्रकरण (TOPIC)-4
सामाजिक परिणाम (Social Outcomes)

त्वरित समीक्षा (Revision Notes)

- **सामाजिक विविधताओं में सामंजस्य—**

- लोकतांत्रिक व्यवस्थाएँ आमतौर पर अपने अंदर की प्रतिद्वंदिताओं को संभालने की प्रक्रिया विकसित कर लेती हैं। इससे इन टकरावों के विस्फोटक या हिंसक रूप लेने का अंदेशा कम हो जाता है।
- कोई भी समाज अपने विभिन्न समूहों के बीच के टकरावों को पूरी तरह और स्थायी रूप से खत्म नहीं कर सकता, पर लोकतंत्र इन अंतरों और विभेदों के बीच बातचीत से सामंजस्य बैठाने का तरीका विकसित कर सकता है।
- पर श्रीलंका का उदाहरण हमें इस बात की भी याद दिलाता हैं कि इस परिणाम को हासिल करने के लिए लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं को स्वयं भी दो शर्तों को पूरा करना होता है।

(i) यह गौर करना जरूरी है कि लोकतंत्र का सीधे-सीधे अर्थ बहुमत की राय से शासन करना नहीं है। बहुमत को सदा ही अल्पमत का ध्यान रखना होता है। उसके साथ काम करने की जरूरत होती है। तभी, सरकार जन-सामान्य की इच्छा का प्रतिनिधित्व कर पाती है।

(ii) यह भी समझना जरूरी है कि बहुमत के शासन का अर्थ धर्म, नस्ल या भाषायी आधार के बहुसंख्यक समूह का शासन नहीं होता। बहुमत के शासन का मतलब होता है कि हर फैसले या चुनाव में अलग-अलग लोग और समूह बहुमत का निर्माण कर सकते हैं या बहुमत में हो सकते हैं।

➢ **लोकतंत्र नागरिकों को गरिमा और आज़ादी प्रदान करता हैं—**

- व्यक्ति की गरिमा और आज़ादी के मामले में लोकतांत्रिक व्यवस्था किसी भी अन्य शासन प्रणाली से काफी आगे है। प्रत्येक व्यक्ति अपने साथ के लोगों से सम्मान पाना चाहता है। अक्सर टकराव तभी पैदा होते है जब कुछ लोगों को लगता हैं कि उनके साथ सम्मान का व्यवहार नहीं किया गया।
- गरिमा और आज़ादी की चाह ही लोकतंत्र का आधार है। दुनिया भर की लोकतांत्रिक व्यवस्थाएँ इस चीज़ को मानती हैं—कम से कम सिद्धान्त के तौर पर तो जरुर। अलग-अलग लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं में इन बातों पर अलग-अलग स्तर का आचरण होता है।
- स्त्रियों की ही गरिमा का उदाहरण लें। दुनिया के अधिकांश समाज पुरुष प्रधान समाज ही रहे हैं।
- महिलाओं के लंबे संघर्ष के बाद जब जाकर यह माना जाने लगा हैं कि महिलाओं के साथ गरिमा और समानता का व्यवहार लोकतंत्र की जरुरी शर्त है।
- भारत में लोकतांत्रिक व्यवस्था ने कमजोर और भेदभाव का शिकार हुई जातियों के लोगों के समान दर्जे और समान अवसर के दावे को बल दिया है।

➢ **निष्कर्ष—**

(i) लोकतंत्र की एक खासियत है कि इसकी जाँच-परख और परीक्षा कभी खत्म नहीं होती। वह एक जाँच पर खरे उतरे तो अगली जाँच आ जाती है।

(ii) लोग सचेत हो गए हैं और वे सत्ता में बैठे लोगों के कामकाज का आलोचनात्मक मूल्यांकन करने लगे हैं। वे अपने असंतोष को मुखर होकर बताते हैं। लोगों का असंतोष जताना लोकतंत्र की सफलता को तो बताता ही है साथ ही यह लोगों के प्रजा से नागरिक बनने की गवाही भी देता है।

इनके बारे में जानें (Know the Terms)

➢ **सामाजिक विभिन्नता (Social diversity) :** अधिकतर यह देखा गया है कि एक ही संस्कृति के लोग एक-दूसरे से बँटे हुए हैं। सामाजिक विभिन्नता का प्रमुख भागों में जातीयता, जीवनस्तर, धर्म, भाषा, पसंद और वरीयता शामिल हो सकते हैं।

➢ **सामाजिक विभाजन (Social divisions) :** सामाजिक विभाजन तब होता है जब कुछ सामाजिक अंतर दूसरी अनेक विभिन्नताओं से ऊपर और बड़े हो जाते हैं। जैसे—हमारे देश में दलित आमतौर पर गरीब और भूमिहीन हैं। उन्हें भी अक्सर भेदभाव और अन्याय का शिकार होना पड़ता है।

❑❑

इकाई–IV आर्थिक विकास की समझ

अध्याय – 1 विकास

प्रकरण (TOPIC)-1
राष्ट्रीय विकास
(National Development)

त्वरित समीक्षा (Revision Notes)

- विकास को प्रगति के रूप में भी जाना जाता है। यह विचार हमारे साथ सदैव रहता है।
- हर व्यक्ति अलग-अलग चीजें पाना चाहता है। वे ऐसी चाहते हैं जो उनके लिए सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हों अर्थात् वे चीजें जो उनकी आकांक्षाओं और इच्छाओं को पूरा कर सकें।
- लोग चाहते हैं कि उन्हें नियमित काम, बेहतर मजदूरी और अपनी उपज तथा उत्पादों के लिए अच्छी कीमतें मिलें। दूसरे शब्दों में वे ज्यादा आय चाहते हैं।
- किसी भी तरह से ज्यादा आय चाहने के अतिरिक्त, लोग बराबरी का व्यवहार, स्वतंत्रता, सुरक्षा और दूसरों से आदर मिलने की इच्छा भी रखते हैं।
- अलग-अलग लोगों के लिए विकास के अलग-अलग लक्ष्य होते हैं। जैसे– एक शहरी बेरोजगार युवा अपने लिए अच्छे वेतन की नौकरी, पदोन्नति आदि दूसरी ओर गाँव का बेरोजगार व्यक्ति अपने लिए गाँव में ही रोजगार के अवसर चाहता है। श्रमिकी नौकरी की सुरक्षा ही उसकी गरिमा है।
- आय विकास का एक महत्त्वपूर्ण अंश है।
- देशों की तुलना करने के लिए उनकी आय और प्रति व्यक्ति आय सबसे महत्त्वपूर्ण विशिष्टता समझी जाती है।
- लोगों के लक्ष्य भिन्न-भिन्न हैं, तो उनकी राष्ट्रीय विकास के बारे में धारणा भी भिन्न होगी।
- विश्व बैंक ने विकास के लिए प्रति व्यक्ति आय को सूचक माना है।
- विकास के सूचक के रूप में यू.एन.डी.पी. स्वास्थ्य, शिक्षा के स्तर और नागारिकों की प्रति व्यक्ति आय पर विचार करती है।
- विश्व बैंक के अनुसार सन् 2016 में जिन देशों में प्रति व्यक्ति आय 12,236 अमेरिकी डालर प्रतिवर्ष है वे धनवान देश हैं तथा जिन देशों में प्रति व्यक्ति आय 1005 अमेरिकी डालर प्रतिवर्ष या उससे कम है वे निम्न-आय वाले देश हैं।
- भारत मध्य आय वर्ग के देशों में आता है क्योंकि सन् 2016 में प्रति व्यक्ति आय 1840 अमेरिकी डालर प्रतिवर्ष थी।
- दो राज्यों अथवा दो देशों की तुलना करने का एक और तरीका है, उनकी शिशु मृत्यु दर, साक्षरता दर, निवल उपस्थिति अनुपात, मानव विकास सूचकांक, उपलब्ध सुविधाएँ आदि।
- केरल में शिशु मृत्यु दर कम और साक्षरता दर अधिक है क्योंकि केरल ने स्वास्थ्य की देखभाल और शिक्षा की सुविधाओं को बराबर रखा है।
- यह आवश्यक नहीं कि जेब में रखा रुपया वे वस्तुएँ और सेवाएँ खरीद सके जिनकी आपको जरुरत है। जैसे रुपया प्रदूषण मुक्त वातावरण नहीं खरीद सकता।

इनके बारे में जानें– (Know the Terms)

- **विकास (Development) :** विकास का अर्थ है अधिक आय तथा और अधिक आय के लिए वे नियमित काम, बेहतर मजदूरी और अपनी उपज तथा उत्पादों के लिए अच्छी कीमतें मिलें।
- **राष्ट्रीय विकास (National Development) :** राष्ट्रीय विकास का अर्थ है प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि और अपनी स्वयं की सामर्थ्य से अर्थव्यवस्था को बढ़ाना।
- **संपोषणीय आर्थिक विकास (Sustainable Economic Development) :** संपोषणीय आर्थिक विकास वह प्रक्रिया है जो आर्थिक विकास में इस उद्देश्य का ध्यान रखती है कि प्राकृतिक संसाधनों और पर्यावरण को किसी प्रकार की हानि पहुँचाए बिना वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों दोनों के जीवन में गुणवत्ता बनी रहे।

- **आर्थिक क्रियाएँ (Economic Activities) :** वे क्रियाएँ जो करने पर वापसी में आमदनी प्रदान करती है अथवा साधारण शब्दों में वे क्रियाएँ जिनका संबंध धन से है।
- **अनार्थिक क्रियाएँ (Non-Economic Activities) :** वे क्रियाएँ जिनका संबंध धन से नहीं होता है अथवा जिनसे वापसी में कोई आमदनी नहीं होती है।
- **आर्थिक विकास (Economic Development) :** एक प्रक्रिया जिसके अंतर्गत देश के लिए राष्ट्रीय आय और प्रति व्यक्ति आय होती है और इसके साथ ही जो लोग गरीबी का जीवन जी रहे हैं उसमें कमी आती है, रोजगार के बहुत सारे अवसर पैदा होते हैं तथा समाज के गरीब तबके के लोगों के जीवन स्तर में वृद्धि होती है यह "आर्थिक विकास" के रूप में जाना जाता है।
- **राष्ट्रीय आय (National Income) :** यह उन सभी वस्तुओं और सेवाओं का योग है जो एक देश के लिए एक निश्चित समय के लिए उपलब्ध है जिनसे कुल आय का स्रोत है जिसमें बाहरी (विदेशी) आय भी है।
- **प्रति व्यक्ति आय (Per Capita Income) :** किसी देश की औसत आय को प्रति व्यक्ति आय कहा जाता है।
- **विकासशील देश (Developing countries) :** वे देश जिनकी आय जीवन स्तर के एक निश्चित मानदंड से कम है उन्हें "विकासशील देश" कहा जाता है।
- **अविकसित देश (Underdeveloped Country) :** वह देश जिसकी आय ऊँची नहीं है तथा रहने का जीवन स्तर भी निम्न है उसे अविकसित देश के रूप में जाना जाता है।
- **अर्थव्यवस्था (Economy) :** आर्थिक ढाँचा जो किसी देश के आर्थिक जीवन व वहाँ के लोगों के जीवन स्तर के बारे में वर्णन करने में सहायता करता है।

प्रकरण (TOPIC)–2
सार्वजनिक सुविधाएँ (Public Facilities)

त्वरित समीक्षा (Revision Notes)

- सार्वजनिक सुविधाएँ वे सुविधाएँ होती हैं जो सरकार द्वारा आम लोगों को उपलब्ध कराई जाती हैं।
- सार्वजनिक सेवाओं और सुविधाओं के प्रावधान का शहरी परिवेश में जीवन की गुणवत्ता उनके निवास तथा अन्य का महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।
- सेवाओं– व्यवहार्य, संपोषणीय, स्वस्थ और सशक्त, समुदाय, विभेद और पराक्रम जैसी उपलब्धियों को पैदा करने में सार्वजनिक सुविधाएँ एक आवश्यक भूमिका का निर्वहन करती हैं।
- अकेला धन वे सब वस्तुएँ और सेवाएँ नहीं खरीद सकता जो एक बेहतर जीवन के लिए आवश्यक हो सकती हैं।
- आमदनी स्वयं में पूर्णरूप से पर्याप्त सूचक नहीं है, जो नागरिकों के लिए वस्तुएँ और सेवाएँ उपलब्ध करा सके।
- सरकार आवश्यक सुविधाएँ जैसे स्वास्थ्य देखरेख, सफाई व्यवस्था, विद्युत, सार्वजनिक वाहन और शिक्षण संस्थाएँ उपलब्ध कराती है।
- केरल में शिशु मृत्यु दर कम है क्योंकि वहाँ स्वास्थ और शिक्षा की बुनियादी सुविधाओं की पर्याप्त व्यवस्था उपलब्ध है।
- कुछ राज्यों में सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पी.डी.एस.) की व्यवस्था ठीक है अगर कुछ सार्वजनिक वितरण प्रणाली की दुकानें जैसे राशन की दुकान अगर कुछ स्थानों पर ठीक प्रकार से काम नहीं करती हैं, तो वहाँ लोगों के सामने समस्या खड़ी होगी और वे कुछ प्रतिक्रिया करेंगे। कुछ राज्यों में लोगों का स्वास्थ्य और पोषण संबंधी स्तर निश्चित रूप से बेहतर है।
- यू.एन.डी.पी. द्वारा प्रकाशित मानव विकास रिपोर्ट में देशों की तुलना लोगों के शैक्षिक स्तर, उनके स्वास्थ स्तर और प्रति व्यक्ति आय पर आधारित है।
- मानव विकास सूची (एच.डी.आई.) के माध्यम से जिसमें कि मिश्रित आंकड़ों में जीवन प्रत्याक्षा, शिक्षा और प्रति व्यक्ति आय जैसे सूचकों का प्रयोग मानव विकास के लिए देशों को स्तर प्रदान करने में किया गया है।
- मानव विकास सूचकांक (2016) में भारत विश्व में 131वें स्थान पर है।
- विकास के लक्ष्य में अच्छी आय, समान व्यवहार, स्वतंत्रता, शिक्षा, सुरक्षा और शांति सम्मिलित है।
- लोकतांत्रिक राजनीतिक व्यवस्था के माध्यम से इन विकास के लक्ष्यों को समाज के विभिन्न वर्गों में प्राप्त किया जा सकता है।
- यू.एन.डी.पी. द्वारा प्रकाशित मानव विकास सूचकांक में देश के विकास के स्तर को इंगित किया गया है, इसके लिए अभी कितना और चलना है और अभी वह कितना दूर है, उच्च स्तर तक पहुँचने में, जिसके लिए लोगों की प्रति व्यक्ति आय, जिसके कल्याणकारी भाग जैसे जीवन प्रत्याशा, साक्षरता, लोगों का शैक्षिक स्तर और स्वास्थ्य स्तर आदि आवश्यक अंग है।

इनके बारे में जानें (Know the Terms)

- **शिशु मृत्यु दर (Infant Mortality Rate) :** किसी वर्ष में पैदा हुए 1000 जीवित बच्चों में से एक वर्ष की आयु से पहले मर जाने वाले बच्चों का अनुपात दिखाती है।
- **साक्षरता दर (Literacy Rate) :** 7 वर्ष और उससे अधिक आयु के लोगों में साक्षर जनसंख्या का अनुपात।
- **निबल उपस्थिति अनुपात :** 6-10 वर्ष की आयु के स्कूल जाने वाले कुल बच्चों का उस आयु वर्ग के कुल बच्चों के साथ प्रतिशत।
- **शरीर द्रव्यमान सूचकांक** = $\frac{\text{वजन किग्रा में}}{(\text{ऊँचाई मीटर में})^2}$
- **मानव विकास सूचकांक (Human Development Index) :** ये जीवन प्रत्याशा, शिक्षा और प्रति व्यक्ति आय के मिले-जुले आँकड़े हैं जिनका प्रयोग देशों को मानव विकास की चार स्तरीय श्रेणी देने में किया जाता है।

प्रकरण (TOPIC)–3
विकास की धारणीयता (संपोषणीयता) (Sustainability of Development)

त्वरित समीक्षा (Revision Notes)

- संपोषणीय आर्थिक विकास का अर्थ है विकास अपना स्थान पर्यावरण को क्षति पहुँचाए बिना प्राप्त करेगा तथा वर्तमान विकास भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकता से कोई समझौता नहीं करेगा।

संपोषणीय विकास के विभिन्न मापदण्ड हैं–

(i) अत्यधिक प्रयोग पर नियंत्रण तथा संपोषणीय विकास के लिए अभिज्ञता पैदा करके उपलब्ध कराना।

(ii) नवीकरणीय संसाधनों के प्रयोग में वृद्धि।

(iii) जीवाश्म ईंधन का कम प्रयोग।

(iv) कार्बनिक कृषि की शुरुआत।

(v) विश्वव्यापी तापक्रम वृद्धि को कम करने के साधनों को स्वीकार करना।

- संपोषणीय विकास के लिए संसाधनों का विवेकपूर्ण प्रयोग होना चाहिए, वर्तमान में मस्तिष्क यह होना चाहिए कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भविष्य में भी आवश्यकताएँ होंगी जैसे– भूमिगत जल।
- कृषि में भूमिगत जल का अत्यधिक प्रयोग, जल अनवीकरणीय संसाधन है हमें अनिवार्य रूप से पानी की पूर्ति में मदद करनी होगी।
- आर्थिक वृद्धि के लिए संपोषणीय विकास महत्त्वपूर्ण है क्योंकि–

(i) पर्यावरण निश्चित रूप से सुरक्षित रहेगा जब विकास अपना स्थान लेगा।

(ii) संसाधनों का प्रयोग इतना हो कि कुछ भविष्य में आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित बना रहे।

(iii) सभी लोगों के रहने के स्तर में वृद्धि होनी चाहिए।

- महात्मा गाँधी ने कहा था कि, "पृथ्वी पर सभी की आवश्यकता के लिए पर्याप्त यात्रा में संसाधन उपलब्ध हैं, लेकिन किसी एक व्यक्ति के लालच और संतुष्टि के लिए पर्याप्त नहीं हैं।
- पर्यावरण के निम्नीकरण के परिणाम हैं स्वरूप राष्ट्र या राज्य की सीमाओं का सम्मान नहीं होता।
- संपोषणीय विकास तुलनात्मक रूप से ज्ञान का एक नया क्षेत्र है जिसमें वैज्ञानिक, अर्थशास्त्री, चिंतक और अन्य सामाजिक वैज्ञानिक एक-दूसरे के साथ मिलकर कार्य कर रहे हैं।

इनके बारे में जानें (Know the Terms)

- **संपोषणीय विकास (Sustainable Development) :** संपोषणीय विकास मानवीय आवश्यकताओं के जीवन स्तर में वृद्धि और बेहतर जीवन जीने के बीच बढ़िया संतुलन बनाता है तथा प्राकृतिक संसाधनों को सुरक्षित रखने एवं पारिस्थितिक तंत्र जिसकी हमें आवश्यकता है, जिस पर भविष्य की पीढ़ियाँ निर्भर हैं।
- **कार्बनिक खेती (Organic Farming) :** सब्जी और पशुधन का उपयोग प्राकृतिक संसाधन के रूप में पोषक तत्त्वों (जैसे कम्पोस्ट खाद,

फसल अपशिष्ट, और खाद) तथा फसल के प्राकृतिक तरीके तथा घास-पात पर नियंत्रण, अकार्बनिक कृषि रसायनों के प्रयोग के बजाय इनका प्रयोग करना चाहिए।

- **जीवाश्म ईंधन (Fossil Fuels) :** एक प्राकृतिक ईंधन जैसे कोयला और गैस, इनका निर्माण भूगर्भीय क्रिया से होता है पृथ्वी के अंदर जो क्रियाशील संघटित पदार्थ से बनते हैं।
- **वैश्विक कृषि (Global Farming) :** पृथ्वी पर चारों ओर क्रमिक रूप से बढ़ते तापमान का सम्बन्ध वातावरण से है, इससे हरित गृह (Green house) प्रभावित हुए हैं जिसका कारण कार्बनडाई ऑक्साइड, क्लोरोफ्लूरो कार्बन और अन्य प्रदूषक तत्त्वों का बढ़ता स्तर है।

❑❑

अध्याय – 2 : भारतीय अर्थव्यवस्था के क्षेत्रक

प्रकरण (TOPIC)-1
आर्थिक कार्यों के क्षेत्रक
(Sectors of Economic Activities)

त्वरित समीक्षा (Revision Notes)

- लोग विभिन्न प्रकार की आर्थिक गतिविधियों वस्तु उत्पादन और सेवाओं में लगे हुए हैं।
- आर्थिक गतिविधियों को तीन क्षेत्रकों में वर्गीकृत किया जा सकता है–

(i) प्राथमिक क्षेत्रक

(ii) द्वितीयक क्षेत्रक

(iii) तृतीयक क्षेत्रक

- आर्थिक गतिविधियाँ, हालाँकि तीन विभिन्न श्रेणियों का एक समूह है, लेकिन एक दूसरे पर बहुत निर्भर हैं।
- प्राथमिक क्षेत्रक में विभिन्न उत्पादन गतिविधियाँ द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्रक को बड़ी संख्या में वस्तुओं का उत्पादन करती हैं तथा सेवा देती हैं, और बड़ी संख्या में लोगों को रोजगार देती हैं।
- किसी विशेष वर्ष में प्रत्येक क्षेत्रक द्वारा उत्पादित अंतिम वस्तुओं और सेवाओं का मूल्य, उस वर्ष में क्षेत्रक के कुल उत्पादन की जानकारी प्रदान करता है।
- द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्रक में रोजगार के पर्याप्त अवसर उपलब्ध नहीं हैं।
- देश के आधे से ज्यादा श्रमिक प्राथमिक क्षेत्रक में काम कर रहे हैं, विशेषकर कृषि में।
- तीनों क्षेत्रकों के उत्पादनों के योगफल को देश का सकल घरेलू उत्पादन (जी.डी.पी) कहते हैं।
- सकल घरेलू उत्पादन (जी.डी.पी.) में कृषि का योगदान केवल एक चौथाई 1/4 है, जबकि उत्पादन द्वितीय व तृतीयक क्षेत्रक का योगदान तीन चौथाई (3/4) है।
- वर्ष 2003 में भारत में प्राथमिक क्षेत्रक को प्रतिस्थापित करते हुए तृतीयक क्षेत्रक सबसे बड़े उत्पादक क्षेत्रक के रूप में उभरा।
- निम्न कारणों के चलते भारत में तृतीयक क्षेत्रक महत्त्वपूर्ण हो गया है–

(i) प्रथम अनेक सेवाओं जैसे–अस्पताल, शैक्षिक संस्थाएँ, डाक एवं तार सेवा, थाना, कचहरी, बैंक, नगर निगम, रक्षा, बीमा आदि की जिम्मेदारी सरकार उठाती है।

(ii) द्वितीय, कृषि व उद्योग का विकास होता है।

(iii) तृतीय, जैसे-जैसे बढ़े शहरों में आय का स्तर बढ़ता है, कुछ लोग अन्य कई सेवाओं जैसे– रेस्तरां, पर्यटन, शापिंग, निजी अस्पताल, निजी विद्यालय व्यावसायिक प्रशिक्षण आदि की माँग शुरू कर देते हैं।

(iv) चतुर्थ, विगत दशकों में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी पर आधारित कुछ नवीन सेवाएँ महत्त्वपूर्ण एवं अपरिहार्य हो गई हैं। इन सेवाओं के उत्पादन में तीव्र वृद्धि हो रही है।

- भारत में सेवा क्षेत्रक कई तरह के लोगों को नियोजित करते हैं। एक ओर, उन सेवाओं की संख्या सीमित है, जिसमें अत्यंत कुशल और

शिक्षित श्रमिकों को रोजगार मिलता है दूसरी ओर, बहुत अधिक संख्या में लोग छोटी दुकानों, मरम्मत कार्यों, परिवहन जैसी सेवाओं में लगे हुए हैं।

इनके बारे में जानें (Know the Terms)

- **प्राथमिक क्षेत्रक (Primary Sector) :** इसके अंतर्गत वे सभी आर्थिक गतिविधियाँ है जिसमें हम प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करके किसी वस्तु का उत्पादन करते हैं जैसे कृषि, मत्स्य पालन, खनन आदि।
- **द्वितीयक क्षेत्रक (Secondary Sector) :** द्वितीयक क्षेत्रक की गतिविधियों के अंतर्गत प्राकृतिक उत्पादों को विनिर्माण प्रणाली के जरिए अन्य रूपों में परवर्तित किया जाता है। यह प्राथमिक क्षेत्रक के बाद अगला कदम है। जैसे अयस्क का खनन प्राथमिक गतिविधि है लेकिन स्टील का उत्पादन द्वितीयक क्षेत्रक की गतिविधि है।
- **तृतीयक क्षेत्रक (Tertiary Sector) :** ये गतिविधियाँ प्राथमिक और द्वितीयक क्षेत्रक के विकास में मदद करती हैं जैसे बैंकिग, परिवहन, बीमा इत्यादि।
- **अंतिम उत्पादन (Final Product) :** वे वस्तुएँ जो उपयोग के लिए तैयार हैं उन्हें अंतिम उत्पादन कहते हैं जैसे डबल रोटी (Bread) तो उपयोग के लिए तैयार है।
- **मध्यवर्ती (Intermediate) :** मध्यवर्ती वस्तुएँ, अंतिम वस्तुओं और सेवाओं के निर्माण में इस्तेमाल की जाती हैं। अंतिम वस्तुओं के मूल्य में मध्यवर्ती वस्तुओं का मूल्य पहले से ही शामिल होता है। बिस्किट (अंतिम वस्तु) के मूल्य में आटे का मूल्य पहले से ही सम्मिलित है।
- **सकल घरेलू उत्पाद (Gross Domestic Product) :** यह किसी देश के भीतर किसी विशेष वर्ष में उत्पादित सभी अंतिम वस्तुओं और सेवाओं का मूल्य है।

प्रकरण (TOPIC)–2
अतिरिक्त रोजगार का सृजन कैसे हो ?
(How to Create More Employment ?)

त्वरित समीक्षा (Revision Notes)

- खुली बेराजगारी या अल्प बेरोजगारी का अर्थ है अधिकतर लोग बेकार बैठे हुए हैं जिनके पास कोई रोजगार नहीं है।
- भारत जैसे देश में अतिरिक्त रोजगारों का सृजन किया जा सकता है, बाँधों से तथा नहरों द्वारा किसानों को पानी उपलब्ध कराना, किसानों को सस्ते क्रेडिट कार्ड और फसल बीमा, भण्डारण और परिवहन पर पैसा खर्च करके, तकनीकी प्रशिक्षण तथा बैंकों द्वारा सस्ती ब्याज दरों पर ऋण उपलब्ध कराके यह काम किया जा सकता है।
- योजना आयोग द्वारा किए गए एक अध्ययन के अनुसार, अकेले शिक्षा क्षेत्र में लगभग 20 लाख रोजगारों का सृजन किया जा सकता है।
- हमारे देश में, केन्द्र सरकार ने अभी हाल में भारत के 625 जिलों में काम का अधिकार लागू करने के लिए एक कानून बनाया है और आगे इसे 130 जिलों में लागू किया जाएगा। इसे राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम 2005 कहते हैं।
- सकल घरेलू उत्पाद (जी.डी.पी.) किसी देश के भीतर किसी विशेष वर्ष में उत्पादित सभी अंतिम वस्तुओं और सेवाओं का मूल्य है।
- राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गांरटी अधिनियम 2005 के मुख्य उद्देश्य–

(i) ग्रामीण क्षेत्र में लोगों के रोजगार के अवसर देना।

(ii) लोगों के जीवन स्तर में वृद्धि करना।

(iii) कार्य के अधिकार का कार्यान्वयन करना।

इनके बारे में जानें (Know the Terms)

- **सकल घरेलू उत्पाद (जी.डी.पी.) :** यह किसी देश के भीतर किसी विशेष वर्ष में उत्पादित सभी अंतिम वस्तुओं और सेवाओं का मूल्य है।
- **बेरोजगारी (Unemployment) :** जब कोई व्यक्ति उचित मजदूरी पर कार्य करने की इच्छा रखता है लेकिन जब उसे कोई रोजगार नहीं मिलता है, तब इसे बेरोजगारी कहते हैं।
- **बेरोजगारी के प्रकार (Types of Unemployment) :** (i) मौसमी बेरोजगारी, (ii) प्रच्छन्न बेरोजगारी।
- **मौसमी बेरोजगारी (Seasonal Unemployment) :** ऐसी बेरोजगारी जो किसी विशेष मौसम में पैदा होती है इसे मौसमी बेरोजगारी कहते हैं। यह मुख्यत: कृषि क्षेत्रक में दिखाई देती है।

- **प्रच्छन्न बेरोजगारी (Disguised Unemployment) :** जब किसी कार्य में आवश्यकता से अधिक लोग होते हैं, तब इसे प्रच्छन्न बेरोजगारी कहते हैं। अतएव हम कुछ लोगों को उस कार्य से हटा दें तो भी उत्पादन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा, इसे अल्प बेरोजगारी भी कहते हैं।
- **मनरेगा (MNREGA) :** महात्मा गाँधी राष्ट्रीय रोजगार अधिनियम 2005 यह एक वर्ष में सभी बेरोजगार जिन्हें आवश्यकता है को 100 दिन का रोजगार दिलाएगा। यदि उन्हें रोजगार नहीं मिल पाता है तो उन्हें बेरोजगारी भत्ता प्रदान किया जाएगा।

❑❑

अध्याय - 3 : मुद्रा और साख

प्रकरण (TOPIC)-1
मुद्रा और साख (Money and Credit)

त्वरित समीक्षा (Revision Notes)

- बहुत प्रारम्भिक काल से ही लोग एक वस्तु को दूसरी वस्तु से बदलते थे, अपनी आवश्यकता के लिए विनिमय व्यवस्था पर निर्भर थे। फिर भी वस्तुओं की अदला-बदली के लिए विनिमय व्यवस्था आवश्यकताओं का दोहरा संयोग की आवश्यकता होती थी।
- वस्तु विनिमय प्रणाली में, जहाँ मुद्रा का उपयोग किए बिना वस्तुओं का विनिमय होता है, वहाँ आवश्यकताओं का दोहरा संयोग होना अनिवार्य विशिष्टता है।

आधुनिक मुद्रा—

(i) प्रयोग किए जा रहे कागज के नोट और सिक्के तुलनात्मक रूप से सस्ते धातुओं से बने हैं।

(ii) इनका अपना कोई मूल्य नहीं है।

(iii) इनका मूल्य इसलिए है कि ये देश की सरकार द्वारा अधिकृत हैं।

- भारत में भारतीय रिजर्व बैंक केंद्रीय सरकार की तरफ से करेंसी नोट और सिक्के जारी करता है। भारत में कोई व्यक्ति कानूनी तौर पर रुपयों में अदायगी को अस्वीकार नहीं कर सकता।
- लोग अपने अतिरिक्त नकद को बैंकों में जमा करते हैं। बैंक ये जमा स्वीकार करते हैं और जमाकर्ता को ब्याज भी देते हैं। इसलिए बैंकों में जमा को माँग कहा जाता है।
- कोई भी व्यक्ति अपनी आवश्यकता के अनुसार बैंक में धन जमा के लिए खाता खोल सकता है। किसी को भी भुगतान के लिए नकद की बजाय बैंक चैक से भी भुगतान किया जा सकता है।
- चैक एक ऐसा कागज है, जो बैंक को किसी व्यक्ति के खाते से चेक पर लिखे नाम के किसी दूसरे व्यक्ति को एक खास रकम का भुगतान करने का आदेश देता है।

इनके बारे में जानें (Know the Terms)

- **वस्तु विनिमय व्यवस्था (Barter System) :** वस्तु विनिमय व्यवस्था में सीधे तौर पर वस्तुओं और सेवाओं की अदला-बदली की जाती है। वस्तु विनिमय प्रणाली में मुद्रा का उपयोग किए बिना वस्तुओं का विनिमय होता है।
- **धन (Money) :** धन एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा किसी भी वस्तु की अदला-बदली की जा सकती है। धन बैंक के नोट और सिक्के किसी भी रूप में हो सकता है, सिक्के और बैंक नोट सामूहिक रूप से होते हैं।
- **चैक (Cheque) :** चैक एक ऐसा कागज है, जो बैंक को किसी व्यक्ति के खाते से चैक पर लिखे नाम के किसी दूसरे व्यक्ति को एक खास रकम का भुगतान करने का आदेश देता है।
- **भारतीय रिजर्व बैंक (Reserve Bank of India) :** भारतीय रिजर्व बैंक भारत सरकार की तरफ से नोट व सिक्के जारी करता है।
- **निवेश (Investment) :** निवेश एक ऐसा धन है जिसे एक निश्चित समय पर नियमित आमदनी के उद्देश्य से निवेश किया जाता है।

प्रकरण (TOPIC)-2
ऋण की शर्तें और प्रकार (Credit Terms and Types)

त्वरित समीक्षा (Revision Notes)

- ब्याज दर, समर्थक ऋणाधार, आवश्यक कागज़ात और भुगतान के तरीकों को सम्मिलित रूप से ऋण की शर्तें कहा जाता है।
- भारतीय रिज़र्व बैंक के अनुसार, बैंक जमा का केवल 15 प्रतिशत हिस्सा नकद के रूप में अपने पास रखते हैं। इसे किसी एक दिन में जमाकर्ताओं द्वारा धन निकालने की संभावना को देखते हुए प्रावधान किया जाता है।
- बैंक जमा राशि के एक बड़े भाग को ऋण देने के लिए इस्तेमाल करते हैं। बैंक के जमाकर्ताओं को अपनी राशि को निकासी की अनुमति होती है वे अपने जमा को निकाल सकते हैं और उनके जमा पर ब्याज मिलती है। कर्जदार ऋण लेते हैं और ब्याज सहित लौटाते हैं।
- ऋण पर ब्याज की दर जमा पर दी जाने वाली ब्याज से अधिक होती है। कर्जदारों से लिए गए ब्याज और जमाकर्ताओं को दिए गए ब्याज के बीच का अंतर बैंकों की आय का प्रमुख स्रोत है।
- बैंक द्वारा दिया जाने वाला ऋण साख से संबंधित होता है।
- ऋण अथवा साख की कुछ निश्चित स्थितियाँ होती हैं जिनसे कर्जदार को सहमत होना होता है। इन स्थितियों को साख की शर्तें कहते हैं। और इसमें सम्मिलित हैं–

(i) एक विनिर्दिष्ट ब्याज की दर

(ii) यदि कर्जदार भगुतान करने से असफल होता है तो कर्ज की वसूली के लिए कोई जमानत होती है। यह जमानत ही ऋणाधार प्रतिभूमि कहलाती है।

(iii) ऋणाधार के रूप में जिन संपत्तियों को स्वीकार किया जाता है उनमें जमीन अथवा सम्पत्ति, वाहन, पशुधन, खड़ी फसल एवं बैंक जमा हैं।

(iv) आवश्यकतानुसार कर्जदार को कुछ प्रपत्र भी जमा करने होते हैं जैसे पहचान का प्रमाण निवास प्रमाण-पत्र कर्ज की अदायगी के लिए रोजगार या आय का स्रोत।

(v) कर्ज की वापसी न होने की स्थिति में ऋणदाता को ऋण वसूली के लिए कर्जदार की संपत्तियों को बेचने का अधिकार है।

- औपचारिक और अनौपचारिक साख–

साख के विभिन्न स्रोत हैं–

(i) बैंक

(ii) व्यापारी

(iii) सहकारी समितियाँ

(iv) साहूकार

(v) भूस्वामी

(vi) रिश्तेदार और मित्र

इनके बारे में जानें (Know the terms)

- **ऋण (Credit) :** ऋण का अर्थ है कि आवश्यकता के वक्त व्यक्ति को ऋण के रूप में धन देना।
- **वित्तीय औपचारिक संस्थाएँ (Financial Formal Institutions) :** व्यापारिक बैंकें, सहकारी समितियाँ तथा क्षेत्रीय ग्रामीण बैकें ऋण की औपचारिक संस्थाएँ हैं।
- **वित्तीय अनौपचारिक संस्थाएँ (Financial Informal Institutions) :** अनौपचारिक उधारदाता में साहूकार, व्यापारी, मालिक, रिश्तेदार दोस्त इत्यादि आते हैं।
- **व्यावसायिक बैंक :** व्यावसायिक बैंको की स्थापना धन को सुरक्षित रखने के लिए की गई, जो ग्राहकों के माँग आदेश पर भुगतान करेंगी अथवा अन्य तरीके से। दूसरे शब्दों में संस्थाएँ जमा स्वीकार करेंगी तथा ऋण स्वीकृत करेगी उन्हें व्यावसायिक कहा जाएगा।
- **लोन (Loans) :** ऋण अक्सर एक निश्चित अवधि के समय के लिए दिया जाता है तथा निश्चित वापसी की तिथि भी निश्चित की जाती है।

- **जमानत (समर्थक ऋणाधार) (Collateral) :** जमानत (समर्थक ऋणाधार) ऐसी संपत्ति है, जिसका मालिक कर्जदार है (जैसे कि भूमि, इमारत, वाहन, पशु, बैंकों में जमा पूंजी) और इसका इस्तेमाल वह उधारदाता को गारंटी देने के रूप में करता है। यदि कर्जदार उधार वापस नहीं करता है तो उधारदाता को भुगतान प्रप्ति के लिए संपत्ति या समर्थक ऋणाधार को बचने का अधिकार है।
- **अधिकारिक धन (Fiat Money) :** राज्य धन जारी करता है, जिसे कानूनी रूप से किसी अन्य वस्तु में नहीं बदला जा सकता तथा किसी निश्चित मूल्य में किसी उद्देश्य के लिए जमा नहीं किया जा सकता।
- **विश्वास संबंधी धन (Fiduciary Money) :** वो धन जो विश्वास के आधार पर स्वीकार किया जाता है देने वाला इसे विश्वास संबंधी धन कहता है।
- **निश्चित अवधि को जमा (Fixed Deposits) :** ये जमा एक निश्चित अवधि के लिए होते है जो कुछ वर्षों के लिए हो सकते हैं।
- **छोटी अवधि का ऋण (Short Term Loans) :** ऋण जो समय की छोटी अवधि के लिए दिया जाता है उसे छोटी अवधि का ऋण कहते हैं।

प्रकरण (TOPIC)-3
संगठित और असंगठित के रूप में क्षेत्रकों का विभाजन
(Division of Sectors as Organized and Unorganiged)

त्वरित समीक्षा (Revision Notes)

- आर्थिक गतिविधियों की प्रकृति के आधार पर क्षेत्रकों के दो प्रकार हैं–

  (i) संगठित, (ii) असंगठित
- संगठित क्षेत्रक के कर्मचारियों को रोजगार-सुरक्षा के लाभ मिलते हैं। उनसे एक निश्चित समय तक ही काम करने की आशा की जाती है।
- असंगठित क्षेत्रक छोटी-छोटी और बिखरी इकाइयों, जो अधिकांशत: सरकारी नियंत्रण से बाहर होती हैं, से निर्मित होता है। वे कम वेतन वाले रोजगार हैं और प्राय: नियमित नहीं हैं।
- शहरी क्षेत्रों में असंगठित क्षेत्रक मुख्यत: लघु उद्योगों के श्रमिकों, निर्माण, व्यापार एवं परिवहन में कार्यरत आकस्मिक श्रमिकों और सड़कों पर विक्रेता का काम करने वालों, सिर पर बोझा ढ़ोने वाले श्रमिकों और कबाड़ उठाने वालों से रचित है।
- असंगठित क्षेत्रक में रोजगार सुरक्षित नहीं हैं, श्रमिकों को उचित मजदूरी नहीं मिलती है जिससे उनकी आमदनी कम है और उनका शोषण होता है। अत: श्रमिकों को संरक्षण और सुरक्षा की आवश्यकता है।
- हमारे देश में असंगठित क्षेत्रक में काम करने वाले ज्यादातर श्रमिक अनुसूचित जाति, जनजाति और पिछड़े वर्ग के समुदायों से हैं।
- स्वामित्व के आधार पर आर्थिक गतिविधियों को दो क्षेत्रकों में वर्गीकृत किया जा सकता है–

(i) सार्वजनिक क्षेत्रक

(ii) निजी क्षेत्रक

- सार्वजनिक क्षेत्रक में अधिकांश परिसंपत्तियों पर सरकार का स्वामित्व होता है, और सरकार ही सभी सेवाएँ उपलब्ध कराती है। जैसे रेलवे और पोस्ट ऑफिस आदि।
- निजी क्षेत्रक में परिसंपत्तियों पर स्वामितत्व और सेवाओं के वितरण की जिम्मेदारी एकल व्यक्ति या कपंनी के हाथों में होती है। जैसे टाटा आयरन एंड स्टील कंपनी (लिमिटेड) रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड।
- अनेक गतिविधियाँ ऐसी हैं, जो प्राथमिक हैं और उनको पूरा करना सरकार की जिम्मेदारी है। सरकार इन गतिविधियों पर अनिवार्य रूप से खर्च करती है।
- भारत के लगभग आधे बच्चे कुपोषण का शिकार हैं और उनमें से एक चौथाई गंभीर रूप से बीमार हैं।
- सरकार को सुरक्षित पेयजल की उपलब्धता, निर्धनों के लिए आवासीय सुविधाएँ भोजन एवं पोषण पर ध्यान देने की जरूरत है।
- समुचित ढंग से विद्यालय चलाना और गुणात्मक शिक्षा, विशेषकर प्राथमिक शिक्षा उपलब्ध कराना सरकार का कर्त्तव्य है।

इनके बारे में जानें (Know the Terms)

- **संगठित क्षेत्रक (Organized Sector) :** संगठित क्षेत्रक में रोजगार की अवधि नियमित होती है, लोगों के पास सुनिश्चित काम होता है। क्षेत्रक सरकार द्वारा पंजीकृत होते हैं और उन्हें सरकारी नियमों व विनियमों का पालन करना होता है।

***नोट:–** यह अध्याय केवल नियतकाल टैस्ट के लिए होगें और बोर्ड परीक्षा में मूल्यांकन नहीं होगा।

- **असंगठित क्षेत्रक (Unorganized sector) :** असंगठित क्षेत्रक छोटी-छोटी और बिखरी इकाइयों, जो अधिकांशत: सरकारी नियंत्रण से बाहर होती हैं, से निर्मित होता है। इसमें कम भुगतान व रोजगार असुरक्षित होता है।

❑❑

अध्याय – 4 : वैश्वीकरण और भारतीय अर्थव्यवस्था

प्रकरण (TOPIC)-1

वैश्वीकरण (Globalisation)

त्वरित समीक्षा (Revision Notes)

- विभिन्न देशों के बीच परस्पर संबंध और तीव्र एकीकरण की प्रक्रिया ही वैश्वीकरण है। विभिन्न देशों के बीच अधिक से अधिक सेवाओं निवेश और प्रौद्योगिकी का आदान-प्रदान हो रहा है। विभिन्न देशों के बीच लोगों के आवागमन से भी जुड़ने का प्रयास हो रहा है।
- विभिन्न देशों के बाजारों को आपस में जोड़ना ही विदेश व्यापार कहलाता है।
- भारत में योजना आयोग ने विदेशी व्यापार के विकास पर पंचवर्षीय योजनाओं में निम्न कारणों से जोर दिया।

(i) एक देश अपने प्राकृतिक संसाधनों का प्रभावपूर्ण ढंग से उपयोग कर सकता है।

(ii) यह अपने अतिरिक्त उत्पादन का निर्यात कर सकता है।

(iii) विदेशी व्यापार के नियमित और प्रभावशाली ढंग से और आगे बढ़ने से, रोजगार, कीमतें और औद्योगीकरण, देश के आर्थिक विकास की गति उचित ढंग से बढ़ सकती है।

- बहुराष्ट्रीय कपंनियों (MNCs) द्वारा किया गया निवेश विदेशी निवेश कहलाता है।
- बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ देशों के बीच शीघ्र एकीकरण की प्रक्रिया अथवा आपसी संबंधों में एक प्रमुख भूमिका निभाती हैं।
- भारतीय अर्थव्यवस्था में बहुराष्ट्रीय कपंनियाँ स्थानीय कंपनियों के साथ मिल कर संयुक्त रूप से उत्पादन कर एक प्रमुख भूमिका निभाती हैं उदाहरण के लिए बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अतिरिक्त निवेश के लिए धन उपलब्ध कराती हैं जिससे तीव्र उत्पादन के लिए नई मशीनें खरीदी जा सकें। और एक अन्य उदाहरण—एक बहुत बड़ी अमेरिकी बहुराष्ट्रीय कंपनी कारगिल फूड्स जैसी छोटी भारतीय कंपनियों को खरीद लिया है।
- प्रौद्योगिकी में तीव्र उन्नति वह मुख्य कारक है जिसने वैश्वीकरण की प्रक्रिया को उत्प्रेरित किया। जैसे विगत पचास वर्षों में परिवहन प्रौद्योगिकी में बहुत उन्नति हुई है। सूचना एवं प्रौद्योगिकी का विकास अधिक उल्लेखनीय है। दूरसंचार कम्प्यूटर और इंटरनेट के क्षेत्र में प्रौद्योगिकी द्रुत गति से परिवर्तित हो रही है।
- टेलीफोन, मोबाइल एवं फैक्स का विश्वभर में एक-दूसरे से संपर्क व संवाद करने में किया जाता है।

इनके बारे में जानें (Know the Terms)

- **वैश्वीकरण (Globalisation) :** वैश्वीकरण का अर्थ है विदेशी निवेश और विदेशी व्यापार के माध्यम से विभिन्न देशों के बीच एकीकरण की प्रक्रिया।
- **योजना आयोग (Planning Commission) :** एक आयोग जो भविष्य की गतिविधियों और विकास के लिए योजना और प्रस्ताव बनाकर सौंपता है।
- **बहुराष्ट्रीय निकाय (Multinational corporation (MNCs) :** एक उद्यम जिसका संचालन विभिन्न देशों में होता है लेकिन प्रबंधन एक (घर) देश से होता है। सामान्यत: किसी कंपनी अथवा समूह जिसका एक चौथाई राजस्व का हिस्सा अपने देश के बाहर के देश में हुआ है तब उसे बहुराष्ट्रीय निगम के रूप में जाना जाएगा।

प्रकरण (TOPIC)-2
वैश्वीकरण और इसके प्रभाव
(Globalisation and its Impact)

त्वरित समीक्षा (Revision Notes)

- देश पर वैश्वीकरण का प्रभाव विभिन्न प्रकार से पड़ा है। जिसे इन उदाहरणों के आधार पर समझा जा सकता है।
- पिछले पन्द्रह वर्षों से बहुराष्ट्रीय कंपनियों के निवेश में वृद्धि हुई है, जो उनके साथ-साथ भारतीयों के लिए भी लाभदायक है। ऐसा इसलिए क्योंकि बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने रोजगार के बहुत सारे अवसर उपलब्ध कराए तथा स्थानीय कंपनियाँ उनके उद्योगों को कच्चा माल उपलब्ध कराती वे सम्बद्ध हुई है, लेकिन वैश्वीकरण गरीबी की समस्या को हल करने में असफल रहा तथा इसने गरीब और अमीर के बीच के अन्तर को चौड़ा किया है। वैश्वीकरण से केवल कुशल श्रमिक व शिक्षितों को लाभ हुआ है।
- यहाँ ग्राहकों की पसंद के लिए बाजार में वस्तुओं की विभिन्न शृंखलाएँ कम कीमत पर उपलब्ध हैं। अब वे जीवन के उच्च स्वर का आनंद उठा रहे हैं।
- अर्थव्यवस्था के उदारीकरण का अर्थ है सरकार के सीधे तौर पर हस्तक्षेप व भौतिक रूप से नियंत्रण से मुक्ति। दूसरे शब्दों में सरकार द्वारा अवरोधों तथा प्रतिबंधों की हटाने की प्रक्रिया उदारीकरण के नाम से जानी जाती है।
- भारतीय बाजार में चीनी खिलौनों के उदाहरण से विदेशी व्यापार के प्रभाव को देखते हैं। चीनी खिलौने भारतीय बाजार में ज्यादा लोकप्रिय हैं क्योंकि कीमत में कम और नई डिजाइन के हैं। भारतीय खरीदारों के लिए बाजार में खिलौनों की बहुत सारी पसंद कम कीमत पर उपलब्ध है। चीनी खिलौना निर्माताओं के पास एक साथ व्यापार का विस्तार करने के अवसर हैं। दूसरी ओर भारतीय खिलौना निर्माता हानि का सामना कर रहे हैं।
- विश्व व्यापार संगठन (WTO) की शुरूआत विकसित देशों की पहल पर हुई थी। विश्व व्यापार संगठन का प्रमुख उद्देश्य अंतर्राष्ट्रीय व्यापार से संबंधित नियमों को निर्धारित करना है। वर्तमान में विश्व के 165 देश विश्व व्यापार संगठन (जुलाई, 2016) के सदस्य है।
- वर्तमान में, भारत की केन्द्र व राज्य सरकारें विदेशी कंपनियों के निवेश को भारत में आकर्षित करने के लिए विशेष कदम उठा रही हैं। इसके लिए विशेष आर्थिक क्षेत्र (SEZS) स्थापित किए जा रहें हैं। विशेष आर्थिक क्षेत्रों में विश्व स्तरीय सुविधाओं जैसे—विद्युत, संचार सेवाएँ, ब्रांडबैंड इंटरनेट, सड़कें परिवहन और मनोरंजनात्मक सुविधाएँ बहुराष्ट्रीय कंपनियों और अन्य कंपनियों को आकर्षित कर रही हैं।

इनके बारे में जानें (Know the Terms)

- **विश्व बैंक (World Bank) :** विश्व बैंक एक अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थान है, जो अपने सदस्य देशों को विकास के उद्देश्य के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करता है।
- **निर्यात हिस्सा (Export Quotas) :** इसका अर्थ है एक वर्ष में निर्यात की जाने वाली सामग्री की अधिकतम निश्चित यात्रा जिसका निर्यात किया जा सकता है।
- **आयात हिस्सा (Import Quotas) :** इसका अर्थ है आयात की जाने वाली सामग्री का अधिकतम हिस्सा जिसका एक वर्ष में आयात किया जा सकता है।
- **उपभोक्ता (Consumer) :** एक व्यक्ति जो किसी वस्तु या सेवा को अपने निजी प्रयोग के लिए खरीदता है जो उसका ना तो उत्पादन करता है और ना ही पुन: बेचता है।
- **अर्थव्यवस्था का उदारीकरण (Liberalisation of Economy) :** इस का अर्थ है कि यह सरकार के सीधे हस्तक्षेप अथवा भौतिक नियंत्रण से युक्त है।
- **विश्व व्यापार संगठन (World Trade Organization) :** यह अकेला वैश्विक अंतर्राष्ट्रीय संगठन है जो देशों के बीच व्यापार के नियमों का पालन कराता है।
- **विशेष आर्थिक क्षेत्र (Special Economic Zone) :** यह एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ व्यापार और अदल–बदल के नियम शेष देश से अलग होते हैं। ये देश में किसी भी स्थान अथवा सीमा पर स्थापित होते हैं और उनके उद्देश्य व्यापार में वृद्धि करना होता है, निवेश में वृद्धि, रोजगारों का सृजन प्रभावशाली प्रशासन बनाना होता है।

प्रकरण (TOPIC)-3
न्यायसंगत वैश्वीकरण के लिए संघर्ष
(Challenges and Factors that Enabled Globalisation)

त्वरित समीक्षा (Revision Notes)

- वैश्वीकरण और उदारीकरण ने छोटे उत्पादकों और श्रमिकों के समक्ष चुनौतियाँ खड़ी कीं।
- कठिन स्पर्धा के चलते छोटे उत्पादक बाहर हो गए। बहुत सारी इकाइयाँ बन्द हो गई जिसके चलते बहुत सारे श्रमिक बेरोजगार हो गए लगभग 20 लाख छोटे उद्योगों में कार्यरत थे। क्योंकि प्रतिस्पर्धा में वृद्धि हो चुकी थी, अधिकतर नियोक्ता उन दिनों श्रमिकों को रोजगार देने में लचीली नीति अपनाए थे। इसका अर्थ है श्रमिकों के रोजगार की कोई सुरक्षा नहीं थी। एक उदाहरण की सहायता से इसकी व्याख्या की जा सकती है। 35 वर्षीय सुशीला ने 6 माह की खोज के बाद एक रोजगार पाया वह एक अस्थाई श्रमिक हैं, उसे कोई अन्य लाभ नहीं मिल रहा है जैसे—प्रौवीडेंट फंड, चिकित्सा भत्ता, बोनस आदि साथ में कार्य से एक दिन छुट्टी अर्थात् मजदूरी नहीं।
- हालांकि वस्त्र निर्यात के बीच प्रतिस्पर्धा से बहुराष्ट्रीय कंपनियों को अधिक लाभ कमाने में मदद मिली है, परन्तु वैश्वीकरण के कारण मिले लाभ में श्रमिकों को न्यायसंगत हिस्सा नहीं दिया गया है।
- सरकार ऐसे कदम उठा सकती है, जिससे वैश्वीकरण का लाभ प्रत्येक व्यक्ति को मिल जाए।
- सरकार यह सुनिश्चित कर सकती है कि श्रमिक कानूनों का उचित कार्यान्वयन हो और श्रमिकों को अपने अधिकार मिलें।
- अवरोध बनाकर अर्थव्यवस्था को विश्व व्यापार और विकसित देशों की अनुचित स्पर्धा से बचाया जा सकता है।
- यह "न्यायसंगत नियमों" के लिए विश्व व्यापार संगठन से समझौते भी कर सकती है।
- **वे कारक जिनसे वैश्वीकरण सक्षम बना**—वैश्वीकरण का अर्थ है कि घरेलू अर्थव्यवस्था का विश्व अर्थव्यवस्था के साथ एकीकरण करना, व्यापार, पूँजी और तकनीक के प्रवाह के माध्यम से।

(i) व्यापार अवरोधों को कम किया गया इस विचार के साथ कि अन्य देशों से वस्तुओं के प्रवाह को स्वतंत्र कर दिया जाए।

(ii) बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने विभिन्न तरीकों से विभिन्न स्थानीय उत्पादकों को अपने साथ जोड़ लिया।

(iii) कुछ बड़ी भारतीय कंपनियों जैसे—टाटा मोटर्स, इंफोसिस (IT), रैनबैक्सी एशियन पेंटस आदि बहुराष्ट्रीय कंपनियों के रूप में उभरी और वैश्विक स्तर पर अपना काम शुरू किया।

इनके बारे में जानें (Know the Terms)

- **भविष्य निधि (Provident Fund) :** यह एक कर्मचारियों के लाभ की योजना है। जो सामान्यत: एक सरकारी संस्था द्वारा संवैधानिक रूप से निर्धारित की जाती है जो कर्मचारियों को एक संगठन द्वारा सुविधाएँ प्रदान करती है सम्मान सहित चिकित्सकी सहयोग, सेवानिवृत्ति, बच्चों की शिक्षा, बीमा सहायता तथा घर।
- **सीमा शुल्क (Tariff) :** विशेष प्रकार के आयात अथवा निर्यात पर लगाया जाने वाला शुल्क या कर।
- **श्रमिक कानून (Labour Law) :** यह नियम कानूनों की संस्था है जिसमें प्रशासनिक नियम और मिसाल के लिए जो हमें अधिकारों और प्रतिबंधों के बारे में बताते है जिसमें कार्य करने वाले लोग उनके संगठन है। इसको रोजगार नियम के नाम से भी जाना जाता है।

❑❑